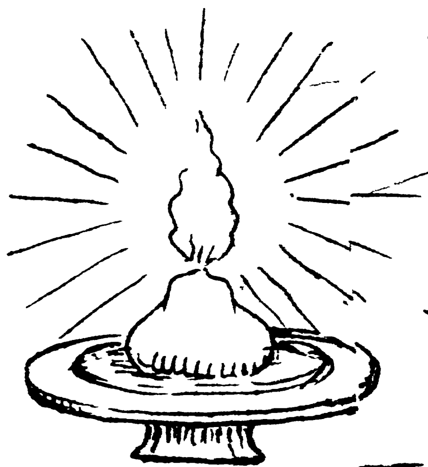
अथसम्यक्ज्ञानदीपकाप्रारंभः


सम्यक् ज्ञान दीपका

दृष्टांत जैसैदीपकज्योतीके प्रकासमै कोई इच्छा प्रमाण पाप
अपराध काम कुशील वा दानपूजा व्रत शीलादिक करो अर्था
त् जेता संसार और संसारहीसैं तन्मयि येह संसारका शुभा
शुभ काम क्रिया कर्म और इनसर्वका फलहैसो दीपक ज्यो॰
तिकुंबी लागते नाही अर दीपक ज्योतिसें दीपज्योतिका प्र॰
काश तन्मयिहै ताकूंबी जन्म अरु मरणादिक पाप पुन्यसं
सार लागते नाही तैसेही स्वस्वरूप स्वानु भव गम्य सम्य
क् ज्ञानमयि परम ब्रह्म परमातमा सदाकाल जागतीज्योतिहै सो नमरती नज
नमती नछोटी नमोठी न नास्ति नअस्ति नइहां नउहां नउसकूं पापलागे नउसकूं पु
न्य लागे नवाज्योती बोलती नचलती नहलती संसार उसज्योतिके भीतर बाहिर अरु
मध्य नहीं॰ बहुरि जैसैंही सोज्योतिहै सोवी संसारके भीतर बाहिर मध्य नहीं जैसें
लवणखड जलनीरमै मिलजातेहै तैसे किसीकुं जन्म मरणादिक संसारसें दुःखसे
अलग होणेकी इच्छा होय वा सदाकाल जागती जोति स्वभावसम्यक्ज्ञानमई प॰

रब्रह्म परमातमासे मिलणेकी इच्छाहोय सो प्रथम सतगुरु आज्ञाप्रमाणइस स- म्यक् ज्ञान दीपिका नामकी पुस्तगहै ताकूं आदेसै अंतपर्यंत पढो मनन करो किसी मुमुक्षकी बिनमोलि पुस्तक लेणेकी इच्छा नाही सो मुमुक्ष कृपापूर्वक १॥ डेडरु- पियेको लोभछोड करिकै येह पुस्तक का स्वीकार करो· येह पुस्तक प्रथम ५०० पां- चसै छापीथी सोतो बहुतसे भव्यकूं बिन मोल लाभहोचुकी अब येह दूसरीवेर ५०० पांचसे पुस्तग सुंदर शुद्ध शब्दातम की सूचक छपीहै सोवैर बिरोध विवाद विकल्पा दिककी निर्वर्तिके अर्थ सदा स्वभाव सम्यक ज्ञानानुभवमै तन्मई लीन रहणेके अर्थ येह पुस्तक स्वीकार करो श्लाघ्यतायोग्य होयतो येह पुस्तककी कीर्ति प्रसिद्ध करो·

प्रस्तावना

इस पुस्तगमे प्रथम येह प्रस्तावना तदनंतर इस पुस्तगकी भूमिका पश्चात् पुस्तगप्रारंभ तदनंतर चित्र द्वार पुनः चित्र हस्तांगुलीचक्र निर्विकल्प शुक्लध्यानका सूचक पश्चात् ज्ञानावर्णि कर्म चित्र· तदनंतर दर्शनावर्णिचित्र· पश्चात् वेदनी बहुरि मोहनी तदनंतर आयु बहुरि नाम अर गोत्र· पश्चात् अंतराय कर्म· तदनंतर दृष्टांत समाधान नाहीमे येक प्रश्न आत्मा कैसाहै कैसे पाइये इसीके ऊपर दृष्टांत संग्रह तदनंतर दृष्टांतचित्र पश्चात् आकिंचन भावना बहुरि भेदज्ञान करिकै ग्रंथ येह समाप्त कीयाहै इसग्रंथमे केवल स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञानानुभव सूचक शब्द विवर्णहै कोही दृष्टांतमे तर्क करैगो के सूर्यमे प्रकाश कहांसे आये ताकूं स्वसम्यक् ज्ञानानुभव इसग्रंथको सार ताको लाभ नही होयगो जैसे जैन वैष्णु शिवादिक मतवाले परस्पर लडतेहै बैर· विरोध करते है मत पक्षमे मग्न हुये मोह ममता माया मानादिकसै तो तन्मई वत् होरहाहै अर्थात् मत मानादिककूं तो छोडते नाहीं तैसे इस पुस्तगमे बैर विरोधको बच-

न नाही परन्तु जिस अवस्थामें स्वभाव सम्यक्क ज्ञान सूतोहै अर ता अवस्था
मे तन मन धन अरु बचनादिकसे तन्मयी येह जगत संसार जागतो है ब-
हुरि जिस अवस्थामें येह जगत संसार सूतो है ता अवस्थामे स्वसम्यक्-
ज्ञान जागतोहै येह बैर विरोधतो अचल अरु अनादिसैंही चलताहै सोतोह
मसें तुमसें इससें उससें नमिटै नमिटैगा नमिटाथा. येह पुस्तग जैन बैश्नु आदि
क सर्वहीके पढणेजोग्यहै किसी बैश्नुकों इस पुस्तगके पढणेसें भ्रांति होवै के
येह पुस्तग जैनोक्तहै ताकूं कहताहूंके इस पुस्तगकी भूमिकाके प्रथमारंभमें जो
मंत्र नमस्कारहै ताकूं पढिकरिके भ्रांतिसें तत्स्वरूप नही रहएगा अर्थात् भरम
भ्रांतिसें भिन्न होएगा स्वभाव सूचक जैन बैश्नु आदिक आचार्यके रचेहुये संस्कृत
काव्यबंध, गाथाबंध-ग्रंथ बहुतहै परंतु येहबी येक छोटीसी अपूर्व वस्तु है जैसें
गुड खायेसें मिष्टानुभव होताहै तैसे इस पुस्तगकूं आद्य अंत पूर्ण पढणेसे पूर्णा
नुभव होवैगा: बिन देखे बिन समजे वस्तुकूं औरसे और समजताहै सो मूर्खहै
जिसकूं परमातमाको नाम प्रियहै उसकूं येह ग्रंथ जरूर प्रिय होवैगो इस ग्रंथको

सार ऐसो लेणेके सम्यक् ज्ञानमयी गुणीका गुणसैं सर्वथा प्रकार भिन्नहै सो ही ओगुणताकूं त्यज करिके स्वभावज्ञान गुण ग्रहण करणा पश्चात् गुणकूं बी छोड करिके गुणीकूं ग्रहण करणा तदनंतर गुण गुणीका भेद कल्पनासे सर्वथा प्रकार भिन्न होय करि आपका आपमे आपमयी स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयी स्वभाव वस्तुसें सूर्य प्रकाशवत् मिलकरिके रहणा येही ओगुण त्यजणेका स्वभाव गुणसैं तन्मयी रहणेका इस ग्रंथमे कत्याहै· १ जैसे दीपकज्योतिका प्रकाशमे कोहू पाप करो और कोहू पुन्य करो तिस पाप पुन्यका फल स्वर्ग नरकादिक बी तिस दीपकज्योतिकूं लगते नाहीं अर पाप पुन्यबी लगते नाही तैसैहीइस सम्यक्ज्ञान दीपका पुस्तगके पढणे वाचणे वा उपदेस देणेके द्वारा किसीकूं आपका आपमे आपमाये स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञानानुभवकी अचल परमाव गाढता होवैगी तिसकुं पाप पुन्य जन्ममरण संसारका स्पर्श नपहुचे उस्कूं कुछभी शुभाशुभ नलागे अर्थात् वो सहज स्वभावहीसें जन्म मरण नामादिक संसारसैं ऐसा भिन्न रहणा जैसा अंधकारसै सूर्य भिन्न रहताहै तैसा येह निश्चयहै· ॥१॥ इति प्रस्तावना

ॐ तत्सत् परमब्रह्मपरमात्मने नमः ॥ ॥ अथ सम्यक्ज्ञानदीपका की भूमिका प्रारंभः ॥ ॥ भूमिका हम तुम येह वह येह ४ चार शब्द हैं ताके प्रथम निश्चय कोई है सोही मूल अखंडित अविनाशी अचल स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु भूमिका है जैसे लक्षयोजन प्रमाण येह वलियाकार जंबुद्वीपकी भूमिका है तिस भूमिकामें कोइयेक अणुरेणु वा राई डालदे तब अल्पदृष्टिवान कूं येह भाष होवैके इस जंबुद्वीप भूमिमे नही जाण वामे आवे के वाहां येक अणुरेणु राई किदर कहां पडी है तैसेही येह ३४३ तीनसे तेतालीस राजू प्रमाण तीनलोक पुरुषाकार है सो बहुरि अलोकाकाश है सो कैसो है अलोकाकाश जाके भीतर त्येह तीनलोक ब्रह्मांड है परंतु ऐसा अनंत ब्रह्मांड औरबी होय तो जिस अलोकाकाशमे अणुरेणुवत् होयके समाय जावे ऐसा येह लोकालोक वा अनंत ब्रह्मांड तिस स्वस्वरूपस्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयी स्वभाव वस्तु भूमिकामे येक अणुरेणुवत् नहीं जाणे किदर कहां पडे है वास्ते निश्चय समजो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु है सो निश्चय भूमिका है जैसे सूर्यका प्रकाश पृथ्वी के ऊपर तन्मयीवत् सर्व

वसरणहो रह्याहै तामै येक अणुरेणु नही जाणै किंदर कहां पडेहै तैसेही स्वस्व
रूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि सूर्यके प्रकासमै येह लोकालोक अणु रेणुव
त् नही जाणै किंदर कहां पडेहै सोही त्रैलोक सार ग्रंथमै श्रीमत् नेमिचंद्र सिद्धांत॰
चक्रवर्त्ति कहीहै छियालीस ४६ चालीस ४० और चोतीस ३४ अठाईस २८
बाईस २२ सोला १६ दस १० उन्नीस १९ साढेबनलाई ३७॥ साढेसैतीस १६॥
साढेसोला साढेसोले भणी आगै दोदोहीन १४॥ ।१२॥ अंत ग्यारे ११ राजूगणी
इस ७ सातनर्क आठ ८ जुगल उपर १६ सोलेथानमै राजू ३४३ तेतालीस तीनसै
घनाकारकीयो ज्ञानमै १ अबहे मुमुक्षुजन सज्जन मित्रीहो श्रवणकरो जैसै येह
लोकालोकहै सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि भूमिकामैहै परंतु स॰
म्यक् ज्ञानमयि भूमिकासैं तन्मयी नाही तैसैही मै तू येह वह येह ४ चारवी तन्म॰
यी नाहीं॰ वास्तै अण होणेसो मै क्षुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदास बणिकरिकै येह पुस्त
ग सम्यक्ज्ञान दीपका नामकी बणाईहै इस पुस्तगमै भूमिका सहित द्वादशस्थल
भेदहै तामै प्रथमतो मिथ्या भ्रमजाल संसारसैं सर्वथा प्रकार भिन्न होणेके अर्थ

येह भूमिका येकाग्रह मन लगाय करिके पढो १ बहुरि पश्चात् चित्र हार दे
खो अर ताका विवर्ण पढो हारहीकूं अपना स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्
ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु मति समजो मतिमान् मतिकहो २ बहुरि तीजा स्व
स्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव सूर्य वस्तु स्वभावमें जैसा है
तैसा है स्वभावमें तर्कको वा संकल्प विकल्पको अभावहै ताहीके प्रकाशमें
तिसहीकूं परस्पर विरुद्ध चित्रहस्तांगुली सूचैहैं कहतेहैं सोसम्यक् ज्ञानम
यि स्वभावसूर्यसें तन्मायि कदापि कोई प्रकार बी नसंभवे ३ बहुरि चतुर्थज्ञा
नावर्णि कर्मचित्रहै ताको अनुभव ऐसो समजणा जैसे सूर्यके आडा बादल
समयपाय स्वयमेवही आतेहैं जातेहै तैसे ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य स-
म्यक् ज्ञान मयि सूर्यके मतिश्रुति अवधि मनपर्यय आदि अजिव वस्तु आ
वे जावै अर्थात् ज्ञानकूं आवर्ण करै सोही ज्ञाना वर्णि कर्म ४ पंचम भेद दर्श
णावर्णि कर्म जैसें देखणेकी सक्तितोहै परंतु दर्शणावर्णि जातिको कर्म देख
णे नही देताहै ५ षष्ठमस्थल कर्म वेदनीहै ताका दोय भागहै साता बहुरि

 असाता जैसे तरवारकी लगी मिश्रीकी चासणी ताकूं कोई पुरुष जिव्हा-
सेंचाटतेहै तत्समय किंचित् मिष्टस्वाद भासहोताहै विशेष जिव्हा खंडन-
दुःखभाष होताहै इस दुःख सुखसें भिन्न स्वभाव होणा गुरुपदेशात् ६
सप्तमस्थल मोहनीकर्म जैसे मदिरा बसात् स्वसोधनकी खबर नाही तैसेही
मोहनीकर्म बसात् आपकूं स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्व-
भाव स्वरूप नसमजताहे नमानताहै औरसें और आपकूं समजतहे मा-
नतहे ७ अष्टमस्थल आयु कर्महे जैसे बेडीसें बंध्यो पुरुष आपकूं दुःखी
समजतहे माननहे तैसेही आयुकर्म बसात् स्वभाव दृष्टि रहित जीवहै सो-
आपकूं दुःखी मानतहै समजतहै अर्थात् स्वभाव दृष्टि रहित जीवकूं येह-
निश्चय नहीके आकाशवत् अमूर्ति निराकार घटआयु मठायूवत् मै आयु
कर्ममें रुकरत्योहूं व्यवहार नयात् ८ नवमस्थल नामकर्म स्वभाव दृष्टि र-
हितहे सो नामहीकूं अपणा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्व
भाव वस्तु समजतहे मानतहे मिथ्यादृष्टिकूं येह निश्चय नहीके जन्ममरण

नामादिक शरीरका धर्म है ज्ञान वस्तु का येह निजधर्म नाहीं ९ दशम स्थलगो
त्रकर्म ताका द्रष्टांत जैसै कुंभकार छोटा मोटा मातीका बर्तन कर्ता है तैसैही
स्वभाव दृष्टिमे नसंभवै येह नीचगोत्र सोही विभाव दृष्टीमै जीव नीचगोत्र उंच
गोत्र कर्मको कर्ता है तोबी नीचगोत्र उंचगोत्रसैं तन्मयि होय नही कर्ता है १०
एकादशमस्थल अंतराय कर्म ताका द्रष्टांत जैसै राजा भंडारीकूं कहीके इ-
सकूं सहस्र रुपिया दे परंतु भंडारी नही देता है तैसैही स्वभाव दृष्टिरहित
जीव इच्छातो कर्ता है के मै दान देऊं लाभ लेऊं भोग भोगुं उपभोग भोगुं परा-
क्रम बल वीर्य प्रगट करूं इत्यादिक इच्छातो कर्ता है परंतु अंतराय कर्म इच्छा
नुसार पूर्णता नही होणे देता है ऐसा अंतराय विघ्न श्रीसत्‌गुरुके चरणकी
सरण होणेसैं मिटैगा ११ द्वादशस्थलमै येह है के किसीकूं गुरुपदेशात्
स्वस्वरूपको स्वानुभव हुये पश्चात् बी येह भ्रांति होती है के मै अजर अमर-
अविनासी अचल ज्ञानज्योति नहीं अथवा हूं तो कैसे हूं मेरा अर सदाकाल
जागती जोति ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्ठीका येकपणा कैसे है तथा कोणसा पुन्य

शुभकार्य करणेसें मेरा अर परमातमा तमाका अचल मेल होवैगा प्रतक्ष मैं मरताहूं जनमताहूं दुःखी रोगी सोगी लोभी क्रोधी कामीहूं अर ज्ञानमयि परमातमातो नमरता नजनमता न रोगी नसोगी नलोभी नमोही नक्रोधी नकामी नशून्याशून्य ननास्ति नआस्ति नविधि न निषेध फेर उनका मेरा मेल कैसा कैसेहै कैसैं होवैगा इत्यादिक भ्रांति द्वारा कोईजीव आपकूं तिस सिद्ध परमेष्ठी ज्ञानमयिसें भिन्न समजताहै मानताहै कहताहै ताकी येकता तन्मयिताकी सिद्धिके अवगाढताके दृढताके अर्थ अनेक दृष्टांत द्वारा समाधान देऊंगा सोही कोई मुमुक्ष इस सम्यक ज्ञानदीपका पुस्तगकूं आदिसें अंत पर्यंत भलेभावसें पढकरिके आपका स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूकूं प्रथमतो अशुभजो पाप अपराध हिंसा चोरी काम क्रोध लोभ मोह कषायादिकसें सर्वथा प्रकार भिन्न समज करिके पश्चात् दान पूजा व्रत शील जप तप-ध्यानादिक शुभकर्म क्रियाहै ताकूं बी सुवर्ण शृंखलावत् बंध दुःखको कारण समज करिके पश्चात् आपका आपमे आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य

सम्यक् ज्ञानमई स्वभाव वस्तूकूं दान पूजादिक शुभ कर्मक्रियासैं सर्वथा प्रकारभि न्न समज करिके पश्चात् शब्दसैंबी आपकूं भिन्नसमजकरिके आगें अनिर्वचनय आपका आपमे आपमयि जैसाका तैसा निरंतर जैसाहै तैसा सोकासोही आदि अंत पूरण स्वभाव संयुक्त रहणा बहुरि ऊपर हम लिखीहैके शुभ अ शुभ शब्द येह तीनहै इसतीनकी बिस्तीर्णता पूर्णता प्रथम मिथ्यात्व गुण स्थानसे लेकरिके अंतका चतुर्दशगुणस्थानजो अजोग केवली तहांपर्यंत स मजणा आगें स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावमे येह शुभ अशुभ बहुरि शब्दादिक संकल्प विकल्प तर्क वितर्क विधि निषेध कदापि न संभवे अर्थात् स्वभावमे तर्कको अभावहै हे मुमुक्षुजीवमंडलीहो चेनकरो तु म कहांसें आयेहो कहांजावोगे कहां तुमहो क्याहो केसाहो कोण तुमाराहै किसका तुमहो बहुरि येह शुभाशुभ शब्द येह तीनसें तुमारा स्वस्वरूप स्वा नुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकूं येक तन्मयि मानिसमजो मतिमा नू मानिकहो येह अशुभादिक तीन सम्यक्ज्ञान स्वभावमें त्याजहीहै अर्था

त् ज्ञानके सहज स्वभावहीसैं अज्ञानका त्यागहै बहुरि अज्ञानके सहजस्व-
भावहीसैं केवलज्ञानका त्यागहै जिस भूमिमे येह लोकालोक अणुरेणुव-
त् नही जाएैं किदर कहां पडेहै चलाचल रहित ऐसी भूमिकासैं सर्वथा प्रकार
भिन्न तुमारा तुमसैं सदाकाल तन्मयि स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान-
मयि स्वभाववस्तु स्वरूप समजो मनके द्वारा मानू जैसे दीपककूं देखणेसैं दी-
पककी निश्चयता अवगाढता अचलता होतीहै तैसेही इस सम्यक् ज्ञान दीप
काके पढणे वाचणेसैं जरूर निश्चय ब्रह्मज्ञानकी प्राप्तकी प्राप्ति होवैगी तथा
सम्यक्तकी प्राप्तकी प्राप्ति निश्चयता अवगाढता अचलता होवैगी देखो
श्रवण करो जैनाचार्य जैनग्रंथमैं कहिहै के सम्यक्तविना जप तप नेम व्रत शी-
ल दान पूजादिक शुभकर्म शुभभावादिक वृथा तुष खंडन नहै॰ बहुरि वेदमे
बी कहीहै के ब्रह्मजानाति ब्राह्मणा अर्थात् सहज स्वभावहीसैं येह अनंत ब्र-
ह्मांडहै ताकूं जाणताहै ऐसा ब्रह्मकूं तो जाणते नाही। अर संध्या तर्पण गाय-
त्री मंत्रादिकका पढणा आदि साधु सन्यासी भेष धारणा पर्यंत वृथाहै सर्वसा

रको सार सदा काल ज्ञानमयि जागती जोति का लाभकी जिसकुं इच्छा होय तथा जन्म मरणादिक वज्र दुःखसें सर्वथा प्रकार भिन्न होणेकी जिसकूं इच्छा होय सो प्रथम गुरु आज्ञा लेकरिके इस पुस्तगकूं आदिसें अंत पर्यंत पढो स्व-स्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकी प्राप्तकी प्राप्ति के अर्थे हम इस पुस्तग मे अशुभ शुभ शुद्ध येह तीनका निषेध लिखाहे सोतो पुद्गल द्रव्य धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकाशद्रव्य कालद्रव्य येह पांच द्रव्यसें तन्मयि अस्ति समजणा बहुरि कोई अशुभसें येकना आपका स्वरूप ज्ञानकी मानताहै समजताहे कहताहे सोबी मिथ्या द्रष्टी बहुरि अशुभकूं खोटा बुरा समज करिके जप तप व्रत शील दान पूजादिक शुभसे आपका स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानस्वभावकी येकता समजताहे मानताहे कहताहै सोवी मिथ्याद्रष्टीहे बहुरि शुभ अशुभ दोहूकूं अर अपणा स्वभाव सम्यक्ज्ञानकूं येक तन्मयि समजताहै सो बी मिथ्या द्रष्टीहै बहुरि किसीकूं येह विचार भावहै के शुभाशुभसे भिन्नमे शुद्धहूं ऐसी विकल्पसें आपका स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव

कूं येक तन्मयि समजताहै मानताहै कहताहै सोबी स्वभाव पूर्ण दृष्टि रहितस मजणा स्वभाव सम्यक्ज्ञान दृष्टिवानकोई पंडित होगो सोतो इस पुस्तगकीअ शुद्धता पुनरुक्ति दोष कदाचित् कोई प्रकारबी ग्रहण नही करेगा कारण कथा-भाग वा न्यायादिक ग्रंथोंमें पुनरुक्ती का विवाद स्यात् संभवे बहुरि हम येह ह-मारा अनुभव प्रकाशक पुस्तग रचेहै सो अवगाढताके अर्थ कही उसीकूं फि रफिर कहीहै सो पिष्टपिसन दोष मति स्वीकार करो बहुरि न्याय व्याकर्ण तर्क छंद कोश अलंकारादिक शब्द शास्त्रसें अपणा स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान स्वभा वकूं अग्नि उष्णतावत् एक तन्मयि समजताहै मानताहै कहताहै ऐसा पंडितज रूर इसग्रंथकी अशुद्धता पुनरुक्ति दोष ग्रहण करैगा बहुरि ज्यो स्वयंसिद्ध पर मातमा अष्टकरम तथा द्रव्यकरम भावकरमनो कर्म रहित अखंड अविनाशि अचलसें सूर्य प्रकाशवत् एक तन्मयि वस्तुहै उसी वस्तुका लाभ वा प्रापकी प्रा प्ति होणेजोगथी सो हमकूं हुई॥ ॥दोहा॥ ॥ होणीथीसोहोगई अबहो णेकीनाहि॥ धर्मदासक्षुल्लक कहे इसीजगतके मांहि॥१॥ अर्थात् जैसे दीप ८

कसें दीपक चेतता आयाहै तैसैही गुरुउपदेश द्वारा ज्ञानहोना आयाहे एवातौ अनादिहै सद्भूतव्यवहारसे ज्योकोऊ गुरु के बचन द्वारा स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकी प्राप्तकी प्राप्ति हुये पश्चात् ऐसा अपूर्व उपगार गुरुकोहै ताकों लोपकरिके गुरुको नाम प्रसिद्ध नहीकर्ताहै गुरुकीकीर्ति वडाई जस गुणानुवाद नही कर्ताहै सो म्हापातगी पापी अपराधी मिथ्यादृष्टि हत्यारोहै अर्थात् गुरुपदकों कदाचित् कोई प्रकारबी गुप्तरखणा श्रेष्ठनही सोही मेंके द्वारा में सत्य कहताहूं मेंका सरीरको नाम क्षुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदासहै वर्तमानकालमें सोहीमें कहताहूं श्रवणकरो मालवादेश मुकाम झालरा पाटण में नग्नदिगंबर श्रीमन् सिद्धश्रेण मुनितो मेंकु दीक्षा सीक्षा व्रत नेम व्यवहार भेषका दाता गुरुहै बहुरि बराडदेश मुकाम कारंजा पट्टाधीश श्रीमत् देवेंद्र कीर्तिजी भट्टारकजी का उपदेश द्वारा मेरेकूं स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकी प्राप्तकी प्राप्ति देणेवाले श्री सत्गुरु देवेंद्र कीर्तिजीहै वास्ते मै मुक्तहूं बंध मोक्षसें सर्वथा प्रकार बा

र्जित सम्यक्त ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु हूं सोही स्वभाव वस्तु शब्द वचन द्वारा श्री
मन् देवेंद्रकीर्ति तत्पट्टेरतनकीर्तिजीके मैभेट अर्पणकर चूक्योहूं॰ बहुरि खान
देश मुकाम पारोलामै सेठनानासहा तत्पुत्र पीतांबर दासजी आदि बहुतसे
स्त्री पुरुषकूं अर आरा पटणा छपरा बाढ फलटण झालरापाटण बर्हानपु
र आदि बहुतसे सहर ग्रामोंमै बहुतसे स्त्री पुरुषांकूं स्वभावसम्यक्त ज्ञानको
उपदेश दे चुक्योहूं ऊपर लिखेहुये सर्व व्यवहार गर्भत समजणा बहुरि सर्वजी
व राशि जिस स्वभावसें तन्मयिहै उसही स्वभावताकी स्वभावना सर्वही जीव
राशिकूं होहु ऐसी मेरा अंतःकरणमैं इच्छा हुईहै तिस इच्छाका समाधानके
अर्थ येह पुस्तग बनाईहै बणाय करिके पांचसैं पुस्तग येह छपाईहै ५०० पां
चसै पुस्तग प्रसूत होणेकी सहायताके अर्थ रुपिया येकसौं १०० तो जिल्हा
स्याह्वाबाद मुकाम आरामै मखनलालजीकी कोठीमै बाबू विमलदासजीकी
विधवा सोकी सोही हमारी चेली द्रोपतीदेवी दीयाहै विशेष खर्चाके अर्थ ज्यो
ज्यो मेरा बचनोपदेश द्वारा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्त ज्ञानमयि स्वभाव व

स्तु होणेजोग होचुकी ते सदाकाल अखंड अविनासी चिरंजीव रहो इति सम्यक् ज्ञानदीपकाकी प्रथम भूमिका समाप्तः॥ १॥ ॥प्रश्न॥ ॥जिनेंद्र कोणहै॥ ॥उत्तर॥ ॥ज्ञानभानु जिनेंद्रहै॥ ॥प्रश्न॥ ॥जिनेंद्रकी पूजा करणाके नाहींकरणा॥ उत्तर ॥पूजा करणा सम्यक्ज्ञान वस्तुहै सोही जिनेंद्रहै अज्ञान वस्तुकूं कोई जिनेंद्र मानताहै समजताहै कहताहै सो मिथ्या द्रष्टिहै॥ ॥प्रश्न॥ ॥ज्ञानकोणहै उत्तर तन मन धन बचनकूं बहुरि तन मन धन बचनका जेना शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मकूं अर ताका शुभाशुभ फलकूं अनादहीसें सहज स्वभावहीसें जाणताहै सोही ज्ञानहै प्रश्न मंदिरमै पद्मासन खड्गासण धातु पाषाणकी मूर्तिहै सास्त्र बहुरि जलचंदनादिक अष्टद्रव्य मंदिर आदि येह सर्व ज्ञानहै के अज्ञानहै उत्तर मंदिर प्रतिमादिक अज्ञानहै इन सर्वकूं केवल सहज स्वभावहीसें जाणताहै सोही ज्ञानहै प्रश्न केवल ज्ञानहैसो शुभाशुभ दान पूजा क्रिया कर्म कर्ताहै के नाही कर्ताहै? उत्तर केवल ज्ञानहैसो किंचित्‌मात्रबी शुभाशुभ दान पूजा क्रिया क-

र्म नहीं कर्ताहै केवल सहज स्वभावहीसें जाणताहीहै प्रश्न जो येह शुभा
शुभ कोण कर्ताहै निश्चय नयात् जिसका जोही कर्ताहै व्यवहार नयात् शु
भाशुभ कर्मसे अतत् स्वरूप अतन्मयि ज्ञानहै सो कर्ताहै १ क्याकरूं कह
तां लाज सरम उपजतीहै तथापि कहताहूं जैसें सूर्यसें कदापि प्रकास नभि·
न्न हुवो नहोवेगो नभिन्नहै तैसें जिसरसें देखणा जाणना कदापि भिन्न नाही
नभिन्न होवेगा नभिन्नहै ऐसा केवल ज्ञानमयि परमातमासें येक नेत्र काटि·
मकारा मात्र वा समय कालमात्रबी कोईजीव भिन्न रहताहै सोजीव संसारी
मिथ्याद्रष्टी पानगीहै जैसें सूर्यसे अंधकार अलगहै तद्वत् ज्ञानस्वरूपीजि
नेंद्रसें आपकूं अलग समज करिके फेर धातुपाषाणकी देवमूर्तिका दर्शण पू
जादिक कर्ताहै सो मूरख मिथ्याद्रष्टीहै बहुरि जैसें सूर्यसें प्रकास तन्मयिहै तैं·
से ज्ञानस्वरूपी जिनेंद्रसें गुरुपदेशात् तन्मयि होय करिके फेर धातु पाषाण
की मूर्तिका दर्शण पूजादिक कर्ताहै सो सम्यक्द्रष्टी धन्यबाद योग्यहै १ हेमे· १०
रामंत्रीहो दान पूजा व्रत शील जप तप नेमादिक शुभकर्म क्रिया भाव करो बहु

रि अशुभजो पाप अपराध झूठ चोरी काम कुशीलबी करो अर्थात् शुभाशुभ काम कर्म क्रिया इच्छा प्रमाण भलाई करो परंतु समज करिके करो लौकीक-बचन प्रसिद्ध है ष्याके देखोजी तुम समज करिके काम कार्य कर्ता तो नुकसाण बिगाड किसवास्ते होता बिना समजसैं येह काम कार्य तुम किया इस वास्ते नुकसाण हुवा बिनासमज तुम पूर्व अनंतबेर प्रतक्ष समोसरणमे केवली भगवानकी मोतीके अक्षत रत्न दीप कल्पवृक्ष पुष्पादिकसैं पूजा करि बहुरि प्रतक्ष दिव्यध्वनिश्रवण करी बहुरि मुनि व्रत शील अनंतबेर धारण कीये अर कामक्रोध लोभादिकबी अनंत कालसैं करते चले आये सो सर्व शुभाशुभ विनसमजसैं करते चले आयेहो देखो विन समजसैं कंठमे मोतीकी मालाहै अर भंडारमैं खोजताहै बिनसमजसैंही कस्तूर्‍यो मृग कस्तूरीकूं खोजताहै बिन समजसैही आपहीकी छायाकूं भूत मानताहै· बिन समजसैंही नदीका जलकूं सीघ्र बेगसैं बहता देख करिके आपहीकूं बहता मानताहै बिन समजसैंही कांखमे छोकरो पुत्र अर गांव देसमै खोजताहै बिन समजसैंही संसारी मिथ्याती विषयभो

ग काम कुशीलतो छोडते नाही अर दान पूजा व्रत शीलादिक छोड करिके आ
पकूं ज्ञानी मानतेहै कहतेहै समजतेहै बहुरि विन समजसैंहो सदाकाल जाग
तीजोति स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुका कबि
कदाचित् तन्मयितातो आपसे हुये नाही अर मूरख व्रत जप तप शील दान
पूजादिक कर्ताहै सो घृतके अर्थ जलकूं मथन वृथाही कर्ताहै वास्ते सर्व शुभा
शुभ व्यवहार क्रियाकर्मके बहुरि जन्म मरण नाम जाति कुल वा तन मन
धन वचनादिकके प्रथम समज होणा श्रेष्ठहै १ येह लोकालोक जगत-
संसार पाप पुन्य बंध मोक्षादिक हैसो सर्व समज होणेके अर्थहै १ सम
ज स्वीकार करो लिखताहूं ज्ञानहैसो कर्ता कर्म क्रियाकूं अर इसका शुभा
शुभ फलादिककूं सहज स्वभाव भावसें जाणताहै अब नहीं जाणवामें
आवेंके ज्ञानहैसो शुभाशुभ कर्मको कर्ताहै के नाहीं कर्ताहै कोण जा-
णे ज्ञानकी ज्ञानही जाणै· पुद्गल द्रव्य धर्माधर्म द्रव्य आकाश काल द्रव्या ११
दिकहैसो आपापरकूं जाणतेही नाहीं इनसर्वकूं ज्ञान जाणताहै येहस-

मज सुगमहै परंतु गुरुके चरणकी शरण हुयेबिना बहुरि काल लब्धि पाचक हुयेबिना येह सुगमताको लाभ नहीं होय येह निश्चयहै समजो जलदीसें घरकों अग्नि लागे पीछे कूप खनन वृथा है॰

इति भूमिका समाप्तः

ॐनमः ॥३॥ ॥अथ सम्यक्ज्ञानदीपका प्रारंभः॥ ॥ तहां प्रथम स्वस्व
रूप स्वानुभव इष्ट देवकूं नमस्कार सूचक श्लोक॥ महावीरंनमस्कृत्य
केवलज्ञानभास्करम् ॥ सम्यक्ज्ञानदीपस्य मयाकिंचित् प्रकाश्यते ॥१॥
स्कंदरिछंद॥ ॥अथअनादि अनंताजिनेश्वरं सर सस्कंदर बोध मयींपरम्
॥परममंगलदायकहैसही नमनहूं इसकारणसुभमही॥१॥ ॥अथबच
निका॥ ॥मूलवस्तु दोयहै ज्ञान अज्ञान तामै जैसै सूर्यमै प्रकाश गुणहै
तैसै जिस वस्तुमै देखणे जाणनेका गुण स्वभावहीसैं है सो वस्तु तो केवल-
ज्ञानहै बहुरि जिस वस्तुमै स्वभावहीसैं देखणे जाणनेका गुण नाहीं सोही-
अज्ञान वस्तुहै येह तन मन धन बचन शब्दादिक अज्ञानसे ऐसा मिलेहै जे
सै काजलसैं कलंक मिलरह्योहै बहुरि जैसै केवलज्ञानमै देखणे जाणने
का गुणहै तैसै शब्दमै कहणेका गुणहै बहुरि ज्ञानवस्तु आपापरकूं देखत-
हैजाणतहै सो आपही आपकूं तो आपसैं आप तन्मयि होकरिकै जाणतहै
बहुरि ज्ञानसै सर्वथा प्रकार भिन्न वस्तुहै ताकूं ज्ञान जाणताहै परंतु जड अ-

ज्ञानमयिवस्तुसें तन्मयि हो करिके नही जाणनहै बहुरि कहणेका गुण अज्ञा
न मयि शब्दहै तामे हैसो शब्द स्वपरकी वार्ता कहताहै परनु स्वपरकूं जाण-
तानाहीं स्वसैंतो नन्मयि हो करिके कहताहै बहुरि परसें अतन्मयि हो करि
के कहताहै स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुहै ताकाअ
र शब्दादिक अज्ञानवस्तुहै ताका परस्पर सूर्य अंधकारकासा अंतरभेद मूल-
हीसेंहै तोबी शब्दहै सो परमातमा ज्ञानमयिकी वार्ता कहताहै॥ अथप्रश्न
॥ शब्द अज्ञान वस्तुहैसो सम्यक् ज्ञानमयि परमातमाकूं जाणने नाही फे
र सम्यक् ज्ञानमयि परमात्माकी वार्ता कैसे कहताहै अथउत्तर जैसे को
ई चंद्रदर्शणको लोभी किसी गुरुसे नम्रतापूर्वक बूजोके चंद्र कहांहै तबगु
रुकहीके वोचंद्रमा मेरी अंगुलीके ऊपर इहां बिचार करी शब्दांगुलीके अर चंद्र
के जेता अंतरभेदहै तेताही भेद सम्यक्ज्ञानमयि परमात्माके अर शब्दकेसम
जणा इसप्रकार कहणेका गुण तो शब्दमैहै बहुरि जाणवाकागुण केवल ज्ञा-
नमैहै इति जैसै जिस नगरमे अज्ञानी राजाहै ताके ऊपर केवलज्ञानी राजाहो

सत्ताहै बहुरि जिस नगरमैं केवल ज्ञानी राजाहै ताके ऊपर कोई बी अधिष्टा-
ता राजा होएगा न संभवै तैसैंही सहज स्वभाव सम्यक् ज्ञानसैं अधिक कोई नही
अब हे केवलज्ञान स्वरूपी सूर्य तूं मूल स्वभावहीसैं जैसाको तैसो जैसोहै तैसो
सोको सोहीहै तूं केवलज्ञान मयि सूर्यहीहै तूं नस्कुण नाही श्रवण करि तेरे कर
म भरम पुद्गल का विकार काला पीला लाल धोला हर्या अनेक पाप पुन्यरूपी
बादल बीजली आदिं आडा आवै जावै तोबी तूं तेरेकूं केवल ज्ञानमयि सूर्यहीस
मज मान तूं तेरेकूं केवल ज्ञानमयि सूर्य न समजैगो न मानैगो तो तेरेकूं तेराहीघा
न करणेको पापलागेगो आपघाती महापापी॥ ॥इतिप्रसिद्ध वचन॥ ॥अ
थप्रश्न॥ ॥हांहांहां मै केवल ज्ञानमयि सूर्यतो निश्चयहूं परंतु मै तन मन धन
वचनादिकसे ऐसा भिन्नहूं जैसा अंधारासै सूर्य भिन्नहै तैसा फेर मै मेरेकूं केव-
लज्ञानमयिसूर्य कोण द्वारा होकरिकै समजूं मानूं सो कहो अथउत्तर नस्कुण
नाही श्रवण करि आत्मख्याती ग्रंथमै कुंद कुंदाचार्य ग्रंथके प्रथमारंभमैही कही १२
है जीव द्वार अजीव द्वार आश्रव द्वार संबर द्वार निर्जरा द्वार बंध द्वार मोक्ष द्वार पा

प द्वार पुन्य द्वार सर्व विशुद्धी द्वार कर्त्ता द्वार कर्म द्वार येह द्वादश द्वारा तूं तेरे कुं निश्चय समज तथा हम तुम येह वह येह ४ च्यार द्वारा द्वार० होय करिके तूं तेरेकूं निश्चय समज वा तन मन बचन धनादिकके द्वारा तूं तेरे कूं निश्चय समज. तथा पुद्गल तो आकार अर धर्माधर्म आकाश कालहै सो निराकार वास्ते आकार नीराकारके द्वारा होकरिके तूं तेरेकूं निश्चय समज है अर नही येह दोय द्वारा होकरिके तूं तेरेकूं निश्चय समज निश्चय व्यवहारके द्वारा होकरिके तूं तेरेकूं निश्चय समज वा नामस्थापना द्रव्य भाव येह ४ च्यारके द्वारा हो करिके तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा जन्म मरण सुख दुःख शुभाशुभ विचारके द्वारा हो करिके तूं तेरे कूं निश्चय समज तथा संकल्प विकल्प भावाभावके द्वारा होकरिके तूं तेरेकूं निश्चय समज १ वेद पुराण शास्त्र सूत्र सिद्धांतके द्वारा हो करिके तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा द्रव्यकर्म भावकर्म नो कर्मके द्वारा होकरिके तूं तेरे कूं निश्चय समज पूर्वोक्त समजसें विशेष समज गुरुके वचन द्वारा तूं तेरेकूं निश्चय समज और श्रवण करि जैसें सूर्यप्रकाश येक मयिहै तैसै पूर्वोक्त द्वारकुं अर तूं तेरेकूं येक मयि सम-

जैगो मानैगो तो आपघाती महापापी मिथ्या दृष्टी होवैगो ओर बाज्यो कोई द्वार हीकूं अपणा स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव समजैगो मानैगो वो आपघाती महा पापी मिथ्यादृष्टीही रहैगो जैसै येक वडे भारी नगरके अनेक द्वार सुंदर है इच्छा आवै कोई द्वारमै होकरिकै सहरमे प्रवेश करो प्रवेश करणे वालो नगरमै पूग जावैगो विचार करणा सहरके भीतर महल मंदिर मकान है ता· के द्वारा सहस्त्र लक्षादि है अर सहरमे प्रवेश करणे वाला का शरीरमे दश द्वार तो प्रसिद्धही है· विशेष रोम रोम प्रति छिद्र है वास्ते सहरमे प्रवेश करणे वालेके शरीरहीमे लक्ष कोटादिक द्वार है वास्तै पूर्वोक्त विचार द्वारा आदि अनंत संसार अपार संसारके द्वारा होकरिके अपणा आपमें आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकूं अर पूर्वोक्त द्वारकूं अग्नि ऊष्णता वत् सूर्य प्रकाशवत् येक मति समजो मति मानूं जैसे राज द्वार ऐसा कहणेसे येह भाव भाष होना है के जिस द्वारके भीतर होकरिके राजा आते है जाते है परंतु ऐसे न समजणा के राजा है सोही द्वार है अर द्वार है सोही राजा है केवल कहणे मात्र राज द्वार है अर्थात् द्वार

हैसो द्वार हीहै अर राजाहैसो राजाहीहै ऐसैही सर्व द्वार द्वार प्रति समज लेणा जि
सका जोही द्वारहै क्यूंके जैसै सूर्यके देखणेसै सूर्यकी खबर होतीहै तैसैही जि
सकूं देखणेसैं जिसहीकी खबर होतीहै अथवा आपकूं देखणेसैं आपकी-
खबर होतीहै येसर्व अणहोणीसी युगती स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नमयि स्वभाव वस्तुकी प्राप्तकी प्राप्तिके अर्थ हम करिहै औरबी स्वस्वरूप स्वा-
नुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुसूचक युक्ति आगे कहैंगे तुम इस द्वार
मैं होकरिकै आवो जावो अमुका द्वारमै होकरिके आवो जावो मोक्षद्वार जीवद्वार
अजीवद्वार ध्यानद्वार इत्यादिक द्वारमै हो करिकै आवो जावो यदि नहि आवो न-
हि जावोतो तुम तुमारा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावमे जै-
साकातैसा जैसाहो तैसा सोका सोही हो सोही रहो हेसूर्य तूं तेरा प्रकाशगुणस्व
भावकूं त्याग करिकै अमावस्याकी मध्यरात्रीका अंधारावत् मतिहोणा नहोणा
तैसैही हे केवलज्ञानमयि सूर्य तूं तेरा गुणस्वभावसैं निरंतर सदोदयहै सो कोसो
ही रहणा श्रीमत् कुंद कुंदाचार्य रचित आत्मक्षाती ग्रंथोक्त प्रमाण लिखताहूं

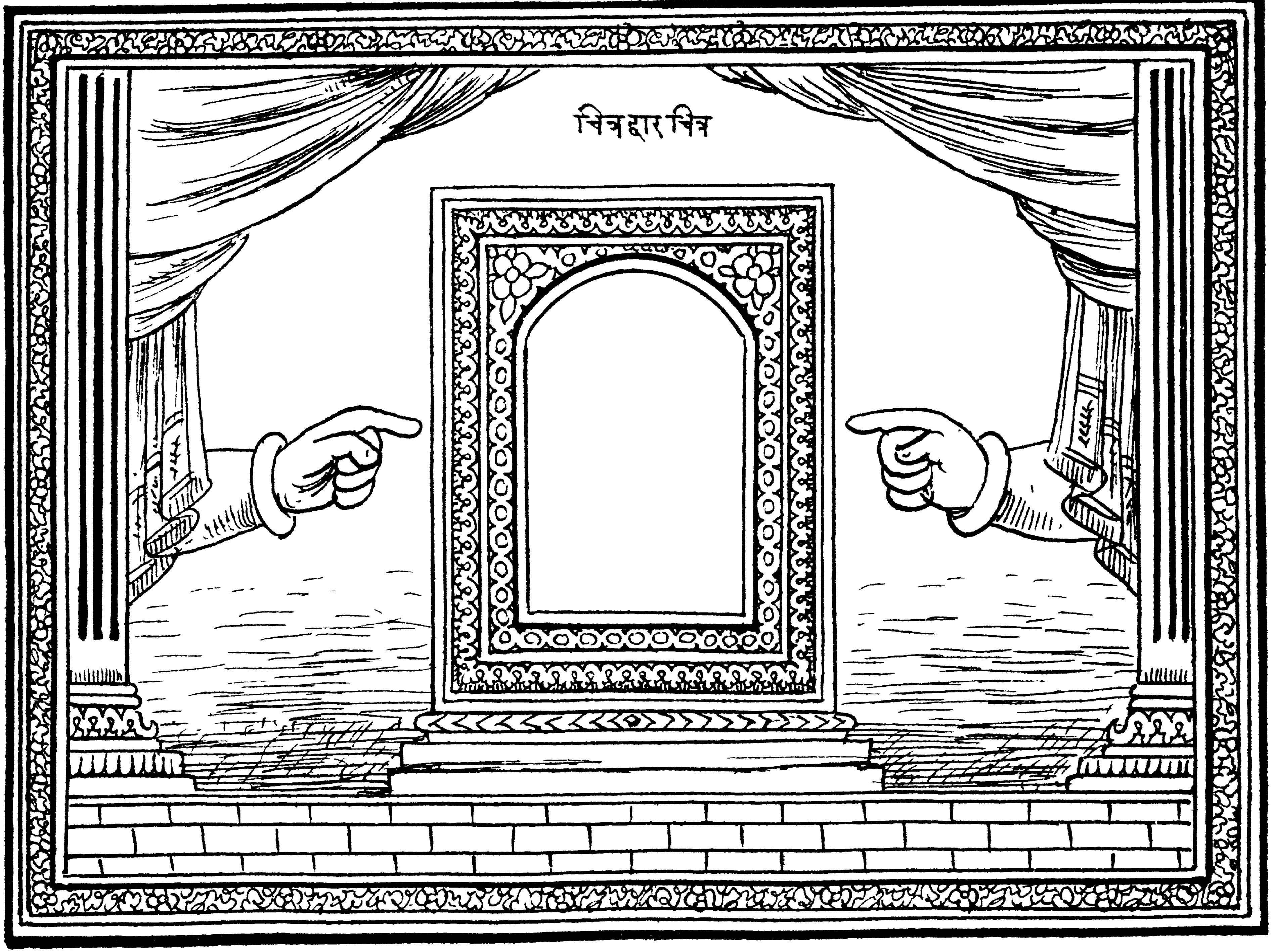
सो पाठक मंत्री वा वक्ताश्रोता मंडली सज्जनहो अज्ञानकूं छोड त्याग करिकै के
वल ज्ञानकूं स्वीकार करो कैसा स्वीकार करो के हमही केवलज्ञानहै ऐसे हम॰
के द्वारा केवल ज्ञानकूं स्वीकार करो श्रवण करो केवलज्ञानहैसो लोकालोक॰
सैं जन्म मरण नामादिकसैं वा तन मन धन वचनादिकसैं शुभाशुभ पाप॰
पुण्यादिकसैं द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्मादिक सर्व वस्तुसैं सहज स्वभावही
सैं भिन्नहै अलगहै न्यारोहै सोही श्रीमत् कुंदकुंदाचार्यका लेख बचन परि
क्षा पूर्वक प्रमाण करो लिखताहूं शास्त्रंज्ञानं नभवति यस्मात् शास्त्रं नजा॰
नाति किंचित् यस्मादन्य दज्ञान मन्यच्छास्त्रंजिनाविंदंति १ शब्दोज्ञानं न॰
भवति यस्माच्छब्दोनजानाति किंचित् यस्मादन्यदज्ञान मन्य शब्दं जिनाविं
दंति २ रूपंज्ञानं नभवति यस्मात् रूपं नजानाति किंचित् यस्मादन्य दन्यान
मन्यद्रूपंजिनाविंदंति ३ वर्णोज्ञानं नभवति यस्माद्वर्णो नजानाति किंचित्
तस्मादन्य तज्ञान मन्यं वर्णं जिनाविंदंति ४ गंधोज्ञानं नभवति तस्माद्गंधोन॰ १५
जानातिकिंचित् तस्मादन्यदज्ञानमन्यंगंधंजिनाविंदंति ५ नरसस्तुभव

तिज्ञानं यस्मात् रसो न जानाति किंचित् तस्मादन्यदज्ञानं रसं चान्यं जिनाविं
दंति ६ स्पर्शो न भवति ज्ञानं यस्मात् स्पर्शो न जानाति किंचित् तस्मादन्यद-
ज्ञानमन्यं स्पर्शं जिनाविंदंति ७ कर्म ज्ञानं न भवति यस्मात् कर्म न जानाति-
किंचित् तस्मादन्यदज्ञानमन्यत् कर्म जिनाविंदंति ८ धर्मद्रव्य अर्थात् धर्मो
ज्ञानं न भवति यस्माद्धर्मो न जानाति किंचित् तस्मादन्यदज्ञानमन्यं धर्मं जि-
नाविंदंति ९ ज्ञानमधर्म्मो न भवति यस्मात् अधर्म्मो न जानाति किंचित् य-
स्मादन्यदज्ञानमन्यमधर्म्मं जिनाविंदंति १० कालो ज्ञानं न भवति यस्मात् का
लो न जानाति किंचित् तस्मादन्यदज्ञानमन्यं कालं जिनाविंदंति ११ आका
शमपि न ज्ञानं यस्मादाकाशं न जानाति किंचित् तस्मादाकाशमन्यदन्यग्ज्ञानं
जिनाविंदंति १२ नाध्यवसानं ज्ञानमध्यवसानमचेतनं यस्मात् तस्मादन्यद
ज्ञानमध्यवसानं तथान्यत् १३ यस्मात् ज्ञानाति नित्यं तस्मात् जीवस्तु ज्ञाय-
को ज्ञानम् ज्ञानं च ज्ञायकादव्यतिरिक्तं ज्ञातव्यं १४ ज्ञानं सम्यक् दृष्टिं तु संय
मं सूत्रमंगपूर्वगतं धर्म्मोधर्म्मं च तथा प्रव्रज्यामभ्युपयंति बुधाः। १५ ज्ञानहै

सो सहज स्वभावहीसैं च्यारगति चोरासीं लक्ष योनीकूं देखता जाणताहै - नाचणेमै मजा नाहीं नाटिककूं सहज स्वभावही देखता जाणताहै उसकूं बडा मजा सुखहै पुद्गलादिक येह सर्व लोकालोक जगत संसार जन्ममरण नामादिक शुभाशुभ तन मन धन बचनादिक अंधाहै येह कुछ जाणते नाहीं ज्ञानहैसो इन सर्वहीकूं सहज स्वभावहीसें देखता जाणताहै येह लोकालोक जगत संसारहै सो ज्ञान सूर्यका प्रकाशमै अणुरेणुवत् है ज्ञान सर्वसैं अधिक मोटो है जैसे जिस सहरमै अज्ञानी राजा है ताकेऊपर केवलज्ञानीराजा होसक्ताहै बहुरि जहां केवलज्ञानी राजाहै ताके ऊपर अधिक कोईबोअधिष्ठाता नसंभवै ज्ञानाबिना कथनी जैसे नाकविना नथनी तथा जबलग है अज्ञान तबलग कुटंब कबीला भाईहै ज्ञानहुवा तो आत्मा आपमै आपसमाईहै तथा जैसे पाकस्थानमै आटो दाल चून चावल घृत बर्तन इंधनादिक पाक करणेवालो आदि सर्वहै परंतु अग्निविना सर्व तांदुलादिक सर्व कच्चाहै तैसेही केवलज्ञानविना नेम धर्म व्रत उपवास दान पूजा शुभाशुभ सर्व वृथाहै

आगे इसी ग्रंथमै भेदज्ञानाधिकारमै ज्ञानकूं सर्व वस्तु शुभाशुभसैं भिन्न दि-
खाये है तहां पढणे वाचणे और मननादिकके द्वारा स्वभाव सम्यक्ज्ञानानुभ
वस्वीकार करो बहुरि योगींद्रचंद्र आचार्य रचित परमातमा प्रकाश ग्रंथोक्तं
हे प्रभाकरभट्ट धर्म कहिये मुनिरूपधर्म अर अर्थ कहिये संसारका प्रयोजन
काम कहिये विषयाभिलाष येह तीनूंही आत्मासे भिन्न है येह तीन ज्ञानरूप
नाही कदाचित् कोई प्रकारबी तूं तन मन धन वचन शब्दादिक वा पुद्गल धर्मा
धर्माकाश कालादिकसैं अग्नि अर उष्णतावत् येक तन्मयि मति होएगा नहीं-
होएगा ॥ १ ॥ ॥ ज्ञानचित्र द्वार विवर्णयुक्ति संपूर्ण ॥ ॥ ७ ॥ ॥ दोहू ह-
स्तांगुली चित्र द्वारा परस्पर उपदेस रूप सूचै है ताको अनुभव ऐसै लेणा ये-
ह येक द्वार है तामै येक कहता है इसद्वारमें होकरिकै तुम इदरकी तरफ जा-
वोगा तबतो तुमकूं जीव चेतन ज्ञानका लाभ होगा दूसरा कहता है इस द्वारमै
होकरिकै तुम इदरकी तरफ जावोगा तो तुमकूं अजीव अचेतन अज्ञान जड
का लाभ होवैगा यदि तुम हमारे कहणेसैं जीवाजीव ज्ञानाज्ञानका लक्षण

क्षण जात्यादिक परस्पर भिन्नाभिन्न समज करिके दुविधा है तताकी विक
ल्प त्याग करिकै दोहू तरफ नही जावोगे तो तुम तुमारा स्वस्वरूप स्वानुभव॰
गम्य सम्यग ज्ञान मयि स्वभावमैं स्वभावहीसे जैसाका तैसा जैसा है सो
का सोही जहांके तहां चलाचल रहित रहोगे १ जैसे सूर्य अंधकार का
तन्मयिता मेल नाही तैसे ज्ञान अज्ञानका येक तन्मईता मेल नाहीं ज्ञानअ
ज्ञान कूं सूर्य अर सूर्यका प्रकाशवत् येक तन्मयि समजता है कहता मान॰
ता है उसकूं सम्यक् ज्ञानानुभवकी अवगाढता निश्चयता नाही होगी॰
देखो समजो येती बस्तु ज्ञान नाही॰


चित्रद्वार चित्र

ॐनमः॥ ॥अथवस्तुस्वभावविवर्ण चित्रसहितलिख्यते॥ ॥दोहा॥
सम्यक्ज्ञानस्वभावमे लीनभये जिनराज॥ धर्मदासक्षुल्लककरै नत्वानिसि-
दिनसाज॥१॥ ॥अथबचनिका॥ ॥मूलवस्तु २ दोयहै एकज्ञान दूसरो-
अज्ञान बहुरि अज्ञानवस्तु ५ पांचहै पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल येहपां
च द्रव्यहै तामै पुद्गलतो मूर्ति आकारहै बाकी ४ च्यार द्रव्य अमूर्ति निराकार
है इनमै ज्ञानगुण नाही जीवबी अमूर्ति निराकारहै परंतु जैसे सूर्यमे प्रका
श गुणहै तैसै जीवमे ज्ञानगुणहै वास्ते जीव वस्तु उत्तमहै परंतु जोजीव गु
रुपदेशात् अपणा आपमे आप मयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञान
मयि स्वभाव वस्तु जाणगये सोतो उत्तम है पूज्यहै मान्यहै धन्यवादयोगहै
बहुरि जैसे बकरी मंडलीमें जन्म समयमेही पर वसात् सिंह रहताहै आपकूं
सिंह स्वरूप नसमजताहै नमानताहै तैसैही जोजीव अनादिकर्म वसात् सं-
सार कारागारमैहै सो अपणा आपमे आपमयि सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव गुण १८
कूं तो जाणतो नाहीं मानतेनाही अर अनादि भर्म कर्मवसात् आपकूं ऐसामा

नतहै के येह जन्म मरण नाम अनाम आकार निराकार तन मन धन बचन बि·
चार बुद्धि संकल्प विकल्प राग द्वेष मोह काम कर्म क्रोध मान माया लोभ पाप पु
न्यादिक है सोही मैंहूं अर्थात् ऐसे स्वस्वरूप ज्ञान रहित है सो जीव नों है परंतु अ·
शुद्ध संसारी जीव है अब येक दोय संख्या असंख्या एकांत अनेकांत एक अनेक
द्वैताद्वैत आदिक से सर्वथा प्रकार भिन्न एक स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नमयि स्वभाव वस्तु चलाचल रहित है विशेष स्वानुभव आगे चित्र द्वारा लेणा सा
धारण अबी लेणा सर्व वस्तु आपने अपने स्वभावमे मग्न है कोई वस्तु बी अपणा
स्वभावगुणकुं उल्लंघन करिके परस्वभाव गुणकूं ग्रहण करते नाहीं· वस्तु अपणा
गुणस्वभाव छोड देतो वस्तुका अभाव होय वस्तुका अभाव होने संते आत्मा परमा
त्मा अर संसार मोक्षादिक का अभाव होवैगा संसार मोक्षादिक का अभाव होते सं
ते शून्यदोष आवैगा वास्ते वस्तु कोई है सर्व ही वस्तु अपणे अपणे स्वभावमें जैसी
है तैसी है तैसे ही स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि वस्तु बी स्वभावमे जै
सी है तैसी है सो है है ही है स्वभावमै तर्क को अभाव है तथापि अनादि कालसें स्वस्व

रूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयी वस्तुसे सर्वथा प्रकार भिन्न येक अज्ञान-
मयि वस्तु है तामे कहणेका विचार चिंतवन संकल्प विकल्प आदि बहुत गुण हैं
सोही वा जडमयि अज्ञान वस्तु अनेक प्रकारसें स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्
ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु कूं मानैहै कहेहै सो सम्यक्ज्ञान स्वभावमे संभवै नाहीं ता
तै मिथ्याहै जैसी मानैहै कहेहै तैसी वस्तु वा है नहीं क्यूंके वस्तु अपणा स्वभावमें-
जैसीहै तैसीहै सो हैहीहै वा जड अज्ञान मयि वस्तु है सो सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव व
स्तुकूं इसप्रकार मानैहै कहेहै सोही कहियेहै वा स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक्
ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तो अपणी आप आपहीके स्वभावमैं है सो तो जहांकी तहां
जैसाकी तैसी जेसीहै तैसी सोकी सोहीहै सो है जिसकूं कोई तो निराकार मानैहै-
कहेहै अर उसी वस्तुकूं कोई आकार मानैहै कहेहै अर्थात् उसी वस्तुकूं कोई कैसे
मानैहै कोई कैसे मानै है अब देखो चित्र हस्तपरस्पर सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव व-
स्तुकूं अंगुलीसें सूचैहै पूर्व वासी कहताहै मानताहै के वा सम्यक्ज्ञानमयि स्व- १९
भाव वस्तु पश्चिम कूं है पश्चिम वासी कहताहै मानताहै के वा सम्यक्ज्ञानमयि स्व

भाव वस्तु पश्चिमकूं नही। किंतु वा वस्तु पूर्वकूं है॰ दक्षिणवासी कहताहै मानताहै
के वा सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु पूर्वकुं नही अर पश्चिमकूं नही वासम्यक्ज्ञान॰
मयि स्वभाव वस्तुतो उत्तरकूं है॰ उत्तरवासी कहताहैके वा सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव
वस्तुतो पूर्व पश्चिम उत्तरकूं बी नहीं किंतु वा सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु दक्षिण
कूंहे ऐसेही अग्निकोणवासी उस वस्तुकों वायुकोणमे मानताहै वायु कोण वासी।
उसी वस्तुकूं अग्निकोणमे मानताहै नैर्ऋत कोणवासी उस वस्तुकूं ईशान कोणमें
मानताहै॰ ऐसेही निश्चयालंबी व्यवहारकूं निषेधेहै॰ व्यवहारालंबिनीश्चयकूं निषे
धेहै॥ ॥सवैय्या॥ ॥ एककहूं तो अनेकहिदीषत एकअनेक नहीकछुऐसो ॥
आदिकहूं तो अंतहिआवत आदिसु अंतरूम ध्यस्क केसो ॥ गुसकहूं तोअगुप्तहै
कहां गुन अगुमउभयोनहिऐसो॥जोहिकहूंसो हैनहिस्कंदर हैनो सहीपण जैसा॰
कोतैसो॥१॥ ॥अथबचनिका॥ ॥उससम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव वस्तुकूं कोईकै
से मानतहै कोई कैसे मानतहै परंतु मानूं भलाई वस्तु येह मानतेहैं जैसीहै नही॰
भावार्थ वस्तुअपणा स्वभावमे जैसीहै तैसीहै सोहै वस्तुका स्वभावमे तर्कको अ॰

भावहै॥ ॥चौपाई॥ ॥ज्ञेयाकारब्रह्म मल मानै नासकरणकोउद्यमठानै॥ व॰
स्तुस्वभावमिटैनहिक्यूंही॥तातैंखेदकरैसठयूंही॥ दोहा ॥वस्तुविचारत॰
ध्यावतैं मनपावैविश्राम॥रसस्वादतसुखऊपजै अनुभवताकोनाम॥२॥ अनुभ
वचिंतामणिरतन अनुभवहैरसकूप॥ अनुभवमारगमोक्षको अनुभवमोक्ष॰
स्वरूप॥३॥ ॥अथबचनिका॥ ॥अर्थात् येह जेनी नयन्याय एकांत अनेकां
त निश्चय व्यवहार स्याद्वाद प्रमाण नय निक्षेपादिक येह जेताहै तेताही बादा बि॰
बादहै बहुरि जेतावादाविवादहै तेताही मिथ्यात्वहै॰ जेता मिथ्यात्वहै तेताही संसा
रहै वास्ते॥ चौपाई ॥सतगुरुकहै सहज काधंधा येहबाद बिवाद करै सोअंधा
॥१॥ ॥ओरसुणो नाटिकसमयसार ग्रंथोक्तं॥ सवैय्या ३१ सा॥ ॥असंख्यात
लोक परमाणजो मिथ्यात भाव तेही व्यवहार भाव केवली उकतहै,जिनके मिथ्या
तगायो सम्यक्दरशभयो ते नियत लीन व्यवहारसैं भुकतहै॥ ॥पुनरोक्तं॥ ॥
निश्चय व्यवहारमैं जगत भरमायोहै॥ ॥भावार्थ॥ ॥वास्वस्वरूप सम्यक्स्वा २०
नुभवगम्य ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुतो स्वभावहीसैं जैसीहै तैसीहै देखो चित्रहस्तां

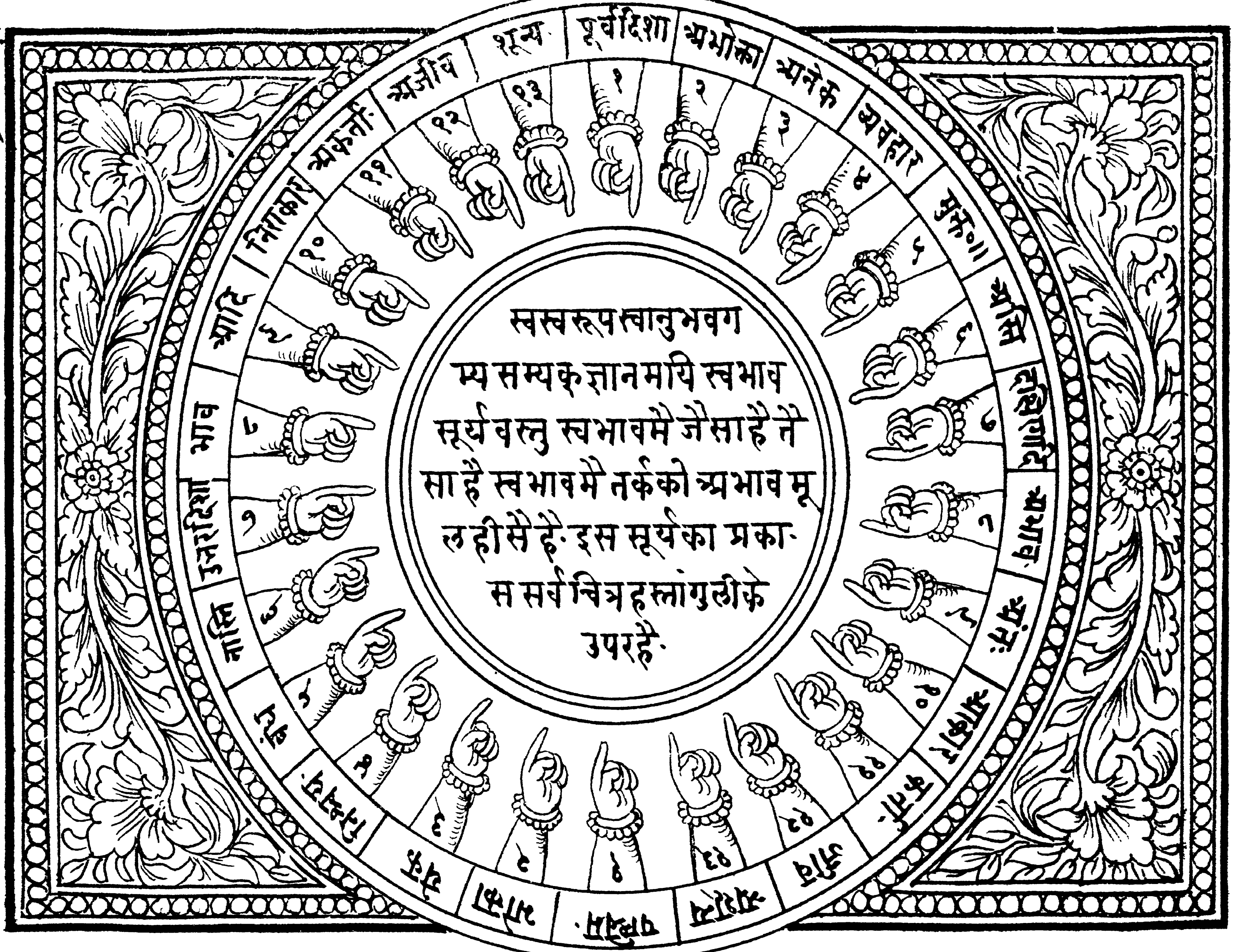
गुली सूचैहै पूर्व पक्षी जिस वस्तुकूं पश्चिम तरफ मानैहै तै तैसीही पश्चिम पक्षी उसी वस्तुकूं पूर्वकी तरफ मानैहै वस्तुतो नपूर्वकूं नपश्चिमकूं अपणीआप आप हीका स्वभावमे जैसीहै तैसीहै सोहैहीहै वृथाही पूर्वपक्षी पश्चिम पक्षी परस्पर विरोध सूचैहै क्यूंके वस्तु स्वस्वभावमै स्वभावहीसैं जैसीकी तैसीजहांकीतहां चलाचल रहितहै इस स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकी जिसकूं पूर्ण अनुभव लेणो होय सो प्रथम आपकूं मैके द्वारा वा गुरुपदेसात् ऐसो कल्प लेणो ऐसो आपकूं मान लेणोके स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयिसूर्य स्वभाववस्तु अपणी आपमे आप स्वभावहीसें जैसीहै तैसीहै जिस स्वभावमयि वस्तुमे तर्कको अभाव मूलहीसैहै ऐसी वस्तुज्ञानमयिहै सोही मेहूं ऐसे अपणे आपकूं मैके द्वारा वा गुरुके वचन द्वारा अचल निश्चय कल्पलेणो बादपीछे चित्रहस्तांगुली चक्रकूं मोनसहित येकांत स्थानमैं बैठकरिके देखवो हीकरो देखते देखते देखणा देखणेके भीतर देखणासे तन्मयि रहैगा नाचणेमे मजानाही नृत्यनाच देखणेमे बडा मजाहै॥ ॥दोहा॥ ॥सम्यक् ज्ञान स्वभाव

सें सदाभिन्न अज्ञान, धर्मदास क्षुल्लक कहै प्रेमचंद्र तू मान ॥ १ ॥ चित्रांगुलि-
कूं देखके मनमें करो बिचार ॥ धर्मदास क्षुल्लक कहै पावोगा भवपार ॥ २ ॥ जै-
सा सूर्यका प्रकास पृथ्वी जलाग्नि आदि कर्ता कर्म क्रियाके तथा शुभाशुभ व-
स्तुके ऊपर है तैसें ही चित्र हस्तांगुलीके ऊपर स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्-
ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका ज्ञानगुण प्रकाश है परंतु चित्र हस्तांगुलीसें अर चि-
त्र हस्तांगुलीका भाव क्रिया कर्म आदि जेताकुछ शुभाशुभ व्यवहार है तासे ज्ञा-
नगुण तन्मयि है नहो वेगा नहुयेथे बहुरि ज्ञानगुण अर जिस गुणीका ज्ञान-
गुण है सोबी चित्र हस्तांगुलीसें बहुरि चित्र हस्तांगुलीका भाव क्रिया कर्म आ-
दि जेता कुछ शुभाशुभ व्यवहार है तासे नतन्मयि हुये न होवेगा नहै विशेष-
और समजणा सुणो जैसे येक मोटो चोडो लंबो स्वच्छ स्वभाव मयि दर्पण ता-
के सन्मुख अनेक प्रकारका काला पीला लाल हरित सुपेदादिक रंगका बांका
टेडा लंबा चोडा गोल तिरच्छा आदि आकार है तथा जैसे मयूर पक्षी अनेक- २१
चित्रविचित्र रंगमई है ताकी प्रतिछाया प्रतिबिंब उस स्वच्छ दर्पणमे तन्मयि

वत् दीखतहै तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वच्छ स्वभाव दर्पणमै येह मनुष्य देव तिर्यंच नारकीका वा स्त्री पुरुष नपूंसकका वा तनमन धन बचनतथा लोकालोक आदिकका शुभाशुभ जेता व्यवहारहै ताकीप्रतिच्छाया प्रतिबिंब उस स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वच्छ स्वभाव दर्पणमै तन्मयिवत् दीखतहै मानु कीलरारवेहै मानु चित्रकार लिख रारवेहै मानु काहू शिल्पकार टांचीसे कोर रारवेहै भावार्थ स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वच्छ स्वभावमयि दर्पणहै सोबी स्वभावहीसें स्वभावमै जैसाहै तैसाहै बहुरि तन मन धन बचनादिक अर इस तनमन धन बचनादिक का शुभाशुभ व्यवहार बहुरि ताकी प्रतिच्छाया प्रति बिंब स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वच्छ स्वभाव दर्पणमै तन्मयिवत् दीखतहै सो अज्ञान वस्तु है सो अज्ञान मयि स्वभावहीसे अज्ञान स्वभावमै जैसाहै तैसाहै पूर्वोक्त स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वच्छ स्वभाव दर्पणको साक्षात् स्वानुभवकी प्राप्तकी प्राप्ति सतगुरुका उपदेशबिना तथा काल लब्धि पाचक हुयेबिना स्व

स्वरूप सम्यक् ज्ञानको लाभ नही होय ऋणो जैसे सूर्यमे प्रकाश तन्मयिहे तैसे जिस वस्तुमे ज्ञानगुण तन्मयिहे उसी वस्तुकूं मुनी ऋषी आचार्य गणधरादि कहेहे सोजीव कहतेहे सोनिश्चय दृष्टिमे जीवराशी जीवमयि हे ऋणो निश्चय दृष्टिमे जीवराशीके परस्पर जातिभेद नही स्वभावभेद नही लक्ष लक्षणको भेद· नही नामभेद नही स्वरूपभेद नही अर्थात् गुण गुणी अभेद वास्ते जीव राशिके परस्पर गुण गुणी भेद नाही यदिस्यात् पर अपेक्षा भेद हेसो परमयीही हे· जैसे जलकी बिंदूकूं कहतेहे के येह मोतीजेसी हे परंतु मोतीहेसो मोतीही हे· जल बिंदुहेसो जलबिंदुहीहे तेसेही अपेक्षा समजणा येह अनादि सिद्धांत वार्ता वचनहेसो शब्दसे तन्मयिवत् हे· अब हे मत वाले हो तथा हे जैन मत वालेहो हे वैष्णु मतवालेहो हे शिवमत वालेहो हे बौद्ध मत वाले आदि षट् मत वालेहो जन्मांध षट् हस्तीको जथावत् स्वस्वरूप जान करिके परस्पर विवाद विरोध करते करतेही मरगये तैसे हे षट् मतवालेहो षट् जन्मांधवत् परस्पर बिन समजे विवाद वैर विरोध मतिकरो शास्त्र दृष्ट्या गुरुर्वाक्यं तृतीयं

चात्मनिश्चयम् अर्थात् शास्त्रमें लिखी होय सोकी सोही गुरुमुखसें वाणी-
खरनी होय बहुरि सोही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव-
में अचल प्रमाणमें आवे उसीकूं हे मतवाले मित्री हो समजो ॥ ॥दोहा॥
समजो समजो समजमें समजो निश्चय सार ॥ धर्मदास क्षुल्लक कहै नब पावो
भवपार॥२॥ ॥ इतिचित्रहार वचनिका सम्पूर्ण॥ ॥ छ॥ ॥ छ

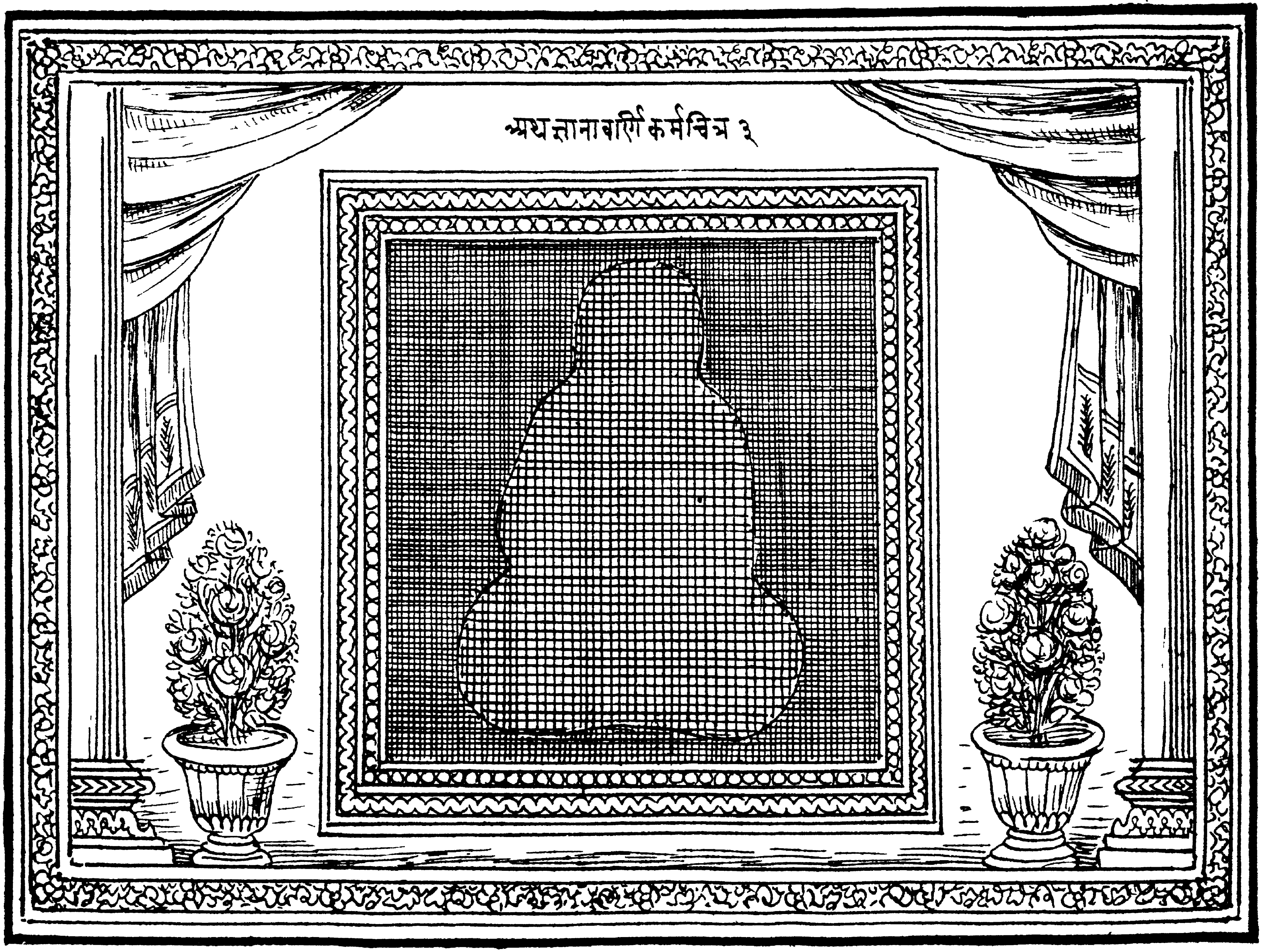

पूर्वदिशा
अभोक्ता
अनेक
शून्य
अजीव
अकर्ता
निराकार
स्वस्वरूपस्वानुभवग
म्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव
सूर्य वस्तु स्वभावमे जैसाहै तै
सा है स्वभावमे तर्कको अभाव मू
लहीसे है· इस सूर्यका प्रका·
स सर्व चित्रहस्तांगुलीके
उपरहे·

अथ स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्य वस्तु है तासै त-
न्मयि होय करिकै ताका स्वानुभव ऐसै लेएगा एक नयकै तो दुष्ट कहिये द्वेषी है
बहुरि दूसरी नयकै दुष्ट नाहीं है ऐसै येह चैतन्य विषै दोहू नयकै दोय पक्षपात
है १ एकनयकै कर्ता है दूसरीनयकै कर्ता नाहीं है ऐसै येह चैतन्य विषै दोहू
नयकै दोय पक्षपातहै १ एक नयकै भोक्ता है दूसरी नयकै भोक्ता नाहीं है ऐसै
येह चैतन्य विषै दोहू नयकै दोय पक्षपातहै १ एकनयकै जीवहै दूसरीनयकै जी
व नाहीं है ऐसै येह चैतन्यविषै दोहूनयकै दोय पक्षपातहै १ एकनयकै सूक्ष्म
है दूसरी नयकै सूक्ष्म नाहीं है ऐसै येह चैतन्याविषै दोहूनयकै दोय पक्षपात है
१ एक नयकै हेतु है दूसरी नयकै हेतु नाहीं है ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू नयकै
दोय पक्षपातहै १ एक नयकै कार्यहै दूसरी नयकै कार्य नाहीं है ऐसै येह चैत-
न्यविषै दोहू नयकै दोय पक्षपातहै १ एक नयकै भावहै दूसरी नयकै अभाव
है ऐसै येह चैतन्य विषै दोहूनयकै दोय पक्षपातहै १ एक नयकै येकहै दूसरी
नयकै अनेकहै ऐसै येह चैतन्य विषै दोहू नयकै दोय पक्षपातहै १ एक नयकै

सांत कहिये अंत सहित है दूसरी नयके अंत नाही है ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपात है १ एक नयके नित्य है दूसरी नयके अनित्य है ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपात है १ एकनयके वाच्य कहिये वचन करि कहनेमै आवैहै दूसरी नयके वचन गोचर नाहीहै ऐसै येह चैतन्य विषै दोहू नयके दोय पक्षपात है १ एकनयके नानारूप है दूसरी नयके नानारूप नाही है ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपात है १ एक नयके चेत कहिये जानने जोग्य है दूसरी नयके चिंतवने योग्य नहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपात है १ एक नयके दृश्य कहिये देखने योग्य है दूसरी नयके देखनेमे नाही आवैहै ऐसै येह चैतन्य विषै दोहू नयके दोय पक्षपात है १ एक नयके वेद्य क कहिये वेदने योग्य है दूसरी नयके वेदनेमे नही आवै है ऐसै येह चैतन्य विषै दोय नयके दोहू पक्षपात है १ एक नयके भाव कहिये वर्तमान प्रत्यक्ष है दूसरी नयके नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोय नयके दोहू पक्षपात है १ ऐसै चैतन्यविषै येह सर्व पक्षपात है बहुरि तत्ववेदी हीहै सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानम

यिस्वभाव सूर्य वस्तुकुं यथार्थ स्वानुभव कर्नेवालाहै ताके चिन्मात्र भावहै सो चिन्मा
त्रहीहै पक्षपातसें सूर्यप्रकाशवत् येक तन्मयि नहै नहोवैगा नहुयेथे अर्थात् जैसे सू
र्यसे अंधकारभिन्नहै तैसे स्वस्वरूप स्वानुभवगम्यसम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यहै सो
विधि निषेध अस्तिनास्ति राग द्वेष वैर विरोध पक्षपात द्वैता द्वैतसें वा संकल्प विकल्प सेंवा
लोकालोक आकार निराकार शून्या शून्य वा तन मन धन वचनादिकसें सूर्य प्रकाशवत् ये
कतन्मयि नाहीं अर्थात् सर्वथा प्रकार भिन्नहै १ जैसें सूर्यका प्रकाशमें येक लघु हैतो दूस
रो स्थूलहै येक मूर्खहै तो दूसरो पंडितहै येकभोगीहै तो दूसरो जोगीहै येक लेनाहै तो दूस
रो देनाहै येक मरताहै तो दूसरो जनमताहै येक भलोहै तो दूसरो बुरो है येक मौनीहै तो दू
सरो वक्ताहै येक अंधाहै तो दूसरो देखताहै येक पापीहै तो दूसरो पुन्यवानहै येक उत्तमहै
तो दूसरो नीचहै येककर्ताहै तो दूसरो अकर्ताहै येक चलताहै तो दूसरो अचलहै ये
क क्रोधीहै तो दूसरो क्षमावानहै येक धर्मीहै तो दूसरो अधर्मीहै कोई किसीसें न-
गीचहै तो कोई किसीसें भिन्नहै कोईएक बंध्याहै तो दूसरो मुक्तहै खूलोहै कोईउ
लटोहै तो दूसरो कोई सूलटोहै इत्यादिक जैसें येह सूर्यका प्रकाशमें सर्व है तैसें हीस्व

स्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यमै पूर्वोक्त पक्षपातका विवाद परस्पर है अर्थात् पूर्वोक्त पक्षपात हैसो पक्षपातसे अग्नि उष्णतावत् येक तन्मयि है बहुरि जैसै सूर्यसे अंधकार भिन्न है तैसै पूर्वोक्त पक्षपात हैसो स्वसम्यक् ज्ञानमयि सूर्यसे भिन्न है प्रथम गुरुपदेसात् सर्व चित्रहस्तांगुली चक्र के बीचमै है सो अचल बणिकरिके बादपश्चात् परस्पर चित्रहस्तांगुली सूचहै कहैहै मानैहै सो समजणा समजणेके द्वारा अपणा आपमै आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानसे संभवै सोतो स्वसम्यक् ज्ञानानुभवसे तन्मयि शेष नसंभवै सो अतन्मयि स्वस्वभावमै संभवै सोअपणी है स्वस्वभावमै नसंभवै सोअपणी कदाचित् कोई प्रकार बी नहै नहोवैगी नहुईथी अब अवगाढताके अर्थ चेनकरो पीतांबर दासजी आदि जेता मुमुक्षु मेरा प्यारा मेरा बचनोपदेस द्वारा स्वस्वानुभव गम्य संम्यक् ज्ञानानुभव प्रामकी प्राप्ती लेणेजोग लेचुके होतो इस सम्यक्ज्ञान दीपका पुस्तगकूं आदिसे अंत पर्यंत दोय महिनामे येक बेर पढलिया करो यावत देहादिक भाष तावत्काल पर्यंत येह मेरा लिषणा सद्भूत व्यवहार गर्भित समजणा १

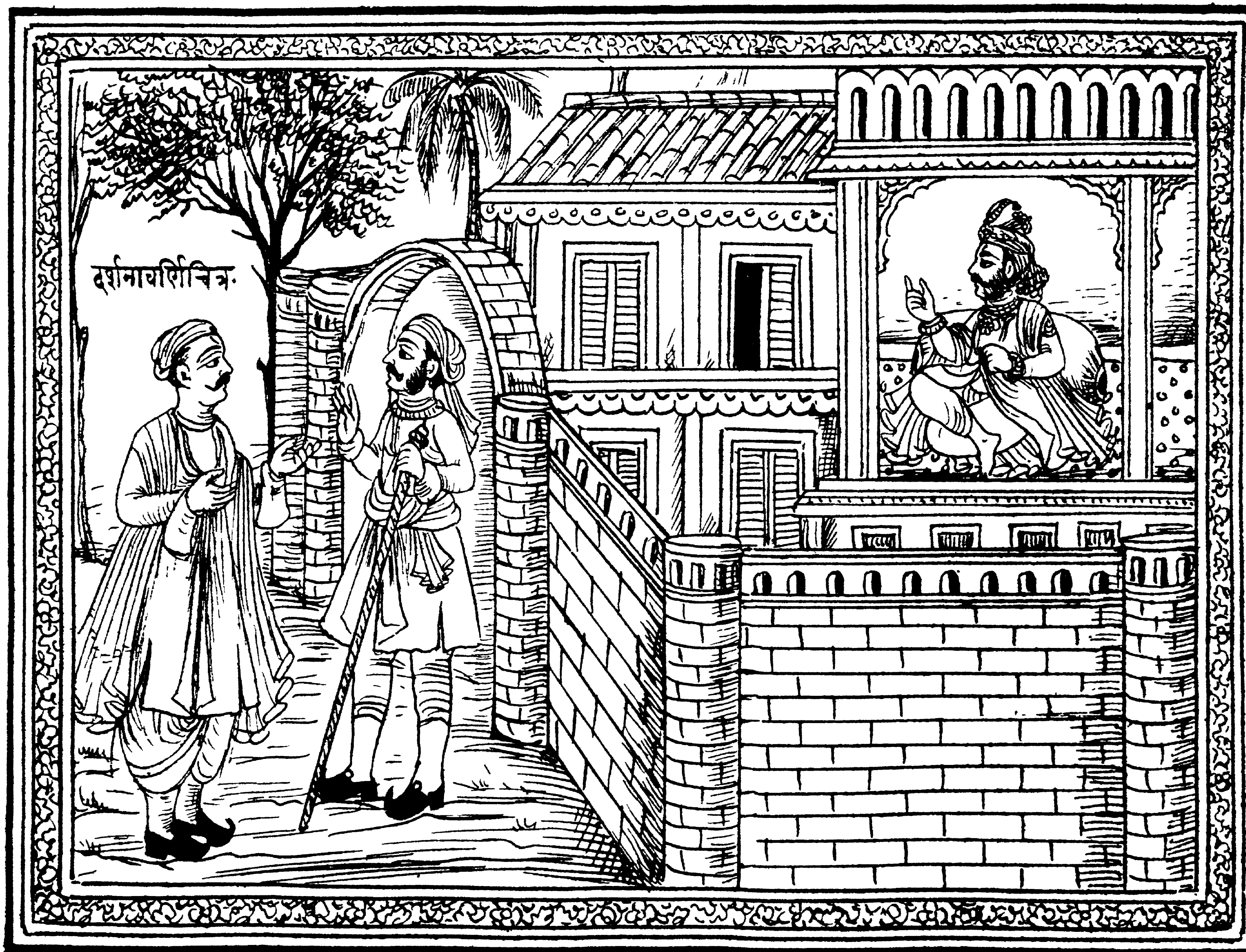

अथ ज्ञानावर्णी कर्मचित्र २

१	मति॰	१	ज्ञान
२	श्रुति	२	ज्ञान॰
३	अवधि॰	३	ज्ञान॰
४	मनपर्यय॰	४	ज्ञान॰
५	केवल	५	ज्ञान॰
६	कुमति	६	ज्ञान॰
७	कुश्रुति	७	ज्ञान
८	कुअवधि	८	ज्ञान॰

अथ ज्ञानावर्णि कर्म विवर्णमाह ॥ ॥दोहा॥ ॥ज्ञानावर्णि घातके हुवोज्ञान कोज्ञान ॥ धर्मदासक्षुल्लक कहै जिनआगम परमान ॥१॥ अथ बचनिका ॥जैसे देवमूर्तिके आडो मुलमल को वस्त्र को पटल होय तब दूसराकुं देवमूर्ति स्पष्ट दीखे नाही तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानके येकपटवत् कर्महै सो आडो आजावे तब निरंतर दृष्टिरहितकूं अंतरज्ञान दीखे नाही अथवा जैसे सूर्य के आडो बादल आजावे तब दूजाकूं सूर्य स्पष्ट दीखे नाही तद्वतही केवलज्ञानमयि सूर्यके पटलवत कर्म आजावे तब ज्ञानरहितकूं दीखता नाही जैसे सूर्यके आडा पवन अनेक॰ बादल आज्यावे तोबी सूर्यहैसो सूर्यही है यदि बादल रहित सूर्य होवे तोबी सूर्यहै सो सूर्यके आडा बादल आजावे तब सूर्यकुं सूर्यही नमानताहै नसमजताहै नकहताहै सोबी मिथ्याती बहुरि सूर्यके आडा बादल आज्यावे तब कोई बादलहीकूं सूर्य समजताहै मानताहै कहताहै सोबी मिथ्याती देवमूर्तिके आडो पट

अर सूर्यके आडा बादलु येह दोय दृष्टांतके द्वारा होकरि समजणा बहुरि स्वस्व
रूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावके वस्तुके पटवत् येक कर्महै ज्ञान
रहितहै सो आडो आज्यावै तोबी सम्यक्ज्ञान स्वभावमयि वस्तुहै सोकी सोही
हैसोहै बहुरि जड अज्ञानमयि पटवत् कर्महै जिससै रहित होय तोवी वो स्वस्व
रूपी स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु जैसाकी तैसी स्वभावमै है
अर्थात् जैसै सूर्यके अर अमावास्याकी मध्य रात्रीके परस्पर अत्यंत भेद है तैसैही
स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावके अर ज्ञानावर्णि कर्मके परस्प
र अत्यंत भेदहै क्यूंके कर्म अज्ञान है वो ज्ञानहै कर्म अचेतन वा चेतन कर्म अजी
वहै वो जीवहै ज्ञान हैसो कर्मकूं जाणताहै कर्म हैसो ज्ञानकूं नहीं जाणताहै ज्ञा
न अरु कर्म येह वस्तु दोयहै अर दोहूका लक्ष लक्षण येक नहीं जैसे सूर्य प्रकासये
कहै तैसै ज्ञान अज्ञान न एक है न होवैगा न येक हुये थे ज्ञान अज्ञानका मेलहै तो
ऐसाहै के जैसा फूल सुगंधका तिल तेलका दुग्ध घृतकासा मेल है बहुरि ज्ञा
न अज्ञानका अंतर भेदहै तो ऐसाहैके जैसा सूर्यका अर अंधकारका अंतर भेद

है जैसा येह अनादि वार्ता है गुरुविना इसका सारको लाभ नही होवे जैसे सूर्यमे प्रकाशगुण सूर्य स्वभावहीसे है जैसे जिस वस्तुमे केवलज्ञानादि ज्ञानसे तन्मयि गुणहै सो केवलज्ञानहै अर्थात् जिसमे केवलज्ञानादि गुण नाहीं सो अज्ञान वस्तुहै अब जिसमे ज्ञानगुणहै ऐसो केवल ज्ञानहै सो पर अपेक्षा अष्टप्रकारहै जैसे सूर्य प्रकाश एक तन्मयिहै जैसे केवल ज्ञान वस्तु अपणा गुणस्वभाव लक्षणकुं त्याग करिके जड अज्ञानमयि वस्तुसे नयेक कबि कदाचित् तन्मयिहुये नहोवेगा न होताहै अब हे सज्जन अष्टप्रकार ज्ञानावर्णि कर्मको बिचार करे ज्ञानके अर कर्मके तन्मयिनाहै के नाही उसका बिचारकरि ॥ ॥ अथदोहा ॥ ॥ प्रकाससूरजएकहै जडचेतन नहिएक ॥ धर्मदासक्षुल्लककहै मनमेधारविवेक ॥ १ ॥ ॥ इतिश्रीज्ञानावर्णिकर्मचित्र यंत्र सहितसमाप्तः ॥ ॥ श्री ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥


दर्शनायर्णिचित्रः

अथदर्शनयंत्र	
चक्षु	दर्शन॰
अचक्षु	दर्शन॰
अवधि	दर्शन॰
केवल	दर्शन॰

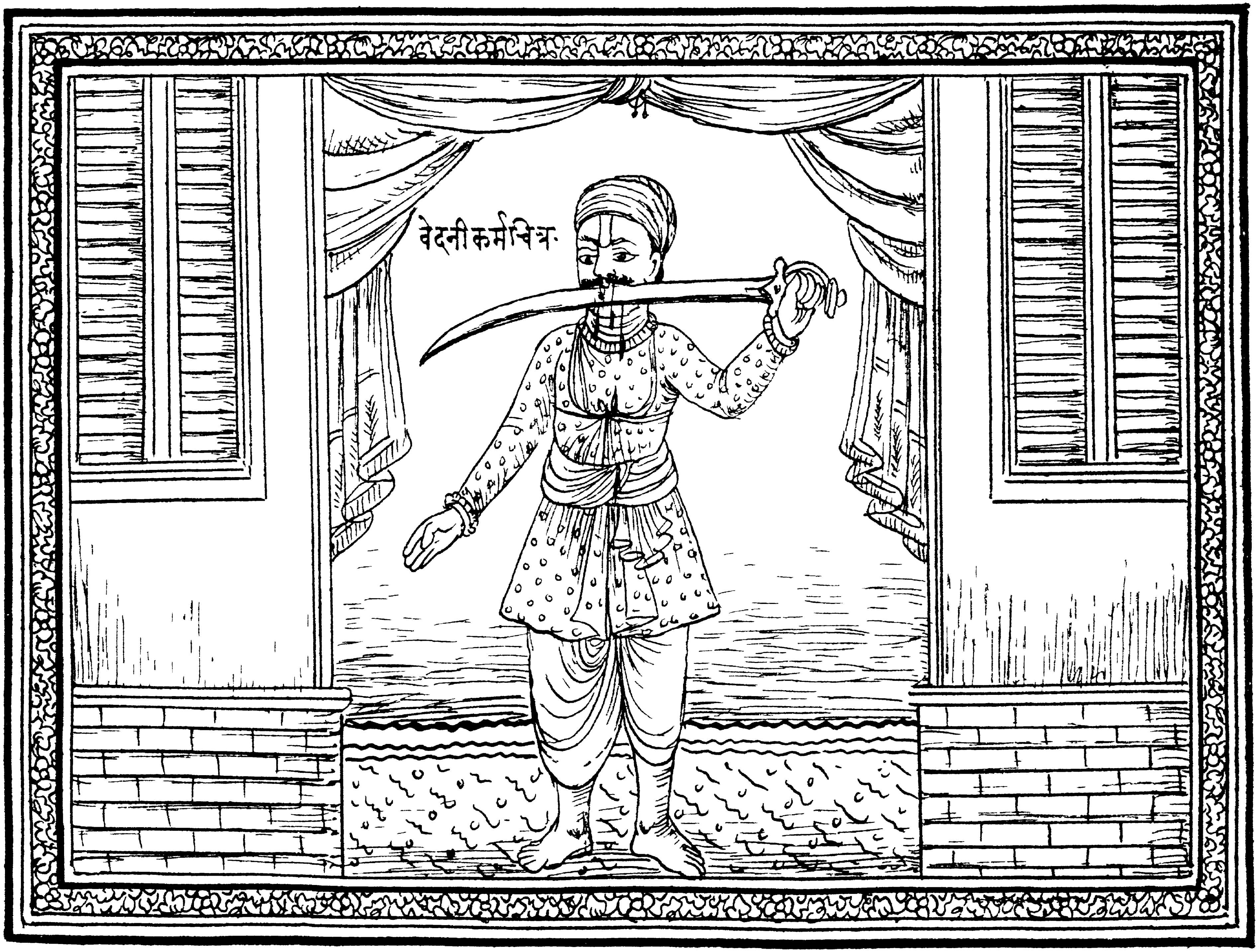
॥ अथदर्शनावर्णि कर्म प्रारंभः ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ ज्ञानभानुजिनराज सर्वजगत केऊपरै ॥ धर्मदास कहैसार सोहीसुखको काजहै ॥ १ ॥ ॥ अथवचनिका ॥ ॥ जैसे गढमे जाकरिके देखणेकी सक्ति तो एक पुरुषमेहै परंतु द्वारपाल भीतरनही जाणे देताहै तैसेही जैसे सूर्यमे प्रकासहै तैसे जीवमे देखणे जाणणेका गुणस्वभावसैंहीहै परंतु दर्शणावर्णि जातिको द्वारपालवत् येक कर्महै सो देखणे नही देताहै इहां ऐसा अनुभव लेणाके द्वारपाल उनकूं देखणेके अर्थ नही जाणे देताहै अर कहताहैके गढकेभीतर क्या देखणेकुं जाताहै ॥ ॥ उत्तर ॥ ॥ जिसमे देखणे जाणनेका गुणहै उसीकूं देखणे कूंभीतर जाताहूं द्वारपाल रोकताहै अर कहताहैके मतिजावो जैसा तेरेमे देखणे जाणनेका गुणहै तैसाही उसमैहै सूर्य सूर्यकूं देखणेका उद्योग इच्छाकरताहै सो वृथाहै जैसे एक अग्नि भीतर राखमे दबीहै अर दूसरी अग्नि व्यक्तहै तैसेही तेरे अर तूं जिसकूं भीतर देखणेकूं जानाहै उसके अंतर समजणा रा

रवकी अपेक्षावत् भेद समजणा स्वस्वरूपमे अभेद जैसो भीतर गढमेंहै तैसो ही तूंहै॥ ॥प्रश्न॥ ॥जैसें जैसो भीतर गढमेंहे तैसोही मे केसोहूं॥ ॥ अब द्वारपाल दृष्टांत द्वारा उत्तर देताहे॥ ॥रूणि तूं इस द्वारभवनमे तूं तेरास्व मुरवात् उंचा स्वरसें अलाप करिके तूंही तब द्वारपालके कहे प्रमाण ऐसेंही ऊं चास्वरसें अवाज करिके तूंही तब प्रतिअवाज वैसीही आई तब वो निश्चय समज लहीके जिसमे देरवणेका गुण भीतरमें हे तैसाही देरवणेकागुण मेरेमें है अबमे किसकूं देरवणेके अर्थ भीतर गढमे जाऊं अर्थात् मेरेमे देरवणे जाण नेकागुण स्वभावहीसेंहे अबमें किसकुं देखुं अर किसकूं नदेखूं॥ ॥दोहा॥ ॥दर्शणावर्णी कर्मको प्रगटादिरवायो भेद॥ तोबीगुरुबिननामिलें बहु तकरोतुमरवेद॥१॥ ॥अथबचनिका॥ ॥जैसेंसूर्यमे प्रकास गुण हे तैसे जिस वस्तुमे देरवणेका गुणहे सोही वस्तु दर्शणहे उस दर्शणका पर अपे क्षा ४ च्यार भेद हे तोबी सम्यक् दर्शणतो स्वभावकुं उल्लंघ करिके चक्षो चक्षु हो तानाही जैसें जन्मांध स्वपर शरीरकूं नही देरवनहे नही जाणनहे तैसेंही अ-

संज्ञा २९

ज्ञान वस्तु है सो स्वपरकूं नही जाणत है नहीं देखत है बहुरि जैसैं सडकके र स्ताके येक तरफ येक द्वारको मकान स्थान है ताके भीतर येकस्थान अर्थात् म कानके भीतर मकान तहां अंधारामै येक पुरुष बैठे हुवो उस मकानके द्वारा हो करिके बाहिर रस्तामै आते है जाते है ताकूं बी जाणत है अर स्व आपकूं बी-जाणत है तैसैंही दर्शण है सो स्वपरकूं देखत है जैसै सूर्जसै प्रकाश भिन्न नही तैसै दर्शनसै देखणा जाणना कदापि भिन्न नही १ सर्वकूं सहज स्वभावही सै देखता है सो दर्शण है १ इति दर्शनावर्णी कर्मचित्रसमाप्तः॥ ॥

दीप· द·व·



वेदनीकर्मचित्र.

अथवेदनीकर्मप्रारंभः॥ दोहा ॥विषयसुखसोदुःखहै निश्चयनयप्रमाण॥ धर्मदा सक्षुल्लककहै समजदेखमतिमान॥१॥ अथवचनिका ॥सहत लपेटी षड्गधाराकूं पुरुष जिह्वासे चाटतहै सो कुछतो स्वादमिष्ट भाषहोतहै विशेष जिह्वाखंडन-दुषभाष होनाहै तैसैही वेदनीकर्म दोप्रकार साता असाताहै इहां स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयी स्वभाव वस्तुको अनुभव ऐसै लेणा जैसै सूर्यका प्रकाशमे वा आकाशमे कोहू सुखी कोहू दुःखी है ताका सुख वा दुःख आकाशसे वा सूर्य अर सूर्यका प्रकाशसे येक तन्मयि हो करिके लागते नाही तैसैही संसार का सुख दुःख साता असाता कर्म उस स्वस्वरूपी स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञान सूर्यकूं पोहोचता नाही ज्ञानमयि सूर्यकूं लागते नाही अर्थात् सम्यक्ज्ञानमयि सूर्यके अर येह साता असाता वेदनी कर्मके परस्पर सूर्य अंधकार कासा अंतरभेद परस्परहीके स्वभावहीसे भेद है दोहूहीके सूर्य प्रकाशवत् येक तन्मयिताहै न होवैगी नहुईथी स्यात् जैसै दर्पणमे जलाग्निकी प्रतिच्छाया भाष होतीहै तैसैही स्यात् केवलज्ञान मयि दर्पणमे येह साता असाता वेदनीकर्मकी भाव बा- ३०

सना भाष होनाहै तोबी साता असाता वेदनी कर्मसै वो केवल ज्ञानमयि दर्पण तन्मयि नहुवो नहोवैगो न है स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव को अभाव नसमजणा न मानणा नकहणा ॥ ॥सवैय्या ३१ सा॥ ॥जैसैं कोहू चंडाली जुगल पुत्र जणे येक दीयो ब्राह्मणकूं येक राख लीयोहै ब्राह्मणके गयो सोतो मदिरा मांस त्यागकीया॥ ॥वचनिका॥ ॥ताकौनोउत्तम ब्राह्म णपणाको अभिमान आयो बहुरि दूसरो चांडालनीके घरहीमै रह्यो ताकूं मदि रा मांसादिकके ग्रहण निमित्तसें हीणता पणासैं वो आपकूं नीच मानतो हुवो इ हां बिचार करीकै देखियेतो वह दोहू ही उत्तम अर हीन येक चांडालनीके पेटमे से उत्पन्न हुये तैसैही येक कर्म खेतमैसे साता असाता वेदनी कर्मका दोय पुत्र समजणा निश्चय दृष्टीमे देखो सुनार सुवर्णका आभूषण करै तोबी सुनार है सो सुनारही है बहुरि स्यात् वोही सुनार ताम्र लोहका आभूषण बनावे तोवी जे साको तैसो सुनार है सो सुनारही है बहुरि जैसें सुभाशुभ आभूषणादिक क र्म कर्ताहै सो शुभाशुभ आभूषणादिक कर्मसै तन्मयि होकरिके नहीं कर्ता है

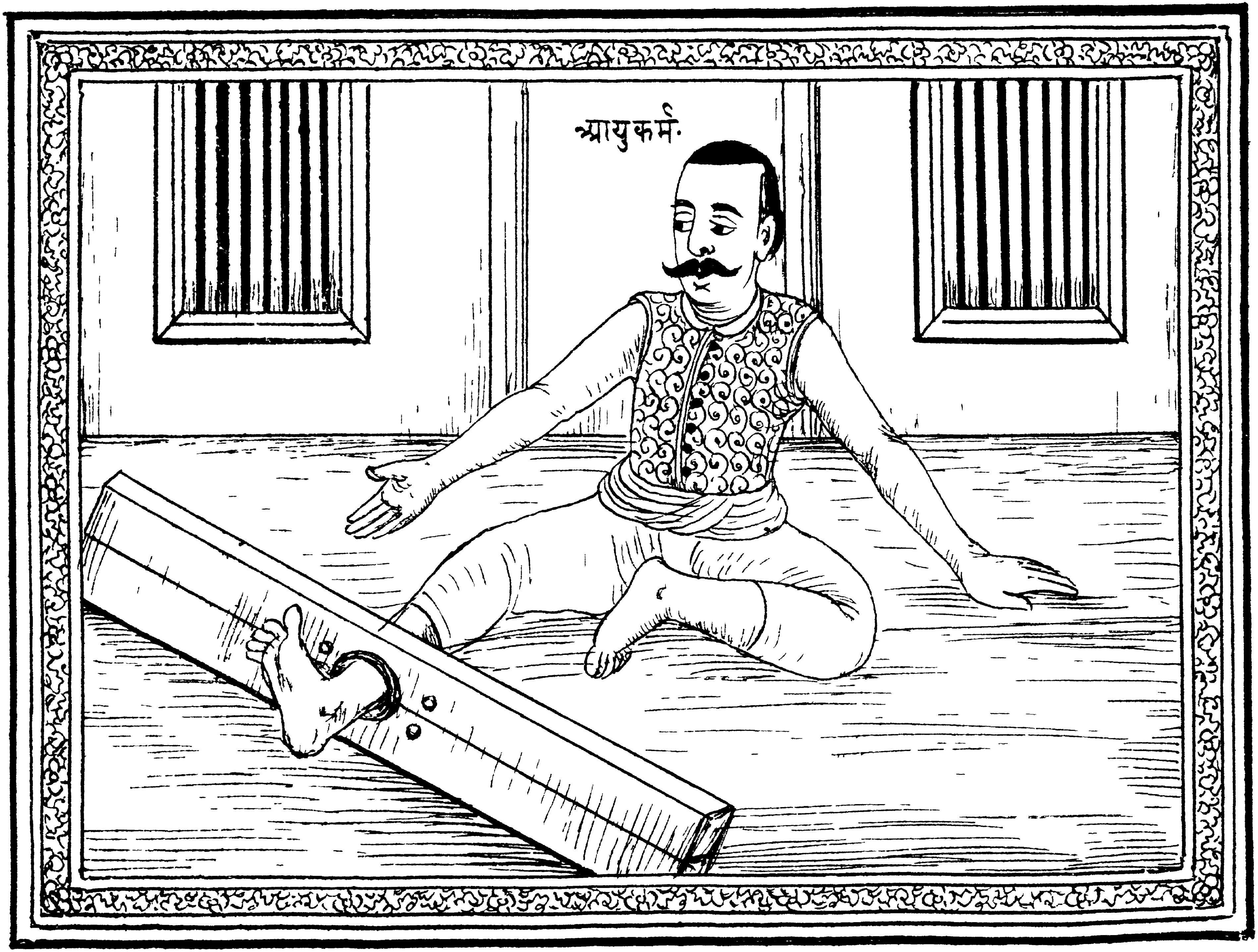
तैसेही सम्यक् द्रष्टी शुभाशुभ कर्म कर्ताहै परंतु शुभाशुभ कर्मसें तन्मायि हो
य करिके नही कर्ताहै वास्ते गुरुपदेशात् सम्यक् दृष्टी होएणा जोग्यहै ॥ ॥ दोहा
॥ ॥ एकवेदनीकर्मका भेददोयपरकार ॥ धर्मदासक्षुल्लक कहै सातासात-
विचार ॥ १ ॥ ॥ बचनिका ॥ ॥ हे जीव येह साता असाता वेदनी कर्म तेरा
है तबतो तूंही अधिष्ठाताहै तथा येह साता असाता वेदनीकर्म तेरा नाही तो-
फेर क्या फिकरहै तूंन किसीका कोईन तुमारा तेरा तूंहीहै निराधारा ॥ ॥ इति
श्रीवेदनीकर्म चित्रसहित समाप्ता: ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥


मोहनीकर्मचित्र.

अथमोहनीकर्मप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥परस्वभावपररूपकूं मानौअपनो-
थाप॥येविकल्पसव छोडकै भयेसिद्धगुणआप॥१॥ ॥अथबचनिका॥ ॥
जैसेमदिराकेपीएणेवालो आप परकूं जाणतो नाही मदिरावसात् यद्वातद्वा
बचन बोलताहै तैसैही मोहनीकर्मबसात्जीव आपणा आपमे आपमयि स्व
स्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक ज्ञानमयि स्वभावकूं नजाणतहै अर परकूं ऐ·
सा मानैहै येह तन मन धन बचन बहुरि तनमनधन बचनादिकका जेता शु
भाशुभ विवहार क्रिया कर्म फलादिकहै सोही मैहूं अर्थात् येही मोहहै स्त
णो निश्चय मोहका बचनकूं कहताहूं येह तन मन धन बचनादिकहै सोही·
मैहूं· येकतो येह बिकल्प बहुरि दूसरी येह विकल्पहै के येह तन मन धन बच
नादिकहै सो मै नाही अर्थात् येहै सोही मैहूं मैहूं सोही येहहै ये है सो मैना
हीं येह तीनूही विकल्पहै सोही निश्चय अज्ञानमयी मोहसैं तन्मई है सोही
मोहहै इस दोहू विकल्पकूं अर स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक ज्ञान मयि·
स्वभाव वस्तुकूं येक तन्मयि अग्निऊष्णतावत् सूर्य प्रकाशवत् मानताहै जा

णताहै कहताहै सो मोही मिथ्यादृष्टीहै इससे भिन्न सो सम्यक् दृष्टीहै बहुरि मे तूं येह वह येह ४ च्यार अर इन चारका जेता खेल बिलासहै सो सर्व द्रव्यक मे भावकर्म नोकर्मसे तन्मयि येकमयि समजणा हाय हाय मोहनी कर्म बसात् जिसकूं भलामानताहै उसीहीकूं बुरा मानताहै जिसकूं इष्ट मानताहै उसीकूं अनिष्ट मानता है मोही जीवकूं येह निश्चय नाही के जिसमे ज्ञानगुणहै सोही मेहूं यदि नि श्चयहै तो फकत कहणेकाहै स्वस्वरूप स्वानुभव नाही क्यूंके तन मन धन बचन आदिक अजीव वस्तुके अर ज्ञान गुणमई जीवके सूर्य अंधकार का. सा अंतरभेद परस्पर स्वभावहीसै है येह भेद विज्ञान जिसके अंतःकरणमे गुरुपदेशात् आकाशवत् अचल निष्ठैहै सो अडिल्लुकहै विचक्षण पुरुष सदा मै एकहूं अपणे रसमे भस्यो अपणी टेकहूं मोह करम मम नाही नाही भ्रम कू पहै शुद्ध चेतना सिंधु हमारो रूपहै वचनिका जैसे सूर्यमे प्रकाश गुणहै तै से हे सज्जन हे प्रेमी तेरेमै ज्ञानगुणहै तूं निश्चय समज तूं केवल ज्ञानहै अर येह मोहादिक अज्ञानहै भावार्थ ज्ञान अज्ञानकूं सूर्य प्रकाशवत् एक ही मानताहै

समजनाहै कहताहै उसी मिथ्यादृष्टी कूं ब्रह्मज्ञानको उपदेस देणा वृथाहै
॥ प्रश्न ॥ ॥ मोह किसकूं कहतेहै ॥ ॥उत्तर॥ ॥ ज्ञानाज्ञान कूं सूर्यमका
शवत् येक तन्मई समजता मानता कहताहै इसीके नाम मोह है तथा नदी
के तट येक पुरुष वहताहुवा पाणीकूं येकाग्रह मन करिके देखत देखत येह
समजीके हमभी वहे जातहै इसीको नाम मोहहै तथा दश पुरुष परस्पर ग
णिना करिके नदीके पार उतरणेकी इच्छा करी येक पुरुष गणिना करिके अ·
पणा घरसे दश आयेथे नवही रहगये आपकूं दशमूं नसमजताहै न मान-
ताहै न कहताहै इसीकोनाम मोहहै अर्थात् पुद्गलादिककूं अर आप सम्यक्
ज्ञान मयीहै ताकूं येकही समजताहै सोही मोहहै· ॥ ॥ इतिश्री मोहनी
कर्म चित्र सहित समाप्तः ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥


आयुकर्म·

आयुकर्म यंत्रम्	
मनुष्य	आयु
देव	आयु
तिर्यंच	आयु
नारकी	आयु

अथ आयुकर्म प्रारंभः ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ खंडनमंडनआयुनाश भये सिद्ध परमातम पाश ॥ अचलायू सम अचल अभेद लीन भये निजरूप अखेद ॥ १ ॥ ॥ बचनिका ॥ ॥ जैसे कोई तस्कर बेडी खोडासे बंध्यो है तैसेही जीव आयुकर्म बसात् मनुष्यायू देवायु नरकायु तिर्यंचायू मे जहां तहां बंध जातो है आयू पूर्ण हुये बिना एकायूकूं छोड करिके दूसरी आयूमै नहीजाय अब अचलायूके अर्थ स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तूको स्वानुभव ऐसे लेणो जैसे घटके भीतर घटाकाश बंध्यो है॰ मठके भीतर मठाकाश बंध्यो है इत्यादि तैसेही देहरूपी घटमे आकाशवत् एकज्ञान गुण मई जीव बंध्यो है विचार करो जैसे घटके भीतर आकाश है सो महाकाशसें अलग नाही तैसेही देही रूपी घटके भीतर ज्ञान है सो केवल ज्ञानसे भिन्न नाही हे ज्ञान तू तेरेकूं केवल ज्ञानसे भिन्न मति समजो मति मानै क्यूंके केवल ज्ञानसे भिन्न वस्तू है सो तो अज्ञान वस्तू है हे सज्जन तूं ज्ञान वस्तु मूलहीसे स्वभावहीसे है फेर तेरेकुं तूं अज्ञान कैसे मानता है

हे ज्ञान व्यवहार नयात् तूं मनुष्यायु देवायु नरकायु तिर्यंचायुमे बंध्योहे निश्च
य नयात् हे केवलज्ञान स्वरूपी फणि पुद्गल मूर्ति आकार वस्तुहै तूं केवलज्ञा
न मयि निराकार अमूर्ति वस्तु स्वभावहीसैहे बडे आश्चर्यकी वार्ता हे मूर्ति आ
कार वस्तु हैसो अमूर्ति निराकार वस्तु ज्ञानमयिकुं कैसे बंध मे डालतहे असं
भवति वार्ता कैसें संभवे हेज्ञान भरममे मतिडूबे देखणे जाणवे कागुण तेरेसें
तन्मयिहे तूं बंधकूं अर बंध्याकूं अर बंधणे का द्रव्य क्षेत्र काल भव भाव आदिक
कूं सहजही जाणत देखतहे जैसे सूर्यका प्रकाश सर्व पृथ्वीके ऊपर सहजही
सैहे तैसें हे ज्ञान तूं बंध्या बंधकूं सहजही जाणतहे व्यवहार नय बसात् तूं बं
ध्योहे सो व्यवहार ऐसोहे वो घृतकुंभ वा उखली सडक चलतीहे रस्ता लूटते हे
अग्नि बलती हे येह पांच दृष्टांत द्वारा सर्व व्यवहारकुं समजो निश्चय व्यवहारसें
सर्वथा प्रकार भिन्नहे सोही परमातमा सिद्ध परमेष्ठी ज्ञानघनहे जैसे देखो सूर्य
के भीतर अंधकार नाही तैसैही सम्यक्ज्ञान स्वभावमे शुभाशुभ आयु नाही म
नुष्यायू देवायु तिर्यंचायू नरकायू येह ४ च्यार आयूहे ताकूं केवलज्ञान जाण

ताहै अचल अखडायू पंचमायूहै कुछ और समजो जैसे किसीके पांवमें लोहा
की बेडीसे बंध्योहै सोबी दुःखीहै बहुरि किसीके पांवमें स्ववर्णकी बेडीसे बंध्यो
है सोबी दुःखी तैसेंही दान पूजा व्रत शील जप तपादिक शुभभाव शुभक्रिया॰
शुभ कर्मादि शुभ बंधहै सोबी स्ववर्णकी बेडीवत् दुःखको कारणहै बहुरि पा॰
प अपराध काम कुशीलादिक अशुभ भाव अशुभक्रिया अशुभ कर्मादि अशु
भ बंधहै सोबी लोहाकी बेडीवत् दुःखको कारणहै इस शुभाशुभसें सर्वथा॰
प्रकार भिन्नहोणो निश्चय हीहै सो सतगुरुका उपदेशविना आत्मकी प्राप्ति हो
तीनाहीहै॥ ॥प्रश्न॥ ॥प्राप्तकी अप्राप्ति संभवहै॥ ॥उत्तर॥ ॥दधि
मैंसै धृतनिकसे पश्चात् दधिमें नही मिलताहै ऐसाही समजणा॥१॥ ॥
इतिश्री आयुकर्म विवर्णचित्रसहितसमाप्तः॥ ॥श्रीजिनायनमः॥ ॥


नामकर्मचित्र.

॥ अथ नामकर्मविवर्ण प्रारंभः॥ ॥ चौपाई॥ ॥ तुमरो नाम नही हे स्वामी नामकरम तुमसें अलगामी॥ शुद्ध व्यवहारमें नाम अनंता व्यक्तरूपश्री जिन अरिहंना॥ १॥ ॥ दोहा॥ ॥ जिनपद नही सरीरको जिनपद चेनन मांहि जिनवर्णन कुछ और हे येह जिनवर्णन नाहि॥ २॥ ॥ अथ बचनिका प्रारंभः॥ ॥ जैसे चित्रकार नानाप्रकारका आकार का नाम लिखता हे कर्ता हे सो जेता काला पीला लाल हरया धोला रंगका चित्र आकार दीखता हे सो पुद्गलका हे सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुको नाम क्या इसी वस्तूको नाम व्यवहार नयात् जीव नाम हे सो भी परसंगात् अनेक नाम हे जैसे माटीका घटकूं घृन संगात् व्यवहारी जन कहते हेके वो घृनकुंभ ल्यावो अथवा समुदाय वस्तुको नाम फोज हे तथा जेता कुछ बचनसे कहणेमें आवे हे सो सर्व नाम हे नाम देसमे एक ही नाम हे बहुरि इहां स्व स्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुको स्वानुभव ऐसे लेणा जैसे सूर्यमे प्रकाशादिक गुण सूर्य स्वभावही सें हे तेसें कोई वस्तु ऐसी हे जिसमें स्वपरकुं देखणा जाणना येह गुण स्वभावही सें हे विचार करो सर्व नाम अनामकूं दे

रवना जाएताहै ताको नाम क्याहै अथवा सर्व नाम अनामकुं कहताहै ताको नाम क्याहै बचन और मौन येहबी दोय नामहै अथवा एकही वस्तु अपणा स्वभावगुण मयि स्वभावमे जैसीहै तैसी अचल तिष्ठेहै उसीसे तन्मयि गुणवा प्रगट अनेक नाम तिष्ठेहैं जैसे सुवर्ण अपणा स्वभाव गुणादिक अपणे आपमे लिये हुये अचल तिष्ठेहै ताहीमे कडा मूंदडा असरफी आदि आभूषणादिक अनेक नाम सुवर्णमे तन्मयिहै नामहै सोबी अपेक्षासें है जैसे पिताकि अपेक्षा पुत्र नामहै तैसेही पुत्र अपेक्षा पितानामहै तथा तैसेही जीवकी अपेक्षा अजीव नामहै बहुरि अजीवकी अपेक्षा जीवनामहै ऐसेही ज्ञानकी अपक्षा अज्ञान है बहुरि अज्ञानकी अपेक्षा ज्ञान नामहै हा हा हा धन्य धन्य धन्य सर्व पक्षापक्ष रहित ज्ञानगुण संपन्न स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्‌ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु स्वभावहीसें जैसाकि तैसी जैसीहै तैसीहैं ताकूं अंतर दृष्टी वा सम्यक्‌ज्ञान दृष्टीसे देखिये तो ननामहै न अनामहै अर्थात् वस्तु अपणा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्‌ज्ञान स्वभावमे जैसीहै तैसीहै नाम कहो अथवा मतिकहो नाम और जन्ममरण येह पांचप्र

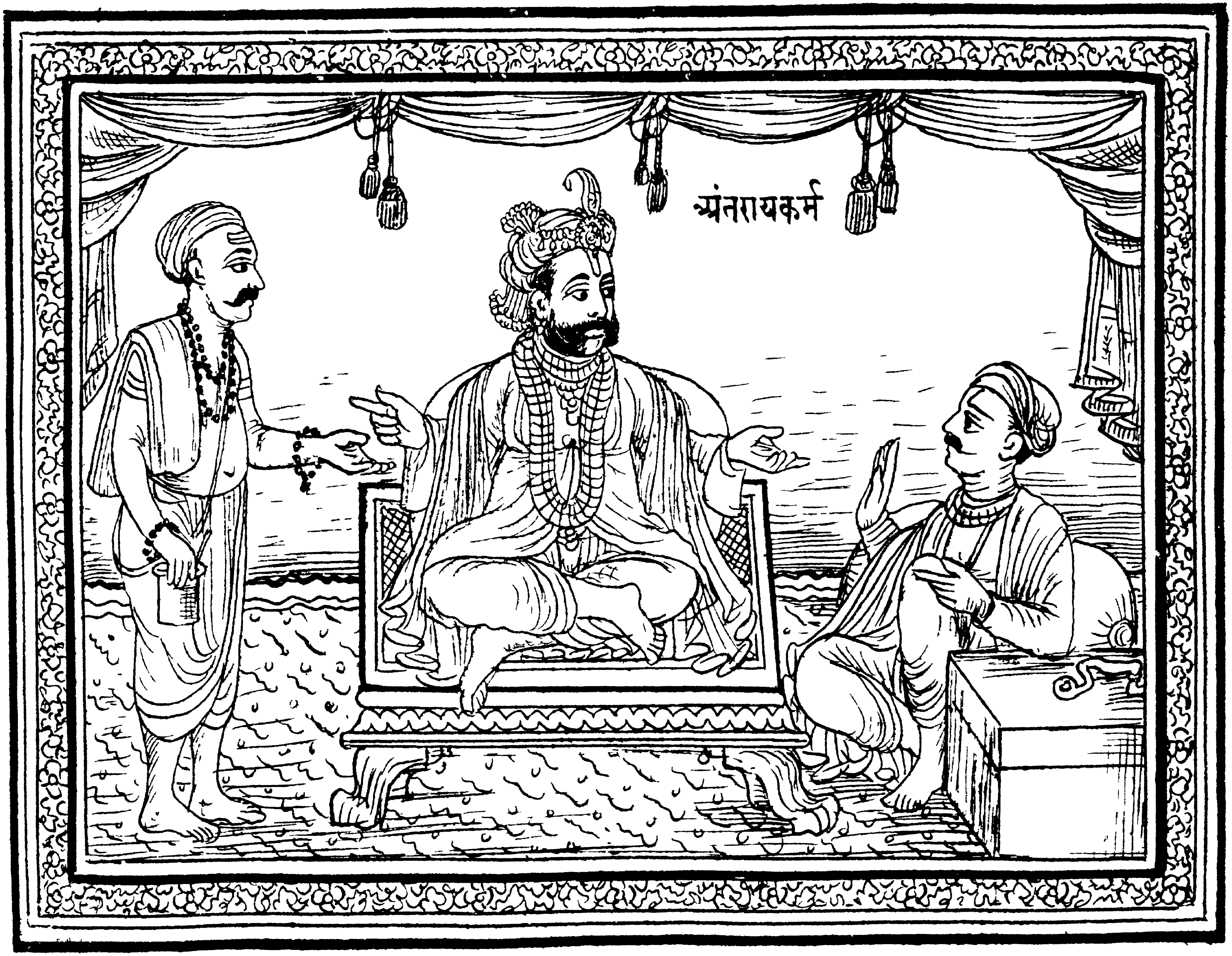
सं·ज्ञा· कारका शरीरहै ताकाहै· पदमनंदीपचीसी ग्रंथमें पद्मनंदीमुनी कहगये· दीप·
३७ ॥ ॥दोहा॥ ॥ नामकर्मकोभावना भावैसुरतिसंभाल॥ धर्मदासक्षु ना·क·
ल्लककहै मुक्तिहोयततकाल॥ १॥ अपणोंआपोदेखके होयआपकोआ
प॥ होनिचिंत तिष्ट्योरहै किसका करणाजाप॥ २॥ नामकर्म कर्तारको ना·
मनहीसुणसार॥ जोकदापियोनामहै तोकोकर्ता निर्धार॥ ३॥ ॥ इति
श्रीनामकर्मविवर्ण चित्रसहितसमाप्ता॥ ॥ छ॥ ॥ छ॥


गोत्रकर्म.

॥ अथगोत्रकर्मप्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गोत्रादिकसबकर्मकूं त्यागभयेजिनराज ॥ धर्मदासक्षुल्लककरै वंदनस्वरवकेकाज ॥ १ ॥ ॥ बचनिका ॥ ॥ जैसा कुंभार छोटामोटा माटीका बर्तन कर्ताहै तैसे स्वस्वरूप ज्ञान रहित कोई-जीवहै सो नीचगोत्र ऊंचगोत्र कर्मको कर्ताहै याहीतें नीचगोत्र ऊंचगोत्रहै इहां समजणा चाहिये माता पक्षकूं तो जाति कहतहै बहुरि पितापक्षकूं कुल कहतेहै जातिगोत्र येह दोयभेद कहणे मात्रहै अभेद वस्तुमे येह दोय भेद जलतरंगवत् तन्मयिहै जैसे आम्रवृक्षकै आम्रही लगताहै विचार करो आम्रकीजातिभी आम्रहीहै अर आम्रका कुलहै सोबी आम्रहीहै जैसे जलकी जाति मिश्री फिटकडी लूण नोसादर आदिहै वयूके इनकूं पाणीमे मिलावो तो येह मिलजातेहै अर्थात् मिलजावै सो निश्चयजाति तैसैही नीचगोत्र ऊंचगोत्र कोहीनीच ऊंच गोत्रहै इहां स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुको-स्वानुभव ऐसे लेणा जैसे कुंभार माटीका बर्तन छोटा मोटा विविधि प्रकारका बणावैहै कर्ताहै परंतु माटी चक्र दंड छोटा मोठा विविधि प्रकारका बर्तन भांडा

से तन्मयि होय नही कर्ताहै क्यूं के कुंभकार बिचार चिंतवन नही करै तो बी कुंभकारके अंतः करणमे अचल निश्चय येहहै के मै माटी नही अर माटीका छोटा मोटा बर्तनादिक कर्महै सो बी मै नाही अर दंड चक्रादिक कर्म है सोबी मै नाही अर येह मेरा सरीर हाड मांस चर्मादिक मयिहै सो बी मै नाही अर तन मन धन बचनादिकहैसो बी मै नाही इत्यादिक कुंभकार के अंतः करण मे अचलहै तो इहा निश्चय स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान स्वभावमे येही भाषभाव मालूम होताहै के जैसो माटीको कार्य घट जैसै माटी ताके बाहिर मांहि जल फेन तरंग बुदबुदा उपजताहै सो जलसै जुदे जुदे नाही ऐसेजो जाकोहै कार्य कारण रूप पछानो ताहि तैसैही जिस वस्तु को कर्म कारण कार्य कर्ता जिसका जेहिहै अर्थात् जैसे व्यवहार दृष्टीमे देखिये तो माटीका बर्तन कुंभकार कर्ताहै बहुरि निश्चय दृष्टीमे परमार्थ सत्यार्थ दृष्टी मै देखिये तो कुंभकारके अर माटीके बर्तनके अर माटीचक्र दंडादिकके एकमई परणो- नाही वास्ते माटीका बर्तन कर्मकी करणेवाली माटीहीहै तैसैही व्यवहारदृ

रानीचगोत्रऊंचगोत्र जीव करैहै निश्चय स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानदृष्टि द्वारा देखियेतो ज्ञानमयिजीव नीचगोत्र ऊंचगोत्र नकरैहै अर्थात् गोत्र कर्मको करणेवालो गोत्रकर्महीहै कर्मकी विधि निषेध कर्मको कर्मही कर्ताहै निश्चय सम्यक् ज्ञान दृष्टिमे देखणा ज्ञान गुणमई वस्तु अमूर्तिहै अर कर्म मूर्तिहै कृत्यमहै जैसे सूर्यका अर अंधाराका तत् स्वरूप मेल नाही तैसैही कर्मको अर केवलज्ञानको मेल नाही ॥ ॥ इतिश्री गोत्रकर्म वर्णन चित्रसहित समाप्त ॥ ॥ ॥ श्रीजिननाथोजयति॥ ॥ ॥


अंतरायकर्म

अथ अंतराय कर्म यंत्रम्	
दान	अंतराय
लाभ	अंतराय
भोग	अंतराय
उपभोग	अंतराय
वीर्य	अंतराय

॥ अथ अंतराय कर्म प्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ त्यागग्रह णसेभिन्नहै सदास्फुरवीभगवान् ॥ धर्मदास क्षुल्लुक कहे स्वानूभव परमान ॥ १ ॥ ॥ बचनिका ॥ ॥ जैसे राजा भंडारीकूं कहीके इसकूं एक सहस्त्र १००० रुपियादे परंतु भंडारी नहीदेताहै तैसेही भीतर अंतहकरणमे मनराय तो हुकुम कर्ताहै के सर्व माया ममता छोड देऊं परंतु भंडारीवत् अंतरायकर्म नही छोडणे देताहै इहा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव को स्वानुभव इस प्रमाणसे लेणा मैके द्वारा जैसे सूर्यसे अंधारा अलगहै तैसे मेरा स्वस्वरूप स्वानुभव सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावसे येह तन मन धन बचना-आदिक पाप पुन्य जगत संसार अलगहै तब तो इनकूं मै क्यात्यागूं अर क्याग्रहण करूं यदि जैसे सूर्यसे प्रकाश अलग नाही तदवत् मेरा स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावसे येह तन मन धन बचनादिक पाप पुन्य जगत् संसार अलग नाही तोवी क्यात्यागूं क्या ग्रहण करूं अथवा जैसे सूर्य सूर्यकू-

केसै ग्रहण करै तथा सूर्य अंधकारकूं केसा ग्रहण करै अर सूर्य अंधकार कूं
केसैं त्यागै तैसैंही मै मेरा केवल ज्ञानमयी स्वभावकूं केसैं त्यागूं अर ग्रहण केसैं क
रूं बहुरि मेरा केवल ज्ञान मयी स्वभावसैं सर्वथा प्रकार भिन्न है वर्जित हैं त्या
जहीहै उसकूं केसैं त्यागूं अर उसकूं ग्रहणबी केसैं करूं राजा भंडारीकूं क
हताहैके इसकूं १००० सहस्र रुपिया दे परंतु येह नही कहनाके मै राजा हूं
मेरेहीकूं उगकरिके उनकूं दे दे अर्थात् राजा परवस्तु कूं देणेका हुकुम कर्ताहै
परंतु अपणा गुणस्वभाव लक्षण देणेका हुकुम कर्ताहैनही तैसैंही स्वस्व
रूप स्वानुभवगम्य सम्यक्‌ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु अपणा वस्तुत्वकूं नै कि
सकूं देताहै अर नै किससै स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्‌ज्ञानमयी वस्तुत्व
स्वभावकुं लेताहै भावार्थ स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्‌ज्ञानमयि स्वभा
वमे पुद्गलादिक जड अज्ञान मयि वस्तुका व्यवहार लेणा देणा नसंभवे जै
सै सूर्यमे प्रकाशगुण सूर्य स्वभावहीसैहै तैसै जिस वस्तुमे देखणे जाणने
कागुण स्वभावहीसैहै सो वस्तु द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्मकूं केवल जाणैहीहै

द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्मकूं कर्ता नाहीं क्यूंके ज्ञानाज्ञानके परस्पर तम प्र॰
काशवत् तो अंतर भेद है बहुरि ज्ञानाज्ञानके परस्पर जल कमलवत् वा पुष्प
गंधवत् तुष तांदुलवत् मेल है विचारकरो येह द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्म है सो
स्वभावहीसे अज्ञान वस्तुका भेद है ताका कर्ता केवल ज्ञान स्वभावमे कोण है
बहुरि येह ज्ञानावर्णि आदि अष्टकर्म है ते सर्वही पुद्गल द्रव्यके परिणाम है ति॰
नकूं केवल ज्ञानमयि आत्मा नाही करै है जो जानहै सो जानही है निश्चयकरि ज्ञा
नावर्णिरूप परिणाम है सो जैसे गोरसमे व्यापक दही दूध मिष्ट खाटा परिणा॰
म है तैसे पुद्गल द्रव्यमे व्याप्त पणा करिके होते संते पुद्गल द्रव्यहीके परिणाम है
तिनकूं जैसे गोरसके निकट बैठा पुरुष तिस्के परिणामकूं देखे है जान है तैसेही
आत्मा ज्ञानमयि है सो तीनि पुद्गलके परिणामनिका ज्ञाता द्रष्टा है अष्ट कर्मादि॰
कका कर्ता नाही तो क्या है जैसे गोरसके निकट बैठा पुरुष तिस्कूं देखे है तिस दे
खन रूप अपने परिणामतें व्याप्त पणो रूप होता संता है तिसकूं व्याप्यकरि दे ४१
खेही है। तैसेही पुद्गलपरिणाम है निमित्त जाकूं ऐसा अपना ज्ञान ताकूं आ॰

पतैं व्याप्यपणा करि होना ताकूं व्याप्य करिजानैहीहै ऐसे ज्ञानी ज्ञानहीका कर्ताहै अर्थात् ज्ञानीहैसो अज्ञान मयि वस्तुसें तन्मायि होय करिकै कदाचित्कोई प्रकारबी द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्म आदि अज्ञान मयि कर्मको कर्ता नाहीं- किं बहुना बहुत क्या कहूं ज्ञान अज्ञान सूर्य प्रकाशवत् नै एकहुवो नैहै नैहोवैगो ॥ ॥ इति अंतरायकर्म विवर्ण समाप्तम् ॥ ॥ ॥

इतिअंतरायकर्मसमाप्तः

॥ अथ भ्रांतिखंडन दृष्टांत द्वादशम स्थल प्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्वस्वरूपसम भावमें नही भरमको अंस ॥ धर्मदास छकल्लुककहै स्रुणचेतनना निरवंस ॥ १ ॥ ॥ बचनिका ॥ ॥ दृष्टांत दृढताके अर्थ है स्वभाव सम्यक् ज्ञानदृष्टि रहितजीवहै सो तो आपकूं अर भरम भ्रांति संकल्प विकल्पकूं येकही तन्मयिवत् समजताहै मानताहै कहताहै बहुरि कोईजीव गुरुपदेस पायकरिके स्वभावसम्यक् ज्ञान दृष्टी हुये पश्चात् बिभ्रांति भरममें दुःखी होय करिके येह समजतहै मानतहै कहताहैके तन मन धन बचनसें बहुरि तन मन धन बचनका जेता शुभाशुभ भवी व्यवहार क्रिया कर्महै तासें अतत् स्वरूप भिन्न कोई परब्रम्ह परमात्मा ज्ञानमायि सदाकाल जागती ज्योति नहीहै ताका समाधानके अर्थ दृष्टांत जैसे कोइ गुरु शिष्यकूं कहीके हे शिष्य येह येक लवणको पिंड इस जलका भऱ्या तसलामें भगूनामें डालदे तब शिष्य गुरु आज्ञानुसार उस लवण पिंडकूं तिस जलपूरित तसलाभगूनामें डालदीयो येक तरफ येकांतमें रखदीयो पश्चात् दूजा दिवस फिर गुरु शिष्यकूं कहीके हे शिष्य गये दिवस तूं जलपूरित तसलाभगूनामें लवण पिंड डाल्याथा सोला

वो तब गुरु आज्ञा प्रमाण शिष्य शीघ्रता पूर्वक जाय करिके तिस जल पूरित तसला-
भ गृनामें हस्त स्पर्श द्वारा खोजणे देखणे लगो बहुत बेर पर्यंत तसलाभगृनामें ति
सजलकुं मथन कीयो तथापि लवणानुभव भाष नहीं हुवो अर्थात् लवण नहीं दी-
ख्यो तब शिष्य कहीके हे गुरुजी जलमें लवण नाहीं गुरु कहीके है शिष्य कहताहे
के नहीहे गुरु कहताहेके हे शिष्य तूं कहताहेके नहीहे वहांहीहे फेर शिष्य कहता
हेके नहीहे तब गुरु कहीके हे शिष्य तिस तसलामें जलहे तामेंसो तूं येक अंजुली-
प्रमाण जल पीवो तब शिष्य जल पीवणे लागो कुछ किंचित् पीयो पीते प्रमाण शिष्य
कूं लवणानुभवतत् समयही हुवो अर कहीके गुरुजी लवणहे तेसेही तनमन धन-
बचनसे बहुरि तन मन धन बचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मादिकसे
सर्वथा प्रकार भिन्न स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि परम ब्रह्म परमात-
मा सदाकाल जागती जोति जहां निषेधहे तहांहीहे स्वानुभव मात्र गम्यहे १ कोई
जीव आपकूं ऐसे माननहे जाणतहे कहतहेके मैं सिद्ध परमेष्ठी परब्रह्म परमातमा
नहींहूं ताकी येकता तन्मयिताके अर्थ दृष्टांत द्वारा गुरु समाधान देताहे हेशिष्य इ

सभवनमे तूं उच्चा स्वरसैं अलाप ऐसे करिके तूंही तब, गुरु आग्या प्रमाण शिष्य उ-
सभवनमे जाय करिके उच्चा स्वरसे कहीके तूंही तब तिस भवनाका समैंसे प्रति-
अवाजध्वनि ऐसीही आईके तूं ही तब शिष्यके अंतः करणमे अचल निश्चय येह
हुईके जिस सिद्ध परमेष्टी परमातमाकी कर्णद्वारा वार्ता श्रवण कर्ताथा सो तो-
स्वानुभवमात्रगम्य मेंहीहूं १ सिद्ध परमेष्टी परमातमाकूं आपका स्वस्वरूप स्वा
नुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभावसें भिन्न समजताहै मानताहै कहताहै ताका
समाधानके अर्थ गुरु कहताहै तुमारा तुमारेही समीपहे इहां तीन दृष्टांत द्वारा
स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानको अनुभव देताहूं श्रवण करो जैसे येकस्त्री आपकी नथ
नी नाकमेंसे निकाल करिके आपहीके कंठाभरणमे पहरादई पश्चात् घरकार्य
धंदा करणेमे येकाग्र चित्त हुई दोचार घटिका पश्चात् वास्त्री अपणा नाककों-
हात्त लगायो तब भ्रांति उस स्त्रीकों येहहुईके मेरी नथनी मेरे समीप नही हाय
मेरी नथ कहांगई इत्यादि भ्रांति द्वारा दुःखित हुई श्रीगुरुके चरण सरण आई ४३
अर गुरुसे कहीके स्वामी मेरीनथ मेरे समीप नाही नही जाणूं कहांगई तब गु

रु कही तेरी तेरेही समीपहै देख इस दर्पणमे तब वास्त्री दर्पणमै स्वमुख देख-
णे लगी तत्समयही स्वकंठाभरणमे लगीहुई नथ अपणी आपके समीप देख
करिके स्त्री गुरुसे कहीके हेस्वामी मेरी मेरेही समीप नथहै ऐसेही सिद्ध परमेष्टी
तुमारा तुमारे समीपहीहै सिद्ध परमेष्टी भिन्न नाही तथा स्वस्वानुभवगम्य स
म्यक्ज्ञानमई सिद्धपरमेष्टी तूंहीहै प्रश्न मैतो सिद्धपरमेष्टीसे भिन्नहूं उ
त्तर जैसे सूर्यसे अंधकार भिन्नहै तद्वत् तूं सिद्धपरमेष्टीसे भिन्नहै तब तो तूं क्रो
ड तपजप व्रत शील दान पूजादिक शुभाशुभ कर्म क्रिया करते संतेबी कदाचित्
कोई प्रकारबी सिद्धपरमेष्टीसे येक तन्मयि नहुवो नहोवैगो नहै बहुरिजैसे सूर्य-
से प्रकास तन्मयियेक अभिन्नहै तद्वत् तूं सिद्ध परमेष्टीसे येक तन्मयि अभिन्न
है तोबी तूं सिद्ध परमेष्टीसे येकतन्मयि अभिन्न होणेके अर्थ क्रोड जप तप व्रत शी
ल दान पूजादिक शुभाशुभ कर्म क्रिया करते संतेबी कदाचित् कोई प्रकारबी
सिद्धपरमेष्टीसे येक तन्मयि नहोवैगो नहुवोथो नहै १ सिद्ध परमेष्टीसे येकताकी
अर भिन्नताकी येह दोहूही भ्रांति विकल्पता स्वभाव सम्यक्ज्ञानमे कदापी नसं

भवै १ जैसे कंठमे मोतीकी मालाहै सो मोतीकी माला मोतीकी मालके समी
प तन्मयिहीहै ताकूं भरम भ्रांतिसे अन्यस्थानमे खोजताहै ताकूं गुरु कहीके
अन्यस्थानमे मोतीकीमाल नाहीं तेराही कंठमे मोतीकी मालहै सो मोतीकी
मालसे तन्मयि समीपहै ऐसेही सिद्ध परमेष्ठीहैसो सिद्ध परमेष्ठीसे तन्मयि स
मीपहै १ जैसे सूर्यके देखणेसे सूर्यकी निश्चयता सूर्यानुभव होताहै तैसेही
सिद्ध परमेष्ठी परमातमा सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव सूर्य कूं देखणेसे सिद्ध परमे·
ष्ठी परमातमा सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यकी निश्चयता स्वानुभवता होतीहै
१ जैसे स्रुवर्णका कडा मूंदडा कंठी दोरा असरफी आदि स्रुवर्णसे निश्चय स्वभा
व दृष्टिमे देखिये तो भिन्न नाही तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानम
यि सिद्ध परमेष्ठी परमातमासे निगोदसे लेकरिके मोक्ष पर्यंत जेतीजीवराशिये
केंद्री आदि पंचेंद्री पर्यंतहै सो निश्चय स्वभाव दृष्टिमे देखिये तो भिन्न नांही १ अ
पूर्वानुभव देताहूं श्रवण करो कोईजीव आपकूं सिद्ध परमेष्ठीसे भिन्न समजताहै
अर आपहीकूं सिद्धपरमेष्ठीसे अभिन्न समजताहै ऐसी येह दोहू कल्पना जि

स जीवके अंतः करणमै अचलहै सोजीव मिथ्या द्रष्टीहै १ जैसें लौकीकमै येह कहणा प्रसिद्ध हैके देखोजी तुम समज करिके काम कार्य कर्म कर्तो तो तुमारे येह नुकसाण किसवास्ते होते अर्थात् सतगुरूका उपदेस बचन द्वारा कोईजीव आपका आपमै आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावकूं समज करिके पूर्व प्रयोगात् शुभ अशुभ कामकार्य कर्म कर्ताहै ताका सम्यक् ज्ञान स्वरूपी धनको कदापि नुकसाण होणेको नाहीं १ जैसें लौकीकमै येह कहणा प्रसिद्ध हैके देखोजी रस्ता मार्गमै कंटकादिक विघ्न बहुतहै बच करिकै जाणा तैसेंही कोईजीव सतगुरु उपदेश बचन द्वारा आपका आपमै आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावकूं तन मन धन बचनसे बहुरि तनमन धन बचनकाजेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मसे वैराग्य करिकें बचकरिकेफेर ३४३ तीनसें तेतालीस राजू प्रमाण येह लोक तामै वचकरिकेभ्रमण करे तोबी स्वभावसम्यक् ज्ञानहै सोसंसारमै फसणेको नाहीं १ जैसेंचक्कीका पाटके ऊपर बैठी मखीहै सोचक्कीकोपाट चोतरफ गोल फिरताहै ताकेऊप

रबैठि मरवीबी फिरतीहै तैसैंही स्वभावसे अचल सम्यक् ज्ञानमयि परमातमा संसार चक्रके ऊपर फिरताहै तोबी अचलको अचलहीहै १ जैसे समुद्र स्वभावमे जैसाहै तैसाहै तोबी व्यवहार नयात् समुद्रके किनारो हद्द प्रमाणहै वास्ते समुद्र बंध्योहै बहुरि समुद्रकूं कोई बंध कर्यो नाही वास्ते सोही समुद्र मुक्तहै तैसैंही स्वयंसिद्ध परमातमा व्यवहार नयात् बंध मुक्तहै स्वभावसम्यक् ज्ञानमे स्वानुभव दृष्टीमे देखियेतो बंधमुक्तता दूरहीरहो परंतु बंध मुक्तकी कल्पनाको अंसबी नसंभवे १ जैसे सूर्यके भीतर अंधकार नाही तैसे येह जगत संसार स्वानुभव सम्यक्ज्ञानमयि सूर्यके भीतर नाही १ जैसे सूर्यका अर अंधकारका येक तन्मयिता नाही तैसैंही ज्ञानमयि परमातमाका अर जगत संसारका येक तन्मयिता नाहीं १ जैसे बकरी मंडलीमे जन्म समयसेंही भरमसे परबसात् सिंह रहताहै अर दूजो सिंह जंगलमे स्वाधीन रहताहै दोहूही सिंहकी जाति लक्षण स्वरूप नामादिक येकहीहै परंतु परस्पर अभेदमे भेद निश्चयहै तैसैंही निगोदसे लेकरिके मोक्ष वा सम्यक्ज्ञान स्वभाव पर्यंत जीवराशि नाम जाति लक्ष॰

णादिक युक्त येकहीहै परंतु परस्पर अभेद स्वरूपमे भेदहै येह भेद बुद्धि अर
भेद बुद्धिकी कल्पना येह विघ्न दुःख सतगुरूके चरणकी सरण होणेसे मिटेगा
१ जैसे येक मोटा चोडा लंबा बहुत विस्तीर्ण परमाणका स्वच्छ दर्पणमे अने
क प्रकारकी अनेक चलाचल रंगबिरंगी वस्तु दीखेहै तैसेही स्वच्छ ज्ञानमयी द
र्पणमे येह अनेक विचित्र मयि जगत संसार दीखताहै १ जैसे सूर्यका प्रकास
मे कोई पापकर्ताहै कोई पुन्यकर्ताहै कोई मर्ताहै कोई जनमताहै इत्यादि-
ताका शुभाशुभ पापपुन्य जन्म मरणादिक सूर्यकूं लागता नाही सूर्यसे येह
जन्ममरण पापपुन्य तन्मयि होते नाही तैसेही सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्य
का प्रकासमे पापपुन्य जन्म मरण कर्मादिक शुभाशुभ होतेहै ताका फल अर
मूलादिकहैसो सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यकूं पहोचते नाही लागते नाही
तासे तन्मयि होते नाहीं १ जैसे सूर्यके इच्छा सूर्यकुं देखणेकी न संभवे तैसे
ही ज्ञानमयि परमातमाकूं ज्ञानमयि परमातमा देखणेकी इच्छा नसंभवे १
जैसे धोबी निर्मल नीरका भर्या तलावमे कपडा धोताहै ताकूं लागी जलपीणे

की पिपासा सो मूर्ख धोबी बिचार कर्ताहैके येह २ दोय वस्त्र धोय पश्चात् जल पीऊंगा दोय वस्त्र धोये पश्चात् फेरबी येही बिचार कीयाके येह धोय पश्चात् येह धोय पश्चात् ऐसे अनुक्रम संकल्प विचार करतो करतो धोबी निर्मल नीरको निर्मल नीरहीमें मरगयो परंतु जल नही पीयो तैसें ही सर्वजीव राशि निर्मल सम्यक् ज्ञानमयि जलका भर्या समुद्रमें पर वस्तु कों उज्जल कर्ताहै येह करेपश्चात् गुरुके उपदेस द्वारा सम्यक् ज्ञानरूपी नीर पीय करि स्रुखी होहुंगा येह करे पश्चात् सम्यक् ज्ञान मयि नीर गुरुपदेसात् पीऊंगा ऐसें करते करते मरण करिकें कहाके कहां चलेजातेहै १ जैसे धोबी मैला कपडा वस्त्रकुं साबण क्षार शिलादिक निमतसें धोताहै परंतु धोबी वस्त्रसें साबणसें क्षारसें शिलादिकसें तन्मयि होय नही धोताहै तैसैंही शुभके लगी अशुभ कालिमानाकूं सम्यक् दृष्टी धोताहै परंतु सम्यक् दृष्टी शुभाशुभसें अर शुभाशुभका जेता- व्यवहार क्रिया कर्महै तासें तन्मयिहोय नहीं धोताहै ॥ ॥दोहा॥ ॥भेदज्ञा
नसाबणभयो समरसनिर्मलनीर॥ धोबीअंतरआतमा धोवैनिर्मलचीर॥१॥

जैसा कोरा नवीन पक्क माटीका कलसके ऊपर पवन प्रसंगात् रज रेणु आय लागे
है तैसैं सम्यक् दृष्टीके कर्मरेणु आय लागतीहै १ जैसे बहुत वर्षसे भर्यो तेलपूरि
त चीकणो माटीको कलस ताकेऊपर पवन प्रसंगात् रज रेणु आय लागतीहै तै
से मिथ्या द्रष्टीके कर्म वर्गणा आय लागतीहै १ जैसैं कोई मूक पुरुषका मुखमें मि
श्री गुड खांड डालदियो मूककूं मिष्टानुभव हुवो परंतु कहनहीसक्का तैसैंही को
ईजीवकूं गुरुपदेशात् आपका आपकूं आपमें आपमायि स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञाना
नुभव हुवो परंतु कहनही सक्का १ प्रश्न गुरुस्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव कैसैं दे
ताहोगा उत्तर गुरुकी गुरुही जाणे तथापि कुछ कहताहूं जैसैं कोई चंद्र दर्श
णकोइच्छुक गुरुसे बूजीके चंद्र कहांहै तब गुरु कहीके वो चंद्रमा मेरी अंगुलीके
ऊपर इत्यादिक अनेक प्रकाररसें गुरु स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव देताहै १ जै
से किसी पुरुषकी स्त्री अपणे भरतारसे कहीके तुम इस बालककूं लडावो गोद
मे लेवोतो मै घर कार्य करूं तब वोपुरुष स्वपुत्रकुं अपणी गोदमें लेकरि लडाणे
लाग्यो ततसमय बालक रूदन करणे लाग्यो तब पुत्रको पिता तिस बालककी थि

रता देख सुखके अर्थ कहताहैके हे पुत्र रुदन मति करै वहा अपणी माता बैठी
है इहां विचारणा चाहियेकी माता तो तिस बालककी है पुरुषकी नाहीं पुरुष-
कीतो स्त्रीहै ः स्त्रीकुं माता कहणा व्यवहार विरुद्ध है तथापि बालककी स्थिर
ता सुखके अर्थ वो पुरुष व्यवहार विरुद्ध वचन बोलताहै तैसेंही शिष्य मंडली
के सुख स्थिरताके अर्थ गुरुस्यात् अपभ्रंश वचन बोलताहै हेतु गुरुका उत्तमहै
१ जैसे अग्नीमे कर्पूर चंदनादिक डालदीजिये तिसकुं बी अग्नी जलाय देतीहै
बहुरि चर्म मलादिक डालदीजिये तिसकूं बी अग्नी जलादेतीहै तैसेंही सम्यक्
ज्ञानाग्नि विषे येह शुभाशुभ पाप पुन्यादिक जलजातेहै अर्थात् नहीरहताहै॰
१ जैसे येकजात येक लक्षण येक स्वरूप येकतेज येक गुणादिक युक्त रतन राशि
दूरसे येकहीसी दीखतीहै परंतु है वह रतन भिन्नभिन्न तथा जैसे अग्निका अंगा-
राकी रासि दूरसे येकहीसी दीखतीहै परंतु हैवह अंगारा भिन्नभिन्न तैसेंही जीव
राशि भिन्न भिन्न है गुण लक्षण जाति नामादिक सर्वका येक है १ जैसे दधि मथ- ४७
न करिके तिसको माखण निकास करिके पीछाको पीछो तिस छाछ तक मट्ठामे

डालदे तोबी वो मारवएग छाछ नक्रमै मिलकरिकै येक होएगेको नाही तैसैही गु
रुसंसार सागरमैसूं जीवकुं निकास करिकै पीछाको पीछो संसार सागरमै डाल
देवै तोबी वोजीव संसार सागरसे अग्नि उष्ण तावत् मिलकरिकै येक होएगेको ना
ही १ जैसै किसीके पास सर्पका जहर विष निवारणी बुटी जडी मंत्र समीप है
वो सर्पसै नही डरताहै तैसै किसी के पास स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान तन्मयीहै वो
संसार सर्पसे नही डरताहै १ जैसे कुंभकार को चक्र दंडादिक प्रसंगात् फिरताहै
बहुरि दंडादिक प्रसंगात् भिन्न हुये पश्चात् बी वोचक्र कुछ किंचित् कालपर्यंत फि
रबी फिरतारहताहै तैसैही कोई जीवका ४ च्यार घातिया कर्म भिन्न हुये पश्चात्
बी पूर्व प्रयोगात् कुछ किंचित् कालपर्यंत संसारमै भ्रमताहै १ जैसे सुकी गोवरी
छाणा कंडाके येक कणिका मात्र बी अग्नी लागगई तो सो अग्नी तिस सुकी गोव
री छाणा कंडाकुं अनुक्रमसे जलाय करिकै भस्म करि देतीहै तैसैही कोईजीव के
गुरुपदेशात् येक समय काल मात्रबी सम्यक्ज्ञानाग्नि तन्मयि होय लाग जावैगी
तो अष्टकर्मादि नामकर्म पर्यंत जलाय देगी बाद पश्चात् जो बचणेजोगहै सोको-

सोही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु अखंड अवि· नासी रहगो १ जैसै काष्ट पाषाण चित्रामकी ऽस्त्री आकार पूतलीकुं कोइ कामी तीव्र कामरागभावसै देखते देखते ताको वीर्य बंध छूट जाताहै तैसेही कोई धातु पाषाणकी पद्मासण षड्गासन ध्यान मुद्रायुक्त वैराग सूचक मूर्तिकूं कोई मुमुक्ष तीव्र अपणा वीतराग भावसहित देखैतो तत्काल ताका भई मई अष्टकर्मबंध छूट जाताहै १ जैसै व्यभिचारणी ऽस्त्री स्वघर कार्यादिक कर्ती है परंतु ताके अंतः करणमे वासना व्यवचारि पुरुषकी त्रफ लगी रहती है तैसेही सम्यक् दृष्टि पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारिक काम कार्य कर्ती है परंतु अंतः करणमे ताके दृढ अचल वासना स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावकी है अर्थात् स्वसम्यक् ज्ञानकूं अर आपकुं अग्नि ऊष्णतावत् येक तन्मयि समजताहै मानताहै १ जैसै गुमास्तो दुकान वा कोठीको काम कार्य राग द्वेष ममता मोहयुक्त कर्ता है परंतु ताके अंतः करणमै अचलये ह है के येह धन परिग्रह बहुरि धन परिग्रहका शुभाशुभ फल मेरा नाही सेठका है तैसेही सम्यक् दृष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारका शु

भाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म राग द्वेष ममता मोहसहित कर्त्ताहै परंतु ताके अंतःकरणमे अचल दृढ अवगाढ येह है के येह संसार काजेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म राग द्वेषादिक हैसो बहुरि ताका शुभाशुभ फलहैसो मेरा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुका तन्मयि नाही येहसंसारका शुभाशुभ कर्मादिकहै सो सर्व तनमन धन बचनसे तन्मयिहै तिसीहीकाहै १ जैसे स्वच्छ दर्पणमे अग्नि बहुरि जलकी प्रतिच्छाया दीखतीहै ता करिके वो दर्पण ऊष्ण शीतल नही होतो तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्यस्वच्छ सम्यक् ज्ञान मयि दर्पणमे संसारका शुभाशुभ क्रियाकर्मकी प्रतिच्छाया भाषहोतीहै ताकरिके वो स्वच्छ सम्यक्ज्ञान मयि दर्पण राग द्वेषसें तन्मयि होते नाहीं १ जैसे आकासमे काला पीला लाल मेघ वादल विजली आदि अनेक विकार होताहै अर विगडताहै ताकरिके आकाश विकारी नहीहोताहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि आकाशमे येह क्रोध मान माया लोभादिक होतेसंते बी सो स्वसम्यक् ज्ञानमयि राग द्वेषादिकसे तन्मयि होते नाही १ जैसे जिसघरमे अग्नीला

गेगी तोघर जलैगो बलैगो परंतु घरके भीतर बाहिर आकाशहैसो कदाचित्
कोई प्रकारबी जलैगो बलैगो नाही तैसैही देहरूपी घर तथा सरीर घरमे आधि-
व्याधि रोगादिक अग्नि लागैगी तो देह सरीर घर जलैगो बलैगो परंतु देह सरीरके
वा लोकालोकके भीतर बाहिर स्वसम्यक् ज्ञानमयि निर्मल आकाशवत् हे सोक
दाचित् कोई प्रकारबी जलैगो बलैगो वा मरेगो जन्मैगो नाही १ जैसै सूकी गोव-
रीके कणिका वा अणुमात्रबी अग्नी लागजावेतो तिस अग्नी प्रसंगात् सो सूकीगों
वरी अनुक्रमसे जलजातीहे तैसेही कोहू जीवके सतगुरु बचनोपदेस द्वारा येकने
त्र रीमकारा वा येक समय कालमात्रबी सम्यक् ज्ञानाग्नी तन्मयि लागजायतो ति-
सजीवका द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्म अनुक्रम पूर्वक जलजाय बलजाय इसमे कदा
चित् कोई प्रकार संदेह नाहीं १ जैसै कोहू स्त्री आपणा स्वभर्तारकुं त्यजकरिकै अन्य
पुरुषकी सेवा रमण आदिकर्ती हे सो ऽस्त्री व्यवचारणी मिथ्यात्वणीहे तैसेही को
हू आपणा आपमे आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानमयि देवकूं त्यजकरिकै अज्ञानमयिदे ४९
वकी सेवा भक्तिमे लीनहे सो मिथ्याती हे १ जैसे कोहू मदिरा वारुणी पीवणेका स

र्वथा प्रकार त्याग करेगो तब मदोन्मत्त पणाका त्याग संभवेगा तैसेही कोहूजीव जाति लाभ कुल रूप तप बल विद्या अधिकार येह अष्टमद सर्वथा प्रकार त्यागे॰ गा तब निश्चय मार्दवजो स्वसम्यक्‌ज्ञानगुणहै तासे तन्मयि होवेगा १ जिसके तिल तुसमात्र परिग्रह नाही अर पंच प्रकारका सरीर नाही नहै तासे कदाचित् कोई प्रकारबी तन्मयि नाही सोही सतगुरु है १ जैसे कोहू मद भंगादिक पीवे ताकरि के मदोन्मत्त है ताकूं लौकीकजन ऐसे कहते है येह मत वाले है तैसेही कोई अपूर्व मतिमंद मदिरा पीय करिके मदोन्मत्त होय रह्योहै येह जैन मत वाले वैष्णु मत वाले शिवमत वाले बौद्ध मत वाले इत्यादि बहुरि इनकूं कोऊ कहके तुम कोणहो तब व ह स्व मुखवात् अपणा आप कहताहै के हम जैन मत वाले हम वैष्णु मत वाले हम शिव मत वाले हम बौद्ध मनवाले इत्यादि येह मत वाले स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्‌ ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुसें तन्मयि नाही १ जैसे सूर्य अपणा स्वभावगुण प्रकास नही छोडै तैसेही स्वसम्यक्‌ज्ञान अपणा ज्ञानगुणकूं न छोडै १ जैसे कोहू कंबल अंगकेऊपर ओढकरि मधु छताकूं तोडणे लागे ताके तत् समय सहस्रादिकल

गी मधु मक्षिका तथापि वो पुरुष अडंक रहताहै तैसें ही कोहू जीव गुरु बचनोप
देशात् स्वसम्यक् ज्ञानानुभव कंबल ओढलीनु ताके येह संसार मक्षिका नही ला
गती जैसे काग पक्षी बोलताहै तैसेंही किसीकुं स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी तन्मयि
ता परमाव गाढता तो हुई नही अर बडेबडे बेद सिद्धांत सास्त्र सूत्र पढतेहै सोका
कभाषितमेवच १ जैसे कस्तूरयामृगके समीपही कस्तूरीहै परंतु कस्तूरीकी सुगं
ध नासिका द्वारा धारण करिके कस्तुरीकूं इदर उदर जंगलमे खोजता फिरताहै धां
वता दोडताहै तैसेही जीवके समीपही जीवसे तन्मयि स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमा
तमाहै ताकूं जीव आकास पाताल लोकालोकमे खोजताहै अज्ञानी जीवकूं ये
ह खबर नाहीके जिसकुं मै खोजताहूं सो वस्तुतो मेरी मेरेही समीपहै मेरा स्वस-
म्यक् ज्ञानसे तन्मयिहै वा मैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहूं १ जैसे इंद्रजा
लका खेल मिथ्याहै तैसेंही येह संसारका खेल मिथ्याहै स्वसम्यक् ज्ञानमयि पर
मातमा सत्यहै १ जैसे सभाकी माया झूठीहै तैसेंही संसारकी माया झूठीहै स्व-
सम्यक्ज्ञान मयि परमातमा सत्यहै १ जैसे जहां देह नही तैसे तहांजन्म मरणना

मादिक नाही अर्थात् जहांदेहहै तहांही तिनसे जन्ममरण नामादिक तन्मयि है १ जैसे चलती चक्कीका दोहू पाटके बीच जेताग हूं चीणा मूग उडद आदि धान्य क्षेपये तेसर्व पिस जातेहै आटो होजा तोहै येक कण दाणूं बी नही बचताहै परंतु उसी चलती चक्कीमे कोई कोई बीज लोहाका कीलाके नजीक रहताहै सो बच-जाताहै तैसेही संसार चक्रके बीच पड्योहै जीवसो तो मरणादिक द्वारा होकरि नर्कनिगोदमैं जाय पडतेहै परंतु कोईकोईजीव गुरु बचनोपदेस द्वारा आपका आपमे आपमयि स्वसम्यक्त ज्ञानमयि परमातमाके तन्मयि शरण हो जायहै सो जीव जन्म मरणके दुःखसे बच जातेहै १ जैसे सर्पणी १०८ पुत्रजणती है जणि करिके अपणी देह गोलाकारके बीच सब पुत्र समुदायकूं राखि करिके अनुक्रमसे सर्वकूं भक्षण करि जातीहै परंतु कोई कोई गोलाकारमे निकस जातोहै सो बच जातोहै तैसेही उत्सर्पणी अवसर्पणी कालका गोलाकारमेसे कोहूजीव निकस-करिके भिन्न हुवो सोतो बच्यो शेष रहेसो उत्सर्पणी अवसर्पणी कालका मुखमे रहे १ जैसे वांझस्त्रीकूं पुत्रोत्पत्तीका आदि अंत पूर्वापर सर्व विवर्ण श्रवण करावो

तथापि तिस वांझ स्त्रीकुं पुत्रोत्पत्ती का कदाचित् कोई प्रकारबी साक्षात् अनु॰
भव होतेनाही तैसेही बज्र मिथ्याद्रष्टीकुं स्वसम्यक् ज्ञानोत्पत्तीका पूर्वापर वि॰
वर्ण श्रवण करावो वा महावाक्य उनकुं कहोके तूं ही ज्ञानमयी परमातमाहे तूं
देहादिक नाहीं तथापि ताकूं सम्यक् ज्ञानोत्पत्तीको साक्षात् अनुभव होते नाही
१ जैसे किसीको नाक छिन्न खंडनहे ताकूं कोई दर्पण दिखावे तो वोनाक छिन्नअ
पणा दिलमे येह बिचार करेके मेरोनाक छिन्नहे इसीवास्ते योमोकूं दर्पण बतावे
हे तैसेही मिथ्या द्रष्टीकूं स्वसम्यक् ज्ञान दर्पण दिखावणा व्यर्थाहे १ जैसे बांझ॰
स्त्रीकूं पुरुषका संयोग होतेसंतेबी पुत्रफल लाभानुभव नहीं होताहे तैसेही मि
थ्याद्रष्टीकूं देव गुरु सास्त्र सत् पुरुषांको सतसंग होतेसंतेबी स्वसम्यक् ज्ञान फ॰
ल लाभानुभव नहीं होताहे १ जैसे हंस दुग्ध पाणी मिले हुयेकूं भिन्न भिन्न समः
जताहे तैसे स्वसम्यक् ज्ञानी येह लोकालोककूं अर आपका आपमे आपमांयि
स्वसम्यक् ज्ञानकूं भिन्न भिन्न समजताहे १ जैसे स्वप्ना अवस्थामे घर कुटुंब बेटा ५१
बेटी १ स्त्री माता पिता धन धान्यादिक दिखताहे ताकूं जाग्रत समय देखिये तो

नदीखताहै अर्थात् स्वप्नाअवस्थाका माता पिता स्त्री पुत्रादिक सर्व मरजाते
है ताका दुःख हर्ष शोक जाग्रत अवस्थामे नही होते तैसेही जाग्रत अवस्थास
मयका माता पिता ऽ स्त्री पुत्रादिक है सो स्वप्नामे नही दीखताहै अर्थात् जाग्रत-
अवस्था समयका मातापिता ऽ स्त्री पुत्रादिक सर्व मरजाते है ताका दुःख हर्षसो
क स्वप्नाअवस्थामे नही होते १ सदाकाल सहज स्वभावहीसे देखता जाणता-
है ताके सन्मुख येह स्वप्न समयका अर जाग्रत समयका संसार होताहै बिगड-
ताहै १ जैसे स्वप्ना समयमे कोई किसीको मस्तग छेदन कियो मारगेरयो तिसस
मय आपकुं मरयो समज्यो मान्यु सोही जाग्रत हुवो तब कहणे लाग्योके मै स्वप्ना
मे मरगयो थो तैसेही येह जन्म मरण पाप पुन्यादिक स्वप्नाका खेलहै इस खेल-
का तमासा सहज स्वभावहीसे देखता जाणताहै सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य स
म्यक् ज्ञानहै १ जैसे मतवालो स्वमाताकूं माताही कहताहै परंतु ताको विश्वास
क्या क्यूंके कदाचित् अपणी माताकूं अपणीस्त्री मानलेतो प्रमाणक्या तैसे-
ही येह मति मदिरामे मदोन्मत्त येह जेन मति वाले वैष्णु मतिवाले शिवमति

वाले वेदांत मतिवाले बौद्ध मतिवाले आदि षट् मतिवाले हैं सो स्वस्वरूप स्वा-
नुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तकूं और सें और प्रकार मानलेउ
कह देवे तो प्रमाणक्या १ जैसें माटीका झूठा घोटकसे बालक प्रीत कर्ता हे सोबी
दुःखीहे बहुरि कोहू सत्य साचा घोटकसे प्रीत कर्ता है सोबी दुःखीहे कारणउसका
घोटककूं कोहू तोडैं फोडैं अर तिसका घोटक कूं बी कोई चारो दाणुं न दे वा ताडै तै
सैंही कोहू जो माटीकी पत्थरकी चित्रामकी काष्ठकी साधक झूठी देव मूर्तिसे प्रेम-
प्रीत कर्ता हे सोबी दुःखहीको कारणहे बहुरि कोहू सत्य साचो ज्ञानमयि देवहे ता
सेंबी प्रेम प्रीत कर्ता हे सोबी दुःखहीको कारणहे अर्थात् स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्व
भाव वस्तुसे भिन्न होय करिके पर वस्तुसे प्रेम प्रीत करेगा सो दुःखानुभव मे लीन
ही रहैगा अर्थात् प्रीत रागहे सो संकल्प विकल्प पूर्वक मोहकी सत्य सहोदरी हे
१ जैसें येक पुरुष पाषाणका देव मूर्तिकूं अर धातु मूर्ति देवकूं बहुरि काष्टकी दे-
व मूर्तिकूं अर चित्र देव मूर्तिकूं बडे प्रेम भावसे ताकी पूजा प्रणाम कर्ता था देव ब-
सात् पाषाणकी मूर्ति तो फूटगई तूटगई अर धातुकी देवमूर्तिकूं चोर तस्कर लेग

ये बहुरि काष्टकी देव मूर्ति अग्नीमें जलबल करिके भस्म होगई अर चित्राम
की मेघ पवन वा हस्त स्पर्श द्वारा बिगड गई अर्थात् धातुपाषाणादिककी
देव मूर्तिमें नष्ट होणा आदि अनेक दूषण प्रतक्षानुभव होता देखकरिके
अपणो आपमें आप मयि स्वसम्यक् ज्ञानानुभवको गम्य स्वभाव स्वरूप आ
पहीकूं देव समज करिके चुप चाप रहे १ जैसे कोहू पुरुष किसी साहुकारकी दु
कानको द्रव्य स्रुवर्णरतनादिक दूरसे देख करिके कहीके मेरेकूं येह जेता द्रव्य
रतनादिक मेरेसे दूर अलग हो दीखताहे ताका मेरे त्यागहे तैसेही स्वस्वरूप-
स्वानुभवगम्य सम्यक् केवल ज्ञानहे ताके येह संसार लोकालोकका स्वभावही
से त्यागहे क्यूंकं जो जिसकूं जाणताहे सो तासे भिन्नहे तासे तन्मयी नाही येहन्या
य सिद्ध वार्ताहे १ जैसे कोई द्रव्यार्थी पुरुष राजाकूं जाण करिके ताकी दृढ श्रद्धा
करिके राजाकी अनुसार चलताहे रहताहे ताकुं राजा द्रव्य देताहे तैसेही कोहू
जीवहे सो स्वसम्यक् प्रथम केवलज्ञान राजाकूं अपणा स्वभावगुणसे तन्मयि
समज करिके जाणकरिके ताकी दृढ परमाव गाढश्रद्धा करिके केवल ज्ञान राजा

के अनुसार चलताहै रहताहै ताकू केवलज्ञान राज स्वभाव सम्यक्ज्ञानम-
यि मोक्ष देताहै १ जैसे संस्कृत भाषामे मलेंछ नही समजै तो होवै तो मलेंछ
कूं मलेछी भाषामे समजावणा तैसेही अज्ञानी कूं अज्ञान भाषामे समजाव-
णा १ जैसे कोई कहेके दोहू राजा परस्पर युद्ध करि रहाहै बिचारसे देखिये तोप
रस्परकी फोज लडतेहै दोहू राजा तो अपणे अपणे स्वस्थानमे निमग्नहै तैसेही
ज्ञान अज्ञान दोहूही अपणा अपणा स्वस्थानमे अपणे अपणे स्वभावमे निम
ग्नहै अपणे अपणे स्वभावहीसे जैसे सूर्य अंधकारका येक तन्मई मेल नाही तै·
से ज्ञाना ज्ञानका मेल नाहीं १ जैसे कोहू कहेके राजा इस गांवकूं लूटताहै जला
दीयो इस गांवकूं बालदीयो इस गांवकूं बचादीयो इस ग्रामकी रक्षाकरी परंतु बि
चारसै देखियेतो लूटणे मारणे बचाणेका जलाणेका इत्यादिक कार्यहै ताकूं फो
ज सिपाई जमादार फोजदार आदि कर्तेहै राजा नही कर्ताहै तैसेही स्वसंम्यकू -
केवलज्ञान राजाहै सो किंचित्‌बी शुभाशुभक्रिया कर्म नही कर्ताहै १ जैसे सुव
र्णका सुवर्णमयि भाव कटि कूंडलादिक सुवर्ण मयीही होताहै बहुरि लोहाका-

लोहमयी ही होताहै तैसेही स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानका भाव क्रिया कर्म सम्यक्
ज्ञानमयीही होताहै बहुरि अज्ञानका भाव क्रिया कर्म अज्ञान मयिही होताहै १
जैसे मातंग चांडालकी बहुरि उत्तम ब्राह्मणकी क्रिया कर्म भाव येक नाही किंतु
भिन्न भिन्नहे तैसेही ज्ञान अज्ञानकी क्रिया कर्म भाव येक नाही अर्थात् भिन्नभि
न्नहै १ जैसे कोहू पुरुष अहार कियो सो अहार उदराग्नि प्रसादात् मांस रुधिर म
ज्जा मल मूत्रादि होयहे तैसेही जिसके गुरु बचनोपदेस द्वारा साक्षात् अंतःकरणमै
सम्यक् ज्ञानाग्नि प्रज्वलित भई ताके सर्वकर्म स्वमेवही अपणी अपणी प्रणतीजो
कर्म मयीहै तामे प्रणवैहे १ जैसे वैद्यके समीप विषनासनी दवाहै वो वैद् मरणू
होणेजोग विष भक्षण करते संतेबी मरतो नाही तैसेही स्वसम्यक् दृष्टि पूर्व कर्म
प्रयोगात् विषय भोग भोगते संतेबी कर्मसे बंधतो नाही १ लोकीकमे प्रसिद्धहै जै
से कोहू स्त्रीकूं भोगे सो पुरुषहे तैसेही क्रोध मान माया लोभ मोह ममता मायाकूं
भोगे सो सत्य पुरुषहै बहुरि जिसकी छातीके ऊपर येह क्रोध मान माया लोभ मोह मा
मता माया चढरहीहे सो पुरुष नही वो सत्य स्त्रीहै १ जैसे स्वर्ण कर्दमके बीच पड्यो

है ताहूरस्कवर्ण कर्दमसें येक तन्मायि लिप्त होणेको नाही तैसेंही स्वसम्यक् ज्ञानी सम्यक् दृष्टी सर्व कर्मके बीच पड्योहै तोबी सर्व कर्मसे तन्मयि नही लपटताहै १ जैसे घटके भीतर बाहिर मध्य आकाशहै सो घटोत्पत्ती होते संते तो आकास उपजतो नाही बहुरि घटको नास होते संते आकासको नास नही होते तैसेंही स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञान मयि परमातमाहै सो देहके विनसते संतेतो बिनसतो नाही मरतो नाही बहुरि देहके उपजते संते उपजतो नाही जन्मतो नाही १ सहज स्वभावहीसे आपा परकूं जाणताहै सोही स्वसम्यक् ज्ञानहै १ जैसे तुषहै सो तंदुल नाही तैसेंही पंच प्रकारका सरीर देहहै सो स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा नाही १ जैसे बांससे बांस परस्पर घृष्ट होवेंहै तब अग्नी सहज स्वभावहीसे उत्पन्न होतीहै तैसेही आत्मासे आत्मा तन्मायि मिले तब सहज स्वभावहीसे स्वसम्यक् ज्ञानाग्नि उत्पन्न होतीहै जिससे स्वमेवही द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्म वा शुभाशुभ कर्म जल जाताहै बलजाताहै अर्थात् सम्यक् ज्ञानाग्निसे तन्मयी होय नही रहताहै १ जैसे सूर्योदय समय स्वमेवही कमल प्रफुल्लित होताहै तैसेंही किसीके अंतःकरण

मे स्वसम्यक् ज्ञानमयि सूर्योदय होते संते मन स्वरूपी कमल प्रफुलित होताहै
भावार्थ मनमे बडी खुशी हर्ष होताहे के हा हा हा हा जिसके प्रकासमे येह लोका
लोक प्रगट दीखताहै ऐसा सूर्यका दर्शण लाभ हुवा अथवा विशेष हर्ष प्रफुल्लित
पणो ऐसोहे के जिस सूर्यका प्रकासमे येह लोकालोक जगत संसारजन्म मरण
नामानाम बंध मोक्षादिकहे सो सूर्य स्वभावहीसे मेंहीहूं १ जैसे फोजतोहे प-
रंतु तामे फोजदार नाही तो वा फोज वृथाहे तैसेही व्रत शील जप तप ज्ञान ध्यान
दया क्षमा दान पूजा दिकतोहे परंतु तामे स्वसम्यक् ज्ञानमयि गुरु नही तो वह
व्रत शीलादिक वृथाहे १ जैसे कोई स्त्रीको भर्तार परदेसमे जाय करिके तत्रस्थल
ही मरगयो अब वास्त्री तिस भर्तारकी आसा धारण करिके भोगादिक उत्पत्तीका
सिणगार काजल टिकी मेंदी नथनी आदि सिणगार करतीहे सो वृथाहे तैसेही
मोक्षमे गये स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञानसे तन्मयि होगये निर्ग्रंथगुरू सोतो अब पल
ट करिके पीछा आते नाही जेसे लवणकी पुतली क्षार समुद्रमे गई सो पलट करि
के आती नाही तदवनही समजणा अब चलेगये निर्ग्रंथगुरू ताकी आसा धारण

करिके संसारिक शुभाशुभ भोगादिक उत्पत्तीका शुभाशुभ क्रिया कर्मादिक करणा वृथाहै १ जैसे कोहू जन्म समयसे लगाय अद्यपर्यंत गुड शर्करा खाई नाही अर गुड शर्कराकी वार्ता विवर्ण करताहै सो वृथाहै तैसैही कोहू कदाचित् काहू प्रकारबी स्वस्वरूप स्वयंसिद्ध सम्यक् ज्ञानमयि परमातमासै तो तन्मयि हुये नाही अर उनकागीत बेद पुरान सास्त्र सूत्र स्वमुखात् पढताहै बोलताहै कहताहै सो सूक पक्षीवत् वृथाहै स्यात् १ जैसै सीलवंतीस्त्री स्वघर त्याग कोईकाल परघर प्रतिबीजावे आवै तोबी फिकर नाही तैसैही स्वसम्यक् दृष्टी पूर्व कर्म प्रयोगात् कुछकाल संसारमैभी भ्रमण करै तथापि फिकर नाही १ जैसे सूर्योदय होते प्रमाण तत्काल तत्समय ही अंधकार उपसम हो जाताहै तैसैही किसीके अंतःकरणमै स्व सम्यक् ज्ञान सूर्योदय होते प्रमाण तत्काल तत्समयही मोहांधकार उपसम हो जातेहै १ जैसे व्यभचारणीस्त्री अपणा स्वघर त्याग करिकै परघर नही जाती आतीहै तथापि ताकी बासना व्यभिचारी पुरुषकी तरफ लगी रहतीहै तैसैही जिसकूं स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभवकी अचलता अवगाढ परमावगाढ

ता नाही ऐसा मिथ्या दृष्टीकी वासना भाव शुभाशुभ संसारकी तरफ लगीर-
हतीहै १ जैसे जिस कोठी वा दुकानको काम कार्य सेठ कर्ताहै ममता माया मो
ह सहित तैसैही गुमास्तो ममता माया मोह सहित कर्ताहै परंतु भीतर परिणा
मभेद भिन्नभिन्नहै तैसैही किसीकूं गुरुवचनोपदेशात् स्वसम्यक ज्ञानानुभव-
होणेजोग होचुके येकतो ऐसो बहुरि दूजो ऐसो के संसारकूं वा लोकालोककूं व
हुरि अपणा स्वभाव सम्यक् ज्ञानकूं येक सूर्य प्रकाशवत् निश्चय समजताहै-
मानताहै दूजो ऐसो ते दोहूही संसारका कार्य कर्म कर्ताहै तामे येक दोषी दूजो
निर्दोस १ जैसे सूक पक्षी स्वमुखात् रामराम बोलताहै परंतु स्वस्वरूप सम्यक्
ज्ञानमै तन्मयि बीज वृक्षवत् तथा जल कल्लोलवत् रमै सो रामहै-ऐसा रामकूं
तो जाणतो नाही फिर वो सूकपक्षी स्वमुखात् रामराम बोलताहै सो वृथाहै तै-
सैही मिथ्या दृष्टी स्वयंसिद्ध स्वस्वरूप सम्यक ज्ञानमयि सिद्धकूं तो जाणतो ना-
ही अर स्वमुखात् णमो सिद्धाणं ऐसे बोलताहै सो वृथाहै- इहां विधि निषेध
सें स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तन्मयी न समजणा १ जैसे दी-

प ज्योतिके भीतर कालो काजल कलंक है तैसैही स्वस्वरूप सम्यक ज्ञान दीपज्यो
तिके प्रकासमै कर्मसै तन्मायि कर्म कलंक है इहां कोई मिथ्याद्रष्टी दृष्टांतमै त
र्क स्थापन करिकै स्वसम्यक ज्ञानानुभवतो नहीग्रहण करैगो अर सून्य दोष ग्रह॰
ण करैगो क्योंके दीपज्योतिमै कालो कलंक काजल है परंतु दीपज्योतिके वुजग
ये पश्चात् काजलबी कहां है अर दीपज्योतिबी कहां है ऐसी तर्क द्वारा शून्यदोष
ग्रहण कर्ता है सो जरूर स्वस्वरूप सम्यक ज्ञानानुभवसै सून्य है मिथ्याद्रष्टी है १
पंचेंद्रियकूं बहुरि पंचेंद्रियका जे ता शुभाशुभ विषय वा भोगोपभोगादिककूं स
हज स्वभावहीसें जाणताहे देखताहे सोही केवल ज्ञानहै ऐसै नही समजणा
मानणा कहणा के घ्राणेंद्रियका विषय भोगकूं जाणताहे सो कुछ ज्ञान और है
जिव्हाइंद्रियका विषय भोगाकूं जाणताहै सो कुछ ज्ञान और है॰ ऐसैही कर्णें
द्रियका स्पर्श इंद्रियका विषय भोगादिककूं जाणताहे सो कुछ ज्ञान और है ब
हुरि तन मन धन वचनादिककूं बहुरि तन मन धन वचनादिकका जे ता शुभा॰
शुभ क्रिया कर्मकूं अर ताका फलकूं जाणताहै सो कुछ ज्ञान और है ऐसी भेदा॰

भेदकी कल्पना कदाचित् कोई प्रकारबी स्वभाव सम्यक् ज्ञानसैं तन्मयि
नसंभवे १ जैसे सूर्यका प्रकास मे पडी रस्सी रात्रीसमय सर्प भाषहोती
हे तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानानुभव बिना ज्ञान हेसो जगत संसार वत् भाष-
होताहे १ जैसे सीपमे चांदी भाष होतीहे तथा मृग तृष्णा मे नीर भाष हो
ताहे तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमे तन्मायिवत् येह संसार जगत भाषहोता-
हे १ जैसे अंध समूहकूं खेंचत नयन प्रवीण तैसे आत्म ज्ञानविना होय-
मोहमे लीन १ जैसे आकाशके धूलि मेघादिक नही लागते तैसैही स्व-
सम्यक् ज्ञानके पापपुन्ये बहुरि पाप पुन्यका फल नही लागते १ येह लोका
लोक जगत संसार कूं स्वसम्यक् ज्ञान हेसो सहज स्वभावहीसे जाणताहे
ताकी विधि निषेध कोण प्रकार १ जैसे सूरबीर नरेश मलेंच्छादिक देस-
कूं जीत करिके मलेंच्छादिक देसहीमे रहताहे तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानी क्रो
ध मान माया लोभ वा विषय भोगादिककूं जीत करिके तिसही विषय भो
गादिकमे रहताहे परंतु तन्मायि तत्स्वरूप होय करिके नही रहताहे १ जैसे

 घटके भीतर बाहिर मध्य आकाशहै सो घटकूं कैसै त्यागै अर ग्रहण बी कै
 से करै तैसैही येह जगत संसारके भीतर बाहिर मध्य स्वसम्यक् ज्ञानहै सो
संसारकूं क्या त्यागै अर क्या ग्रहण करै १ जैसै समुद्रके ऊपर कलोल उप
जतीहै विनसतीहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि समुद्रमै वह स्वप्न सम·
यको जगत उपजताहै बहुरि जाग्रत समयको जगत बिनसताहै बहुरि·
जाग्रत समयको जगत उत्पन्न होताहै अर स्वप्न समयको जगत बिनसता
है १ जैसै जन्मांध रतन सुवर्णादिकका आभूषण पहरताहै सो वृथाहै
तैसैही स्वसम्यक् भाव सम्यक् ज्ञानानुभवकी परमावगाढ बिना व्रत शी
ल तप जपनेमादिक संपूर्ण वृथाहै १ जैसै कोऊ पुरुष वृक्ष कुंपकडि क·
रिके स्वमुखात् कहके मै बंध मोक्षसें कब भिन्न होऊंगा तैसेही बंध मो·
क्षसें भिन्न होणेकी इच्छा करताहै सो स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानरहित मू
र्ख मिथ्या द्रष्टीहै १ भावाभाव विकारहै सो अपणे अपणे स्वभावहीतै
है १ जैसै तोलमै गुंजा और सुवर्ण बरोबर है परंतु मूल स्वभावमै घा ना

मजाति वर्णादिकमे बरोबर नाहीं तैसेंही जगत और जगदीस येह दोन्यूं
ही बरोबरहे परंतु मूल स्वरूप सम्यक् ज्ञान स्वभावमे दोन्यूं बरोबर नाही
१ जैसे बिन धूम्रकी अग्निहै सो सोभायमानहै तैसेंही भ्रम रूपी धूम्र क
रिके रहित स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु सोभायमान भाषतीहै १ जै
सेज्वरके अंतसमय अन्न प्रिय लागताहै तैसेही शुभाशुभ संसारके अंत
स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव प्रिय लागताहै १ जैसे कुकर्दम राजा स्व वर्गकूं
त्यागकरि परवर्गसूं मिश्रित होय मरणादिक दुःखकूं प्राप्त हुवो तैसेंही को
हू स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञानकूं छोडकरिके परस्वभाव परवर्गसे आपकूं तन्म
यीवत् समझताहै मानताहै सो जन्म मरणादिक संसारका दुःख भोगताहै
१ जैसे मही मंडलमे नदीको प्रभाव एक नाहीमे अनेक भांत नीरकी ऊरनहै
पत्थरकोजोर तहां धारकी मरोड होय कंकरकी खानी तहां झागकी ऊरनहै प
वनकी झकोर तहां चंचल तरंग उठे भूमिकी नीचान तहां भवरकी पडितहै तै
सेंही एक स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानमयि आत्माहै बहुरि अनंत रसमयी पुद्गल

है तिन दोहूका पुष्प सुगंधवत् तथा घट आकाशवत् संयोग होते संते वि
भावकी भरपूरताहै १ स्वसम्यक् ज्ञानानुभव हुये पश्चात्‌बी कुछ कालप-
र्यंत पूर्वकर्म प्रयोगात् सम्यक् दृष्टि संसारमें भ्रमण कर्ताहै कैसेजैसे कुं
भकारको चक्रहै सो दंड कुंभकार आदि प्रसंगात् परिभ्रमण करैहै परंतु दंड
कुंभकार आदिकका प्रसंगसें भिन्न हुये पश्चात्‌बी कुछ काल पर्यंत परिभ्रम
ण करैहै तैसे १ जैसें परजो तन मन धन बचनादिककूं अर इनका शुभाशु-
भ व्यवहार क्रिया कर्म फलकूं जाणताहै तैसेही पलट करिके आपकूं ऐसेजा
णे के येह तन मन धन बचनादिककूं बहुरि इन तन मन धन बचनादिकका जे
ता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फलहै ताकूं मैंके द्वारा मैंजाणताहूं येह-
मेरा स्वस्वभाव सम्यक्‌ज्ञानकूं जाणते नाही ऐसे आपकूं जाणै सोही कहीहै
आप समजकर घर नहीजाणे दूजाकूं क्या समजावे भ्रमण करै संसारज
गतमें हृदय हातमें नहि आवे १ तथा जबतकहै अज्ञान तबीतक कुटुंब क-
बीला भाई हे ज्ञान हुवातो आतमा आपमें आपसमाहीहै १ जैसे जैसीप्री

त प्रेम घर कुटुंब बेटा बेटीसैं है तैसैं ही स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमात्मासे तन्म
यि प्रेम प्रीन अचल होय तो सहज विना यतन विना परिश्रमही संसार शुभा
शुभसे प्रेमराग टूटजाय १ जैसैं सूर्यके सहजही अंधकारका त्यागहै तैसैंही
स्वसम्यक् ज्ञानसूर्यके सहज स्वभावहीसे येह भ्रमजाल संसारहै ताका त्या
गहै १ जैसैं कोहू पुरुष ऽस्त्रीकूं भोगताहै परंतु आप स्त्रीसैं बहुरि ताका भा-
वक्रिया कर्म फलसे तन्मयि तत् स्वरूप होय करिकै स्त्रीकूं नही भोगताहै तैसैं
ही स्वसम्यक् ज्ञानमयि परम ब्रह्म परमात्मा पुराण पुरुषोत्तम पुरुष है सो स
र्व संसार भ्रम जाल मायास्त्रीकूं भोगताहै परंतु संसार भ्रम जाल मायासे जै
से अंधकारसैं सूर्य भिन्नहै तदवत् संसार भ्रम जाल मायासे भिन्नहो करि भो
गताहै अर्थात् संसार भ्रमजाल मायास्त्रीसे अर ताका भाव क्रिया कर्म फ-
लसे तन्मयि तत् स्वरूप होय करिकै नही भोगताहै १ जैसैं स्त्रीबी पुरुषकूं भो
ग देतीहै सो पुरुषसे तन्मयि होय करिकै नाही देतीहै तैसैंही संसार भ्रमजाल
माया स्त्रीहै सो स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञान मयि पुराण पुरुषोत्तमकूं भोग देतीहै सो

पुरुषसैं अलग हो करिके देतीहै तन्मयिहोय करिके भोग नही देतीहै १ जैसो
काजलसैं कालो कलंक तन्मयिहै तैसेही तन मन धन बचनादिकसे बहुरि जेता
तन मन धन बचनादिकका शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फलहै तासे अज्ञा
न तनमईहै १ जैसे स्वच्छ दर्पणमे कृष्ण वस्त्रकी प्रति छाया काली तन्मयीव
त्सी दीखती है सो तिस दर्पणकी नाही कृष्ण वस्त्रकी है सो कृष्ण वस्त्रसे तन्म
यिहै तैसेही स्वच्छ सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव दर्पणमे येह द्रव्य कर्म भावकर्म
नोकर्म मयि संसारकी प्रति छाया कर्म कलंक मयि तन्मयिवत्सी दीखतीहै सो
स्वच्छ सम्यक्ज्ञान मयि दर्पणकी नाही द्रव्यकर्म भावकर्म नो कर्ममयि संसार
है ताकीहै सो तासे तन्मयिहै १ जैसे स्वच्छ दर्पणमे अग्नीकी प्रति छाया तन्म-
यि वतसी दीखतीहै तासे तो वो दर्पण गरम ऊष्ण नही होते बहुरि तिसही स्व-
च्छ दर्पणमे जल नीरकी प्रति छाया दीखतीहै तन्मयि वत्सी तासे सो दर्पण सी
तल नही होते तैसेही स्वच्छ सम्यक्ज्ञानमयि दर्पणमे काम कुशीलादिक राग
मयिकी छाया भावभाष होते संते तो रागमयि होते नाही बहुरि शीलव्रतादि

क वैराग मयिकी छाया भाव भाष होते संते बैराग मयि होते नाही ऐसे स्वच्छ
सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव से येह राग द्वेष तन्मयि नाही १ जेसे जलमे चंद्र प्रति
बिंबहे सो पकडबामे हस्तमे नही आवे तेसेही स्वसम्यक् ज्ञानमयि सिद्ध पर
मेष्ठी द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्मादिक बंधमे नही आते १ जैसे गोमट नाम पर्व
तके ऊपर बाहुबली राजसंपदा छोडकरिके धन धान्य स्वर्ण रतनादि वस्त्र
पर्यंत बाह्य परिग्रह छोड करिके नग्नदिगंवर होय करिके खडे रहे ध्यानमे ऐसा
लीन रहे जो वज्र पातादिक स्वशरीरपे गिरे तोबी चलायमान नही हुये सर्वांगमे
जिनके सर्प और वृक्ष लतालिपट गई मौनचलरहित इत्यादि अवस्था पर्यंत प
होंचगये येक वर्ष पर्यंत खडे रहे तथापि स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञा
नानुभवकी परमावगाढतासे तन्मयि नही भये कारण ताके अंतः करणमे
सूक्ष्म अनिर्वचनीय येह वासना रहीके मे भरतकी पृथ्वीके ऊपर खडाहूं पूर्वो
क्त दिशा अवस्थासे सर्वथा प्रकार भिन्न हुये तब स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी पर
मावगाढतासे तन्मयि सूर्य प्रकाशवत् मिले १ गुरू भ्रमजाल संसारसे सहज

ही भिन्न करि देताहै १ जैसे जलकुंडमे जलके ऊपर तेल बिंदु तरतीहै तैसेही
लोका लोक जगत संसारके ऊपर वा पंचभूत वा पुद्गल पिंडभाव राग द्वेषके ऊ
पर तथा कामक्रोध कुशील आदिक जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्महै
अर ताका जैसा तैसा फलहै ताके सर्वके ऊपर स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य
क् ज्ञानमयि स्वभावस्वरूप परम ब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्ठी तरताहै सो
कैसो इस भ्रमजाल संसारमे डूबैगा वा कैसे गुम होवैगा १ जैसे ज्यो घट कहि
ये घीवको घटको रूपन घीव तैसे त्यौं वर्णादिक नामसे जड़ताल हन जीव १
जैसो खांडो कहिये कनकको कनकम्यान संजोग ॥ न्यारो निरखत देखिये लो
ह कहै सबलोक ॥२॥ जैसे कोहू अग्नीसे जलताहु वा घरमैसे निकस करिके
बाहिर सडक वा मारग चोगानमे खडो रहकरि पुकारतो है के वा वस्तु जलतीहै अ
मुकी वस्तु बलतीहै तासे कोहू कहके तूंतो नही जल्यो नही बल्यो तूंतो नही-
जलताहै नही बलताहै तब वो कहके मैंतो नही जलताहूं नही बलताहूं मैंतो न
ही जल्यो नही बल्यो येह घरजलताहै बलताहै अर घरके भीतर अमुक अमु-

क वस्तु जलती बलतीहै तैसेही कोहू मुमुक्ष गुरुपदेशात् इस भ्रमजालसं
सारसै अलग होय करिके ऐसे पुकारताहैके वो मर्यो वो मरताहै मैंतो न
हीं मर्यो नमरताहूं इत्यादि कोहू मुमुक्षतो ऐसा बोलताहे बहुरि जेसै ब
लता जलता हुवा घरमेंसे कोहू निकस करिके बाहिर सडक चोगानमे दिल
का दिलमे येह बिचार करताहैंके घर जलगयो बलगयो अर घरके भीतर
शुभाशुभ अमुकी २ वस्तथी सोबी जलगई बलगई अब किसकूं क्या कहूं
यदि कहूंतो क्या वह वस्तु अब अमुकी शुभाशुभ लाभ होएगेकी नाही वास्तै
बोलणा वृथाहे तैसेही कोहू मुमुक्ष गुरुपदेशात् भ्रमजाल संसारसें अ
लग हुये पश्चात् बिचार द्वारा देखताहैके पुद्गल धर्माधर्माकाश काल इन
पांचमे ज्ञानगुण स्वभावहीसे नाहीं अर मेरा स्वरूप स्वभावहे सो अब गुरु
कृपा द्वारा ज्ञानसे तन्मयिहे वास्ते बोलणा वृथाहे ऐसे कोहू मुमुक्ष नबो
लताहे १ जैसे ज्वरके जोरसे भोजनकी रुचिजाय तैसेही मोह कर्मसे अप
णा स्वभाव सम्यक् ज्ञानकूं येक तन्मयि समजताहे मानताहे कहताहे

ऐसा मिथ्याद्रष्टीकूं स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव सूचक उपदेस प्रिय नही ला
गतेहै १ जैसे सूर्यका प्रकाशमे अनेक प्रकारकी शुभाशुभ वस्तु काली पीली
धोली हरित रतनदीप चमक दमक पाप अपराध देणा लेणा दान पूजा भो·
ग जोगादिककूं देखताहै अर सूर्यका प्रकासकूं अर सूर्यकूं नही देखताहै
सो मूर्खहै तैसैही स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका प्रकाशमै ये
ह लोकालोक जगत संसार कामकुशील क्रोध मान माया लोभादिक दीख
ताहै ताकूं तो मिथ्या दृष्टी देखतोहै अर पलट वा उलट हो करिके स्वस्वरूप-
सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव सूर्य परमातमाहै ताकूं नही देखतोहै सोही मि
थ्या द्रष्टीहै १ स्वभाव सम्यक् ज्ञानहै तासे कोई वस्तु तन्मयि नाही उसी व
स्तुका स्वभाव सम्यक् ज्ञानके त्यागहै १ मरजावै जलजावै गलजावै बलजा
वै इत्यादि अनेक प्रकारका शुभाशुभ कष्ट करते संतेबी स्वस्वरूप स्वानुभव
गम्य सम्यक् ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्ठीका प्रतक्ष्यानुभव- ६१
की परमावगाढता अचलताका अखंड लाभ नही होवै सतगुरु महाराज स

हज बिना परिश्रम शुभाशुभ कष्ट नकरते संतेही सदाकाल ज्ञानमयि जाग-
ती ज्योतिका तन्मयि मेल करा देताहै धन्यहै गुरू १ बेदकहिये केवलीकीदि
व्यध्वनी सास्त्र कहिये महा मुनीका बचन तिनसैबी सो स्वस्वरूप सम्यक्
ज्ञानमयि सदाकाल जागती ज्योति परब्रह्म प्रतक्ष्यानुभव नहीं जाणवामै
आवे बहुरि वो सम्यक् ज्ञानमयि सदाकाल जागती ज्योति परमातमा है सो
पांच इंद्री षष्ठम मनसैबी प्रतक्षानुभव नहीं जाणवामै आवे बहुरि सत्-
गुरू सहज स्वभावहीसै बिना परिश्रमही सदा काल जागतीज्योति ज्ञानम
यि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्ठीकी तन्मयिता कर देताहै गुरु धन्यहै १
मनकूं बडे आश्चर्य होताहै क्याके पांच इंद्री षष्ठम मनसै अर केवलीकी दिव्य
ध्वनीसें बहुरि बेद पुराण सास्त्र सूत्र पढणेसे वाचणेसे तो वोसम्यक्ज्ञान-
मयि सदाकाल जागती ज्योति नहीं जाणवामें आवे फेर गुरू कैसे दीखाते
होगे कैसे जनादेते होगे क्या कहते होगे अर शिष्य बी कैसे समजता होगा हा-
हा हा हा गुरु धन्यहै हाय खेद गुरू नहीं होते तो मै इस भ्रमजाल संसार सैं-

भिन्न कैसे होना १ जैसे येकके अंक बिना बिंदु प्रमाणभूत नाही तैसे येकगु रु बिना त्यागी पणो पंडित पणो जोगी सन्यासी व्रत शील दान पूजा शुभाशुभ आदिक प्रमाण भूत नाही १ जैसे बीज राखि सुख भोग भोगवे जो किसाण जगमांहि तैसे स्वस्वरूपी सम्यक् ज्ञानमयि सम्यक् दृष्टी है सो अपणा आपमे आपमयि स्वभाव धर्मकूं आपका आपमे आपमयि समज करिके पूर्व पुण्य प्रयोगात् विषय भोगादिकका सुख भोगता है १ जैसे सुपेद काष्ट अग्नीकी संगतीसे कृष्ण काला हो जाताहे कोयला हो जाता है फेर कारण पाय पलट करिके अग्नीकी संगती करे तो कोयला जल बल करिके सुपेद खाक हो जाते है तैसे ही कोहू जीव विषय भोगादिककी संगती पाय करिके अशुद्ध हो जाते है फेर पलट करिके गुरु आज्ञा प्रमाण विषय भोगादिककूं अपणा स्वभाव सम्यक् ज्ञानसे भिन्न समज करिके पश्चात् विषय भोगादिकसे अतन्मयि होय करिके विषय भोगाकी संगति करे सो जीव परम पवित्र शुद्ध हो जातो है १ वस्तु स्वभावमे येह शुद्धा शुद्ध है सो स्यात् कथंचित् प्रकार १ स्वस्वरूप स्वानु

भवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूसे तूं मैयेह वह च्यार शब्द तन्मयी-
नाहीं १ जैसे काहू सूर्यका प्रकाशमैसे येक अणुरेणु उठाय करिके अंधका
रमे क्षेपदे तासे तो सूर्योदय कुछ कमती होते नाही बहुरि कोहू अंधकार
मैसे येक अणुरेणु उठाय करिके सूर्यका प्रकाशमे क्षेपदे तासे सो सूर्योदय
वृद्धी होते नाही तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञान सूर्योदयमैसे
येह अनंत संसार निकस करिके कहू कहां जाते रहे तासे तो सो सम्यक्ज्ञा
न सूर्योदय शून्य कमती होते नाहीं बहुरि कहु कहांसे येह संसार हे तैसाही
ओर अनंत संसार स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञान सूर्योदयमे आय पडे तासे सो स
म्यक्ज्ञान सूर्योदयकी वृद्धी होते नाहीं १ जैसे येक दीपकके बूज जाणेसे स
र्वपूर्ण अनंत दीपक नही बूजते तैसेही येक जीवके मरजाणेसे सर्व पूर्ण-
अनंत जेती जीवरासी च्यारगति चोराशी लक्ष योनी ज्ञान गुणमई जीवसें-
तन्मयि जिनेंद्र हे सो मरते नाही १ सर्वभाव पदार्थ वा द्रव्यक्षेत्र काल भवभा
व भोग जोग पाप पुन्यादिक संसारहे तासे स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्

स·टी· ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु तन्मायि नाही वास्ते स्वस्वरूप ज्ञानहै सो सर्व संसार दृष्टां·
६३ पाप पुन्य भाव पदार्थादिक जेता शुभाशुभ व्यवहारहै ताको निश्चय स्वभा
वहीसें त्यागीहै स्वसम्यक् ज्ञानहै ताके पर वस्तुका सहज स्वभावहीसे त्या
गहै केसे जेसे यथानाम कोपि पुरुषः परद्रव्य मिद मितिज्ञात्वा त्यजति तथा
सर्वान् परभावान् ज्ञात्वा विमुंचति ज्ञानी १ जेसे नाटिक की रंग भूमिमे कोहू
स्वांग धारण करिके नाचताहै ताकूं कोहू ज्ञाता जाणलेके तूंतो अमुकाहै त
ब वो स्वांग धारक पुरुष नाटिककी रंगभूमिमेसे निकस करिके यथावत् जैसा
को तैसो होय करिके रहताहै तैसेही येह लोकालोक रंग भूमिमे जीवाजीव
पुष्प गंधवत् येक होय करिके चोरासी लक्षयोनीमे नाचताहै ताकूं सतगुरु
ज्ञाता कहीके तूंतो जिसमे ज्ञानगुण तन्मयीहै सोही तूहै येह मनुष्य देव
तिर्यंच नारकी वा स्त्री पुरुष नपूंसकादिक स्वांगहै तूं स्वांगनाहीं बहुरि स्वांग-
का अर तेरा सूर्य प्रकाशवत् येक तन्मयिता नाही तूं इस स्वांगकूं जाणताहै येह ६३
स्वांग तेरेकूं जाणते नाहीं तू ज्ञानवस्तुहै बहुरि येह मनुष्यादिक स्वांगहै सो अ

ज्ञान वस्तु है जैसे सूर्यांधकारका मेल नाही तैसे येह मनुष्यादिक स्वांग है ता
का अर तेरा येक मेल नाही जैसे सूर्यका प्रकास इस पृथ्वीके ऊपर है ताका-
अर पृथ्वीका मेल है तैसे हे ज्ञान सूर्योदय तेरा अर येह मनुष्यादिक स्वांग है-
ताका मेल है हे ज्ञान देख तूं सर्व मायाजाल संसार स्वांगसे व्यतिरेक भिन्न है
श्रवण करि समजमै कहता हूं अंतमै दोय अक्षर आवै ताके द्वारा तेरा तूं ही
स्वानुभव लेणा कुमतिज्ञान १ कुश्रुतिज्ञान १ कुअवधिज्ञान १ मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान १
अवधिज्ञान १ मनपर्ययज्ञान १ केवलज्ञान १ ऐसे हे ज्ञान तूं सर्व संसार स्वांग
सें स्वभावहीसे भिन्न है तूं मनुष नाहीं तूं देव नाहीं तूं तिर्यंच नाहीं तूं नारकी-
नाही तूं स्त्री पुरुष नपुंसक नाही बहुरि मनुष्यादिक अर स्त्री पुरुष नपूंसकका
जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फल है सोबी तूं नाहीं तूं तो येक निर्मल नि
र्दोष निराभास शुद्ध परम पवित्र ज्ञान है जैसे काचकी हांडीमे दीपक है ताका-
प्रकास काचकी हांडीके भीतर बाहिर दोहू तरफ है तैसेही स्वसम्यक् ज्ञान दी-
पिकाको प्रकाश लोकालोकके भीतर बाहिर दोहू तरफ येक सोही है १ जैसे रूव

सं·दी र्णेकी छूरीसेबी कलेजा फट जाताहै तैसेही ज्ञानमयी जीवका पापसेबी भला दृष्टां·
६४ नाही होते अर पुन्यसेबी भला नाही होतें अर्थात् पाप पुन्यादिककूं सहज-
स्वभावहीसे देखता जाणताहै उसी ज्ञानमयी वस्तुसे हे जीव तेरा परमोत्तम
भला होवेगा १॥ ॥प्रश्न॥ ॥पाप पुन्य करणा के नाही करणा॥ उत्तर
॥ ॥पाप पुन्यसे अग्नि ऊष्णतावत् येक तन्मायि होय करिकें पाप पुन्य कर्ताहै
सो मूर्ख मिथ्यादृष्टीहै बहुरि जैसे सूर्यसे अंधकार भिन्नहै तदवत कोई पाप
पुन्यसे भिन्न होय करिके पश्चात् पाप पुन्य पूर्व कर्म प्रयोगात् कर्ताहै सो ज्ञा-
नी सम्यक् ज्ञान दृष्टीहै १ जैसे ज्येष्ठ वैशाख मासमे मध्यान्ह समय सूर्यका
प्रकाशमे मरुस्थल भूमिमे मृग मरीचका जल दीखताहै तदवत्‌ही स्वस्वरूप
स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमायि सूर्यका प्रकाशमे येह लोकालोक दीखताहै
ज्ञानकूं १ अभेदमे अनेक भेद अभेदसे तन्मायि जैसे वृक्ष अभेद नाहीसे त-
न्मायि अनेक भेद मूल साखा लघुसाखा फल पत्र फलमे अनेक फल अनेक फ ६४
लमे अनेक वृक्ष येक येक वृक्षमे अनेक लघु दीर्घ साखादिक अनंत भेदहै तैसे

ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि जिनेंद्र मूलमे अनंतजीवरा
शी भेदहे सो जिनेंद्रसे तन्मयी अभेदहै १ जैसे गंगा यमुनादिक नदी समु
द्रसे मिलीहे तैसेही गुरूपदेस पायकरिके सम्यक्दृष्टी जीव जिनेंद्रसे त
न्मयि मिलेहे १ जैसे येक स्रुवर्णसे अनेक नाम कडा मूंदडा कंठी दोरा
असरफी कांचन कनक हेम आदिहेसो तन्मयिवत् हे तैसेही स्वस्वरूपस्वा
नुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुमे येह जिनेंद्र शिव शंकर ब्रह्मा-
ब्रह्म विष्णु नारायण हरि हर महेश्वर परमेश्वर इश्वर जगन्नाथ महादेव आ
दि अनंत नाम तन्मयिवत्हे १ जैसे कोई पुरुष ऽस्त्रीका कपडा वस्त्र आभू
षणादिक धारण करिके अर्थात् स्रुंदर देवांगनावत् बण करिके नाटिककी
रंगभूमिमे नाचणे लग्यो तत् समय नाटिक देखणे वाले पुरुष मंडली कह
ताहेके हो हो हो क्या स्रुंदर स्त्रीहे ऐसा बचन सभा मंडलीका श्रवण करि
के सो स्त्री स्वांग पुरुष आप अपणे दिलमे जाणताहे मानताहेके मेंऽस्त्री मू
लहीसे नाही येह सभामंडलीके पुरुष मेरा निज स्वभाव गुण लक्षणतोजा

 णते नाही बिना समजसै येह मेरकूं ऽस्त्री कहता है मानता है जाणता है सो
 वृथा है तैसे ही स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानमयि सम्यक् दृष्टी आप अपणा अं
तः करणमै येह निश्चय समजता है मानता है के येह बहिर दृष्टिवान् मेरे
कूं स्त्री पुरुष नपूंसकादिक मानते है कहता है जाणता है सो वृथा है मेरो
स्वभाव सम्यक् ज्ञान है सो तो नऽस्त्री है न पुरुष है न नपूंसकादिक कोई
वी किंचित् मात्र स्वांग मेरा स्वरूप सम्यक् ज्ञानसै तन्मयि नाही १ जैसे·
येक पुरुष तो निर्मल नीरका भरया तलावके किनारे तिष्ठे हुये इच्छा प्रमा·
ण निर्मल नीर प्रतिदिवस पीयकरिकै सुखी है बहुरि दूजो कोई पुरुष त·
लावसै लक्षयोजन भिन्न येक क्षीरोदधि समुद्र निर्मल नीरको भरयो है ता
के किनारे तिष्ठे हुये इच्छा प्रमाण निर्मल नीर पीय करिके सुखी है तैसे ही
संसारमै पूर्वकर्म प्रयोगात् कुछ किंचित् संख्या प्रमाण कालपर्यंत रहणे
वाले सम्यक् दृष्टीका बहुरि संसारसै भिन्न मोक्ष है तामै रहणेवाले स्वस·
म्यक् ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्टीका अर्थात् दोहूका सुख सम समान है १

जैसे दुग्धका भरया कलसमे येक नीलमणी रत्न डाल दीजिये तब दुग्धका
अर नीलमणी रत्नका रंग अर दुग्धकारंग येकसाही नीलमणीरतन तेजव
त् समान भाष होताहै तैसैही ज्ञान ज्ञेय येकसा भाष होताहे परंतु ज्ञान-
अज्ञान कदाचित् कोईप्रकारबी येक तन्मायि होते नाही १ जैसे माटीका
घटमे घृत भरयोहोय तिसकारण तिस घटकूं घृतघट कहते है कहो भला
परंतु घर माटीको माटीमयिहै माटीका घटके अर घृतके अग्नि ऊष्णताव
त् येक तन्मायिना नहुई नहोवेगी नहै तैसैही ज्ञानमयि जीवके अर अजीव
ज्यो तन मन धन बचनादिकके अर जेता तन मन धन बचनादिकका शुभा-
शुभ ब्यवहार क्रिया कर्महै ताके परस्पर सूर्य प्रकाशवत् न येक तन्मायिता
हुई अर नहै नहोवेगी १ जैसे लाल लाखके ऊपर लग्यो लाल रतनतार तन
मे लाखकी लाली अर रतनकी लाली दोहू लाली येकसी तन्मयिवत् दीरव-
तीहै परंतु है वह दोहू लाली भिन्नभिन्न ताकूं असल जहोरी होताहे सो दो
हू लालीकूं भिन्न भिन्न समजताहे मानताहै कहताहै तैसैही आकास अ-

मूर्ति निराकार अजीव मयि है ताका बहुरि स्वसम्यक् ज्ञानमयि अमूर्ति निराकार जीव मयि है ताका परस्पर अमूर्ति अमूर्तिपणा बहुरि निराकार निराकारपणा येक तन्मयिवत् मिथ्या दृष्टीकूं भाष होताहै परंतु सूक्ष्म दृष्टिवान् जो स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानी सम्यक् दृष्टी दोहू अमूर्तिकूं बहुरि दोहू निराकारकूं भिन्नभिन्न समजताहै मानताहै कहताहै १ परमातमा स्वसम्यक् ज्ञानमयि है सो आदि अंत पूर्ण स्वभाव संयुक्त है येह पर संजोग पर रूप कल्पना रहित मुक्तहै॥ प्रश्न ॥कैसेहै उत्तर श्रवणकरो जैसे प्रथम आदिमे पूर्णचिन्ह बिंदुहै सोकी सोही अंतमेबी पूर्णचिन्ह बिंदूहै देखो स्वानुभव दृष्टिके द्वारा आदि ० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० अंत १ बहुरि जैसे सूर्य प्रातकाल आदिहै सोही सूर्य सायंकाल अंतहै तोक्या मध्यान्हकाल नहीहै अर्थात् है तैसेही स्वसम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव सूर्य सदाकालहै १ "जैसेजैसो पीवैपाणी तैसेतैसी बोलेवाणी" ६६
तैसेही जिसकूं गुरुपदेस द्वारा आपका आपमे आपमयि स्वसम्यक् ज्ञाना

नुभवकी प्रातकी प्राप्ति अचलहुई सो स्वमुखवात् ऐसे बोलताहै के स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै सोही सोहं प्रश्न ऐसेतो बहुतसे बालगोपाल बोलतेहैं उत्तर जैसे रात्रीसमय एकस्वान प्रत्यक्ष चोरकू देख करिके भूक भूक बोलताहै ताका शब्द श्रवण करिके सहरमे बहुतसे श्वान तदवत्ही भूक भूक बोलताहै तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानानुभव ज्ञानीका स्वमुखवात् शब्द श्रवण करिके सम्यक् ज्ञानानुभव रहित मिथ्यादृष्टी बी ऐसेही बोलता हैके हमही परमातमाहै मिथ्यादृष्टीकूं येह निश्चय नाहीके शब्दके-अर सम्यक् ज्ञानके परस्पर सूर्य अंधकार कासा अंतर भेदहै तथा हमही परमातमाहै बहुरि हम परमातमा नाही इत्यादिक् विकल्प वा अध्यवसायसे सर्वथा प्रकार भिन्न येह सम्यक् ज्ञानमई वस्तुहै सो परमातमाहै १ बहुरि " जैसेजसो खावे अन्न ताके तैसो होवे मन्न " तैसेही किसी मुमुक्षकूं-गुरुपदेस द्वारा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानानुभवकी प्रातकी प्राप्ति ताकी अचल अवगाढता हुई ताको मन ऐसो हो जातोहैके ऊपरतो व्यवहार

करै पण भीतर स्वप्न समान जूं भाषै तथा ताको मन ऐसो हो जातोहै के मेरो
मन है परंतु मै मन नाही बहुरि मनका जेता शुभाशुभ व्यवहारहै सो बी मे
नाहीं अर जेता शुभाशुभ व्यवहारका सुरव दुःरव फलहै सो बी मै नाहीं बहु
रि मै हैसो येक येह शब्दहै वास्तै मै शब्दकूं अर मनादिककूं सहज स्वभावही
सै जाणताहै सोही सोहं अत्रस्थल पर्यंत मन हो जाताहै जहां पर्यंत मन है
अर मनकी गमनताहै तहां पर्यंत सम्यक् ज्ञानमयि परमार्थ परमातमा नसं
भवे स्यात् १ जैसे मैला मल मूत्रमे रतन पड्योहै ताकूं लेणा जोग्य है मल मू
त्रकी मैलाई दुर्गंधतासै अपणा द्वेष गिलान भाव धारण करिकै रतनकूं नहीं
ग्रहण कर्ताहै सो मूरर्वहै तैसेही तन मन धन बचनादिकमे पड्योहै स्वसम्यः
क्ज्ञान रतन ताकूं कोई तन मन धनादिकका शुभाशुभ विकार देरव करिकै ता
की गिलान धारण करिकै स्व सम्यक्ज्ञान रतनकूं तन्मई धारण नही कर्ताहै सो
मूरर्व मिथ्या दृष्टीहै १ जैसे कोई कहीके सूर्य कहां रहताहै ताको उत्तर ऐसो है ६७
के सूर्य सूर्यके भीतर तनमयी रहताहै तैसेही स्वसम्यक्ज्ञान सूर्यहै सो स्व-

सम्यक् ज्ञान सूर्यहीमे रहता है निश्चय नयात् १ जैसे पुष्पमे सुगंधहे तथाति
लमे तैलहै वा जैसे दुग्धमे घृतहे तैसेंही येह लोकालोक है तामे तथा तन मन
धन बचनहे तामे बहुरि तनमन धन बचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया
कर्महै तामे तासें अतन्मयि सहज स्वभावहीसे स्वसम्यक् ज्ञानहे १ हे मुमु
क्षु मंडलीहो स्वसम्यक् ज्ञानसें तन्मयि होय करिके देखो स्वसम्यक्ज्ञानव-
स्तु स्वभावमे को बिधिको निषेध १ जैसे दर्पणमे काला पीला लाल हरित-
आदिक अनेक रंग बिरंग विकार दीखताहे सो दर्पणका तन्मयि नाही तैसेंही
स्वच्छ स्वसम्यक् ज्ञानमयि दर्पणमे येह राग द्वेष क्रोध मान माया लोभ काम
कुशीलादिकका विकार तन्मयिसा दीखता है सो स्वच्छ सम्यक्ज्ञान मयि पर
मातमाका नाही १ जैसे नवका रंगरंगीली हे सोबी पार उतार देती हे बहुरि रंग
रंगीली नवका नहीहे सोवी पार उतार देतीहे तैसेंही स्वानुभव ज्ञान मयिको
हूगुरु हे सो न्याय व्याकर्ण कोश अलंकार काव्य छंदादिक युक्तहे सोवी संसा
र सागरसें पार उतार देनाहे बहुरि कोहू गुरुहेसो स्वसम्यक् ज्ञानानुभवहे परं

सं॰दी॰ तु न्याय व्याकर्ण कोश अलंकार काव्य छंदादिक रहितहै सो बी संसार सागर- दृष्टां॰
६८ सैं पार उतार देताहै १ जैसै गोरस अपणे दुग्ध दही घृत मांखण आदि पर्याय
सैं भिन्न नाही बहुरि दुग्ध दही घृत माखण आदिकहै सो गोरससैं भिन्न नाही
तैसैही स्वसम्यक् ज्ञान मयि परमातमासै सुख स्वसत्ता चेतन जीव ज्ञानादिक-
भिन्न नाही बहुरि सुख स्वसत्ता चेतन जीव ज्ञानादिकहै सो स्वसम्यक् ज्ञानमयि
परमातमासै भिन्न नाही १ जैसै नास्यो धूलीकूं धोवणेवालो सुवर्णकी कणि
काकूं नही जाणताहै तो इच्छा आवैजेना कष्ट करो धूली धोवणेका उनकूं कदा
चितबी सुवर्ण लाभ होते नाहीं तैसैही कोई मुनी साधू सन्यासी भोगी जोगीग्र
हस्ती आदि कोई स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाकूं तो जाणते नाहीं अर व्रतज-
प तपध्यान दान पूजादिक का बहु प्रकार कष्ट करतेहै तो करो उनकूं कदाचित् बी-
स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाको लाभ होते नाहीं १ जिस जती व्रती जोगीजं
गम मुनी परमहंस वा भोगी ग्रहस्ती आदि भेषमै स्वसम्यक् ज्ञानानुभव अचल ६८
हुवा सो जती व्रती जोगीजंगम मुनी परमहंस भोगी ग्रहस्ती धन्यहै धन्यहै-

धन्यहै सहस्त्र बेर धन्यहै १ जैसै अग्नि द्रव्यहै तामें ऊष्णता का गुण है जो इस अग्नि उष्ण गुणविषे भिन्न भई तो इंधनकूं जलाय न शकै जो कदाचित् अग्नी से उष्ण गुण भिन्न होय तो काहे करि जलावे अग्नी भिन्न हुई तो उष्णगुण कि-सके आश्रय रहै निराश्रय हुवा वहबी जलावणेकी क्रिया ते रहित होय गुण-गुणी आपसमे जुदे हुये कार्यकारणकों असमर्थहै जो दोहूकी येकता हुई तो जलावणेकी क्रिया विषे समर्थ होय तैसेही सतगुरू उपदेसात् केवल ज्ञानगु-णीका अर ताका गुण देखणा जाणनेका अर्थात् दोहूकी येकता तन्मयिता हो-य तब सहज स्वभावहीसें अष्टकर्म काष्टकूं जलावणेकी क्रियाविषे समर्थ हो-य १ जैसे सूर्य मेघ पटल करिके आच्छादित हुवा प्रभारहित कहिये है परंतु सो सूर्य अपणे स्वभावतें तिस प्रभासे त्रैकाल भिन्न होय नाही तैसेंही स्वसम्यक् केवल ज्ञानमयि सूर्यके करम भरम वा द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्म स्वरूपी बा-दलपटल करि आच्छादित हुवा ताकूं ज्ञानप्रभा रहित कहिये है परंतु सो स्वस-म्यक् केवल ज्ञानमयि सूर्य अपणा आपमे आपमयि आपका गुण स्वभाव-

ज्ञान प्रकाशसे त्रैकाल कोई प्रकारबी भिन्न होय नाही १ जैसें पाचक हांती-
सीजती हांडी मैंसें येक चावल देखिये तो सीजगयो तो सीजताहुवा सर्व
चावलांको निश्चयानुभव होजाताहै के सर्व चावल सीजगये तैसें ही अनंत
गुण मयी स्वसम्यक् ज्ञान परमातमा ताका येकबी गुणको किसीकूं गुरुपदे-
स द्वारा अचलानुभव हुवो तो निश्चय समजणा के जेता परमातमाका गुण है
तेता सर्वगुणाका ताकूं अचलानुभव हो चुक्या १ जैसें घटके प्रथम कुंभकार
है तैसें तन मन धन बचनके बहुरि जेता तन मन धन बचनका शुभाशुभ व्यव
हार क्रिया कर्मके प्रथम आदिनाथ स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै १
जैसें कुंभकार घटचक्रादिकसे तन्मयि होय करिके घटकर्म कूं नही कर्ता है तैसें
ही स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै सो तनमन धन बचनादिकसें तन्मयि हो
य करिके शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म नही कर्ता है १ जैसें नय दोय है येक द्र
व्यार्थक येक पर्यायार्थ जैसें सुवर्ण सुवर्णत्व करिके नउपजे है नबिनसे है बहुरि ६९
तिसहीसें तन्मयि कटिकादिक पर्याय विनसे है उपजे है सो बी कथंचित् प्रकार

तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि परमातमा स्वस्वभावमै नउ
पजैहै नविनसैहै बहुरि तिसहीसै तन्मायि जीव चेतनादिक पर्याय है सो उपजै है
विनसैहै सो बी कथंचित् प्रकार १ जैसै समुद्र अपणे जल समूह करि उत्पाद व्यय
अवस्थाकूं नाही प्राप्त होता अपणे स्वरूपकरि स्थिर रहैहै परंतु च्यारही दिशा
नकी पवन करिके कल्लोलका उत्पाद व्यय होयहै तो बी सदा नित्य टंकोत्कीर्ण जै
साहै तैसाहै तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानार्णव केवल ज्ञानमयि
समुद्र अपणे स्वगुण स्वभाव समरस नीरसमूह करि उत्पाद व्यय अवस्थाकूं -
नाही प्राप्त होताहै अपणे स्वरूपकरि स्थिर रहैहै परंतु मनुष देव तिर्यंच नारकी
येही च्यार दिशानकी पवन करिकै संकल्प विकल्प राग द्वेषादिक कल्लोलका उ
त्पाद व्यय होयहै तोबी सदा नित्य टंकोत्कीर्ण जैसाहै तैसाहै १ जैसै सुनार आ
भूषणादिक कर्मको कर्ताहै परंतु आभूषणादिक कर्मसै तन्मयि तत् स्वरूप हो
य करिकै नाही कर्ताहै तैसैही आभूषणादिक कर्मका फलकूं तत्स्वरूप तन्मयि
होयकरिकै नाही भोक्ताहै तैसैही स्वसम्यक् स्वानुभवज्ञानी सर्व संसारका शुभा

शुभ कर्म कर्ता है परंतु संसार से अर संसारका शुभा शुभ कर्ता कर्म क्रियादिक सें तन्मयि तत्स्वरूप होयकरिके नाही कर्ता है तैसेही संसारका शुभाशुभ कर्म-काफलसै तत्स्वरूप तन्मयि होय करिकै नाहीं भोक्ता है १ अधुनाचेत् १ वस्तुका स्वभाव वचनसैं तन्मयि नाही अर्थात् वचनगम्य नाही लोका लोक कूं वहुरि जे ता लोका लोकमे अपणे अपणे गुण पर्याय सहित द्रव्य अचल अनादि से जैसा है तै सा ताकूं येकही समयमै सहजही निराबाधि पूर्वक जाणता है देखता है सो ही· सर्वज्ञ देवहै ऐसा सर्वज्ञ देवसे तन्मयि होय करि तिसहीका स्वस्वानुभव ज्ञान मे-लीन है सो संदेह संका उपजावते नाहीं १ जैसे चंदन वृक्षके जहर विष मयि सर्प ल पटा रहता है तोबी चंदन अपणा गुणस्वभाव सुगंध पणा सीतल पणाकूं छोड करि कै जहर विषमयि विषवत् होते नाहीं तैसेही स्वसम्यक् दृष्टी के पूर्व कर्म प्रयो-गात् शुभाशुभ कर्म लागरहा है तिस करिके तिससे तन्मयि होते नाही अप णा स्वभाव सम्यक् ज्ञानादि गुणकूं छोडते नाही स्यात् १ जैसे सूर्यके भीतर सूर्य से अंधकार तन्मयि नाही तैसेही स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि सूर्य

के भीतर अज्ञान तन्मयी नाहीं १ जैसे जिस नगर मे अज्ञानी राजाहे ता
के ऊपर केवल ज्ञानीराजा हो सक्ताहे बहुरि जहां केवल ज्ञानही राजाहे
ताके ऊपर कोईबी अधिष्ठाता नसंभवे अर्थात् तैसेही स्वस्वरूपी स्वा-
नुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि त्रैलोक्यनाथ परमातमाके ऊपर तासे अधि
क कोई नहे न होवेगा न कोई हुवो १ जहां भरम होताहे तहांही भरम-
नाहीहे जैसे सरल मार्गमे सायंकाल समय कोहू रस्सीकूं पड़ी देख करिके
संकावान हुवो के हाय सर्पहे तब कोहू गुरु कहीके हेवत्स भय मतिकरे येह-
तो रस्सीहे सर्पनाही १ तन मन धन बचनसे बहुरि तन मन धन बचनादिक
काजेता शुभा शुभ व्यवहार क्रिया कर्म है तासे तत्स्वरूप तन्मयि होणेकी जि
सके स्वभावसेही इच्छा नाही सोनर ज्ञानीहे १ कर्तासे होवे तिसको नाम क
र्म है· दान पूजा व्रतजप तप समायिक स्वाध्याय ध्यानादिक शुभकर्म है पा
प अपराध चोरी हिंसा कुशीलादिक अशुभ कर्महे अर्थ येहके शुभाशुभ
कर्मको कर्ताहे सो शुभाशुभ कर्मसे अग्नी ऊष्णतावत् येकआपकूं तन्म

यि समज करिके मान करिके कर्ता है सोतो मिथ्या दृष्टी है बहुरि शुभाशुभ कर्मसे आपकूं सर्वथा प्रकार भिन्न समज करिके फेर शुभा शुभ पूर्व प्रयोगात् कर्म कर्ता है सो स्वसंम्यक् दृष्टी है धाय बालक न्यायवत् १ जैसे सूर्यके भीतर प्रकास तन्मयि है तैसे जिस वस्तुमे देखणे जाणनेका गुण तन्मयि है सोही वस्तु दर्शण है और वस्तुकूं दर्शण मानता है समजता है कहता है सो मूर्ख मिथ्या दृष्टी है १ जहांतलक घरमे अंधकार है तहांही प्रकाश है क्यूंके प्रकाश नही होते तो अंधकारकी खबर कैसे होती कैसे जाणते जिसका प्रकासमे सूर्य दीखता है अर अंधकार आदि दीखता है सोही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्ठी है १ जैसे जहां प्रथीके ऊपर कूप खोदेगा तहांही पाणी नीर निकलता है तैसेही तन मन धन वचनादिकके भीतर बहुरि तन मन धन बचनादिकका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म है ताके भीतर आकाशवत् व्यापक स्वसम्यक् ज्ञानमयि ब्रह्मकूं कोई खोजेगा तो प्रगट प्रसिद्ध होता है १ शरीर पिंडसें स्वसंम्यक् ज्ञानमयि परमातमा तन्मयि

होते तो कदाचित् कोई प्रकारवी कोईवी नही मरते तथा येह लोकालोक जगत संसार दीखता है तासे सो स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा तन्मयि होते तो हरकि सीकूं दीखतो हो हो हो ऐसा अपूर्व विचारकी पूर्णता श्रीसद्गुरूके चरणकी सर णबिना नही होगी १ जैसे जहांलग पक्षी के दोय पक्ष तन्मयि है तहांपर्यंत प क्षी इदर उदर भ्रमता है उडता बैठताहै बहुरि जिस समय तिस पक्षीकी दोहू प क्ष खंडन निर्मूल होय जाय तब सो पक्षी इदर उदर भ्रमण करि रहित होय ज हांको तहां स्थिर अचल रहता है तैसेही जहां पर्यंत जीवके निश्चय व्यवहार की तन्मयिताहै अवगाढताहै तहां पर्यंत च्यारगति चवरासी लक्ष योनिमे भ्र मण कर्ताहै बहुरि जिस समय जिसजीवके काल लब्धी पाचक द्वारा तथा सतगुरूके उपदेस द्वारा निश्चय व्यवहारकी पक्ष खंडन निर्मूल होवैगी तत् समयही च्यार गति चवरासी लक्ष योनीमे भ्रमणकर्ते रहित होय जहांके तहां अचल स्थिर रहता है १ जैसे उडद मुंगकी दोय दाल हुये पश्चात् मिल ते नाही अर बोवे तो उगने नाही तैसेही जीवाजीव की जहां सर्वथा प्रकार भि

 न्नता है गुरु प्रसादात् तहां जीवा जीवकी तन्मयिता येकता नाही दोहूकी ये
 कतासे संसार उत्पन्न होते थे सो अब होएको नाही १ जैसे अंधाके स्कंधाके·
उपर बैठ पांगुलो इहां विचार करो देखो अंधो तो चलता है अर पांगुलो देखता है
तैसेही अंधवत् येह संसार चक्र ताके ऊपर स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
न सो पांगुलावत् संसार चक्र के ऊपर बैठे हुवो केवल देखता जाणता है १ देख
णा जाणना येह निजधर्म केवलज्ञानका है १ प्रश्न संसार कूं चक्रसंज्ञा कैसे
है उत्तर जाग्रतमें येह संसार दीखता है सोही पलट करिके स्वप्नामे दीखता
है बहुरि जो संसार स्वप्नामे दीखता है सोही पलट करिके जाग्रतमे दीखता है·
ऐसे येह संसार चक्र फिरता है प्रश्न येह संसार चक्र किस भूमिकाके ऊपर
फिरता है उत्तर अलोकाकाशमे अणुरेणुवत् येह संसार चक्र आप आप
हीके आधार जल कल्लोलवत् फिरता है प्रश्न सुसुप्ति और तुर्या समय-
संसार चक्र कहां रहता है कहां फिरता है उत्तर येक पुरुष सुलोचन अर्था
त् ताके नेत्र तो है परंतु ताके तन मन धन बचनादिक मूलही से नाही ताके आ

गे येह ससार चक्र भ्रमण युक्त नाचनाहै स्वलोचन पुरुष देखताहै परंतु क-
हता नाही कारण कहणा बोलणा बचनहैसो पुद्गलहै बहुरि इनकूं सहजस्व
भावहीसे देखत जाणतहै सो स्वानुभवसम्यक् ज्ञानहै १ जैसे कमती ज्यादा
भोजन जीमणेसे बेमारी दुःख होताहै तैसेही काहू संसारका विषय भोग
कमती ज्यादा भोक्ताहै कर्ताहै सोही दुःखी बेमार होताहै अर्थात् जहां बरा
बरका व्यवहार क्रिया कर्महै तहां विरोधभाव नसंभवे अर्थात् कमती ज्यादा
जहां व्यवहारहै तहां विरोध संभवेहै. जाति पक्ष छोडकरिके अविरोध वस्तु-
को स्वानुभव लेणा १ शब्दातीतको शब्द सूचैहै १ जो वस्तु निरंतरहै तामेंवि
धि निषेधको अवकाश कदापि तासे तन्मायि नसंभवे १ जैसे वैद्य पुरुषहै सो
विषकूं उपभोगता संता मरणकूं नही प्राप्त होताहै कारण तिस वैद्यके स-
मीप दूसरी विषनासनी दवाई है तैसेही जिसके समीप स्वसम्यक् ज्ञान तन्म
यिहै सो कर्मजनित पूर्व प्रयोगात् विषय उपभोगते संते बी मरते नाहीं १ जै-
से सुवर्ण अग्नीसे तप्त होते संते बी अपणा सुवर्णपणा आदिगुण स्वभाव

छोडते नाही तैसेंही स्वसंम्यक् ज्ञानदृष्टि पूर्व कर्म पियोगात् कर्मवेदनादुःखरू-
पी अग्नीमे तपायमान होते संतेबी अपणा स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानादिगुण छोड
ते नाहीं १ जैसें जलतीहुई तेलकी कडाईमें अपूप वत् सूर्यको प्रतिबिंब जलता
है बलताहै तोबी आकाशमे सूर्य है सो नजलता न बलता तैसेंही संसारमे-
स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि परमातमा मरताहै जनमताहै तो
बी स्वस्वभाव कदाचित् कोई प्रकारबी नमरता नजनमता १ जिसकोगुरुपदे
सात् स्वभावदृष्टि अचलहुई सो सहस्रबेर धन्यबाद योग्यहै १ जैसें मदिराके ती
व्र अतिभावकूं जाणकरिके तिस मदिराकूं कमतीबी नही पीताहै अर ज्यादा
बी नही पीताहै इसप्रमाण मदिरा पीवते संतेबी मदोन्मत्त नही होते तैसें
ही स्वसम्यक् दृष्टी मोह मदिराके तीव्र अतिभावकूं जाणकरिके तिस मोह म
दिराकूं कमतीबी नहीग्रहण कर्ताहै बहुरि अधिक विशेषबी नही ग्रहण कर्ता
है इसप्रमाण मोह मदिराकूं स्वसम्यक् दृष्टी ग्रहण कर्ते संतेबी स्वसम्यक् ज्ञा
न स्वभावकूं छोड करिके मोह मदिरासें अग्नि ऊष्णतावत् येक तन्मयि होते-

नाही १ जैसे वृक्षके लगे हुये फल येकबेर परिपक्क होय परिजाय तो वोफल फेर पलट करिके उस वृक्षके नाहीं लागतो तैसै ही कोईजीव काल पाय करिके गुरुपदेस द्वारा अपणा आपमे आपमयि स्वसम्यक्क ज्ञानानुभव अचल परिपक्क पूर्णानुभव होय करिके येक बेर संसार जगनसे भिन्न हुये पश्चात् फिर पलट करिके संसार जगतसें तन्मयि होते नाहीं १ ओरबी तीन दृष्टांत द्वारा स्वसम्यक्क ज्ञानानुभव लेणा जैसे दही मेंसे माखण घृत भिन्न हुये पश्चात् पलट करिके दहीमे मिलतो नाही १ वृक्षकी जड उपडे पश्चात् कुछ काल पर्यंन फल फूल पत्ता हरित रहता है परंतु दस पांचदिवसमे स्वयमेवही रूष्क सूक जाता है १ चणीक चीणा भूजदिये पश्चात् बोवै तो उगते नाही अर खावै तो स्वाद लागते १ तिलमें सें तेल निकसे पश्चात् पलट करिके नही मिलते १ इत्यादि० जैसे समुद्र है सो बहुतसे रतन आदि अनेक वस्तु सें भर्‍या होय है सो येक जल करि भर्‍या है ताहू तामे निर्मल छोटी बडी अनेक लहरी कल्लोल उठे है ते सर्व येक जलरूपही है तैसेही स्वसम्यक्क ज्ञानमयि समुद्र है सो रतनत्रय सम्यक्क दर्शण सम्यक्क ज्ञा

 न सम्यक् चारित्र येही तीन रतन आदि अनेक शुभाशुभ शब्दादिक वस्तुसें
 भर्‍यो होयहै सो येक समरस जलकरि भर्‍याहै तोहू तामें निर्मल कुमतिज्ञान
कुश्रुति ज्ञान कुअवधिज्ञान बहुरि मतिज्ञान श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान मनपर्य-
यज्ञान केवलज्ञान आदियेही छोटी बडी तामें अनेक लहरी कल्लोल उठेहै तैस
र्व येक स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्व समरस जल नीरहीहै १ जैसें लोद फिटकडी
का पुटबिना मजीठ रंगमें वस्त्रभिजोरहे चिरकाल तोहू वस्त्र सर्वथा नही होवे
लाल तैसेंही जीव संसारमे चिरकालसे है सो सर्वथा प्रकार कदाचित् कोई प्र
कारबी अपणा जीव स्वभाव छोड करिकें अजीवसे येक तन्मयि होते नाही १ जैं
से निश्चय करि सुवर्ण है सो कर्दमके बीच पड्याहै तोहु कर्दम करिकें तन्मयिलि
प्त होते नाही सुवर्णके तन्मयि कांई लागती नाही तैसेंही स्वसम्यक् दृष्टी नि-
श्चयकरि संसार कर्दमके बीच पड्या है तोहु ताके राग द्वेष रूप मेलाईसें तन्म
यि लिप्त होते नाहीं १ जैसें शंख श्वेत स्वभावहै सो शंख सचित्त अचित्त मिश्रि
त अनेक प्रकार द्रव्यनकूं भक्षण करैहै तोहू ताका श्वेत भावहैसो कृष्ण करणेकूं

समर्थ नाही हूजियेहै तैसेही स्वसम्यक् दृष्टीका स्वसम्यक् ज्ञानमयि विशुद्धस्व
भावहै सो सचित्त अचित्त मिश्रित अनेक प्रकार द्रव्यनका भोग उपभोगकूं भो
गता संताबी तोहू ताका स्वसम्यक् ज्ञानमयि विशुद्ध स्वभाव है सो अजीव अचे
तन अज्ञानमयि भाव करणे कूं समर्थ नाही हूजियेहै १ जैसे सहस्त्रमण कां
चखंडमे येक असल रतन पड्योहै तोबी सो असल रतन अपणा रतन स्वभाव
गुण लक्षणादिक कूं छोड करिके तिस काच खंडवत् होते नाही तैसेही स्वसम्य
क् दृष्टी अनंतअज्ञानमयि संसारमे पड्योहै तो बी अपणा स्वसम्यक्ज्ञान स्व-
भावकूं छोड करिके संसार अज्ञान मयिसे तन्मयि तत् स्वरूप होते नाही १ जैसे दु
ग्ध जल मिले हुयेकूं हंस जल छोड करिके दुग्ध कों ग्रहण कर्ताहै तैसेही क्षीरनी
रवत् मिले येह संसार अर स्वसम्यक् ज्ञान ताकूं स्वसम्यक् दृष्टिहंस अज्ञान मयि
संसारकूं छोड करिके स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावकूं ग्रह-
ण कर्ताहै १ जैसे हस्तीका मस्तगमे मांस अर मोती मिलेहै तामै काग पक्षी है-
सो तो मोतीं छोड करिके मांस ग्रहण कर्ताहै बहुरि हंस पक्षी हैसो मांस छोड क

रिकै मोती ग्रहण कर्ताहै तैसैंही मिथ्या दृष्टी तो स्वसम्यक् ज्ञानगुण छोडकरि·
कै अज्ञानकूं ग्रहण कर्ताहै बहुरि स्वसम्यक् दृष्टी अज्ञान औगुणकूं छोड करिकै
स्वसम्यक् ज्ञान गुणकूं ग्रहण कर्ताहै १ जैसैं पर वस्तुकूं परवस्तुसै तन्मायि होयक
रिकै परवस्तुकूं ग्रहण कर्ताहै सो निश्चय तस्कर चोरहै सो इदर उदर शंका सहित भ्र
मण करैहै बहुरि अपणा आपमै आपमयि आपहीका धन ग्रहण कर्ताहै सो
साचो सत्य निश्चय साहुकारहै सो इदर उदर निःशंका सहित भ्रमण कर्ताहै बेफि
कर तैसैंही मिथ्या दृष्टीहै सोतो तस्कर चोरवत् शंका सहित संसार चारगति चोरा
सी लक्षयोनिमै भ्रमण कर्ताहै बहुरि स्वसम्यक् दृष्टीहै सो जैसैं कुंभकारका चक्र
के ऊपर अचल बैठी हुई मखी परिभ्रमण करै है तैसैंही सत्य साहुकारवत् स्वस
म्यक् दृष्टी हैसो निःशंक बेफिकर संसार च्यार गति चोरासी लक्षयोनीमै भ्रमण क·
रैहै १ जैसैं येक पुरुष नदीके तटपर खडोहुवो तीव्र वेगसे वहताहुवा नीरकूं येका
ग्रह ध्यान करिकै देखैथा तिस कारणसे उसकूं येह भ्रांति हुई के हम भी वहे जाते
है· पुकारताथा दुःखीथा ताकूं दयाल मूर्ति सद्गुरु कहताहै के तूं दुःखी मति हो तूं

नही वहताहै येहतो नदीको नीर वहताहै अबतूं इस दुःखसें सर्वथा प्रकार भिन्न
होणेके अर्थ सर्वथा प्रकार वहताहुवा नदीका नीरकूं मतिदेखै तूं तेरीतरफ दे-
ख नबगुरु आज्ञाप्रमाण भ्रांतिमै वहता पुरुष वहता हुवा नदीका नीरकूं देख-
णा छोडकरिकै अपणो आपकी तरफ देख करिकै आपकूं अचल नही वहता स-
मज करिकै बहुत कुसी आनंद हुवो अर गुरुके चरणमै नमोस्तु करिकै कहीके हे-
गुरूजी मैबहेजातोथो सो आप मोकूं बचादियो तैसैंही गुरु संसारमै बहतेहुयेकूं ब
चा देताहै १ सारांस हे मुमुक्षजन हो बहता हुवा भरम जाल संसार सें बचणेकी
तुमारेकौं इच्छाहैतो इस भ्रमजाल संसारकूं देखणेके अर्थ तो तुम जन्मांधवत् हो
जावो बहुरि तुमारा तुमसे तन्मयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्व-
भावहै ताकूं देखणेके अर्थ तुम सहस्त्र सूर्यवत् अचल होज्यावो १ जैसै रसोई
पाक सस्थानमै आटो दाल चावल घृत शर्करा गुड लवण मिरच भांडा बासण लक
डी इंधन आदि भोजनकी सामग्री अर भोजन बणावणे वालो आदि सबैहै परंतु अ
ग्नीविना तांदुलादिक सर्व सामग्री कचीहै तैसैंही सिद्ध परमेष्ठीका स्वस्वभाव सम्य

क ज्ञानाग्नि विना येह मुनीपणा त्यागी व्रती क्षुल्लक ब्रह्मचारी पणा दान पुन्य पूजा पाठ सास्त्राध्ययन ध्यान धारणा उपदेस देणा लेणा आदि तीर्थ यात्रा जप तप शुभाशुभ व्यवहार बहुरि शुभाशुभ व्यवहारका क्रिया कर्म अर ताका शुभाशुभ फल आदि सर्व कचा है वृथा है मिथ्या है यदि स्यात् पूर्वोक्तका फल है तो स्वर्ग नरक है बहुरि स्वर्ग नर्क है सो अरहट घटि यंत्रवत् है १ ज्ञान संसार सागर के भीतर बाहिर है परंतु जैसा येह संसार है तैसो ज्ञान नाही १ जैसे चकमक पत्थरी मे अग्नी है सो दीखती नाही तोबी अग्नी है तैसे संसार जगतमे स्वसम्यक ज्ञान प्रसिद्ध है सो दीखतो नाही तोबी स्वसम्यक ज्ञानमयि सिद्ध है १ जैसे मूर्ख लोक कोई नय न्याय द्वारा कहता है के अग्नी जलती है बलती है परंतु पूर्ण दृष्टीसे देखिये तो अग्नी स्वभावमे अग्नी नजलती न बलती तैसे ही असत्य व्यवहार द्वारा देखिये तो स्वयं ज्ञानमयि जीव मरना है जन्मता है निश्चय सत्य जीवत्व स्वभावमे देखिये तो नजीव मरता है नजीव जन्मता है १ जैसे हम खूब चोकस ठिक निश्चय करचूके सूर्यके सन्मुख अंधकार नाहीं तैसे ही स्वसम्यक ज्ञानमयि सूर्यके

सन्मुख अज्ञान रूपी अंधकार नाही १ जैसे सूर्यके अर अंधकारके येक तन्मयि
मेल नाही तैसैही स्वसम्यक् ज्ञान मयि सूर्यके अर अज्ञानमयि अंधकारके परस्प
र येक तन्मयि मेल नाही १ जो जिससे भिन्न है वो उससे भिन्न है इति न्यायम् १
जैसे सूर्य प्रसिद्ध है ताहीका प्रकाशमे घट पट मठ आदि प्रसिद्ध है तैसेही स्वयं
सम्यक् ज्ञान मयि सूर्य प्रसिद्ध है ताहीका प्रकाशमे येह लोका लोक जगत संसा
र प्रसिद्ध है १ येह तन मन धन बचनादिक है सो बहुरि तन मन धन बचनादिक
का जेता शुभाशुभ भावकर्म क्रियादिक अर इनका फल येह सर्व स्वस्वरूप सम्य
क् ज्ञानकूं जाणते नाही बहुरि स्वभाव स्वरूपी सम्यक ज्ञानमयि परमातमा है सो
सहज स्वभावहीसे आपा परकूं जाणता है १ स्वसम्यक् ज्ञानका अर येह लोकालो
क जगत संसारका मेल तो ऐसा है जैसा फूल सुगंधका सा दुग्ध घृत वत् तिल तै
लवत् बहुरि येह लोकालोक जगत संसार है ताका अर स्वयंसम्यक् ज्ञान है ता
का परस्पर अंतर भेद है सो ऐसा है जैसा सूर्य अंधकारका परस्पर अंतर भेद है
तैसा १ जैसे जहां पर्यंत समुद्र है तहां पर्यंत कल्लोल लहरी चलती है तैसैही जहां

पर्यंत स्वसम्यक्‌ ज्ञानार्णवहै तहां पर्यंत दान पुन्य पूजा व्रत शील जप तप ध्याना
दिककी बहुरि काम कुशील चोरी धन परिग्रह भोग विलासकी इच्छा वांच्छारू
प लहरी कल्लोल चलतीहै १ जैसै कमल जलही मै उत्पन्न हुवो बहुरि जलही मै र
हताहै परंतु जलसै लिप्त तन्मायि नाही होते तैसैही स्वसम्यक्‌ ज्ञानमयि सम्यक्‌
दृष्टीस्यात्‌ गुरुपदेसात्‌ येह लोकालोक जगत संसारमै उत्पन्न हुये अर इसी ही सं
सार जगत्‌ लोकालोकमै रहताहै परंतु येह संसार जगत लोकालोक सै लिप्त तन्म
यि नाही होते १ जैसै नदी समुद्रमै भिन्न नाही तैसैही जिस वस्तुमै ज्ञान गुणहै ऐ
सो जीव जिनेंद्रसै भिन्न नाही १ जैसे सुवर्णकी वस्तु सुवर्ण मईही है बहुरि लोहा
की वस्तु लोह मयीहीहै तैसैही स्वयंज्ञान मायि जीवकी वस्तु स्वयंज्ञानमयी है बहु
रि अज्ञानमयी अजीवहै ताकी वस्तु अज्ञान मयीहीहै १ जैसै मृगमरीचका जल
दीखताहै सो नही दीखने प्रमाणवत्‌ मिथ्या है तैसैही येह जगत संसार दीखता
है सो स्वस्वरूप सम्यक्‌ज्ञानसे तन्मायि होयकरि स्वस्वरूप सम्यक्‌ ज्ञानकी तरफ दे
खतेसंते मिथ्याहै १ जैसे मृगजलसे किसीकी तृषा उपसम होती नाही वस्त्र गीला

होते नाही तैसेही तीव्र स्वयंस्वसम्यक् ज्ञान मयि सूर्यका भला बुरा येह मृगमरीचका जलसे भर्या संसार जगतहै नासै होने नाहीं १ जैसे जहांको वासी तहांको मरम- जाऐ तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानसे तन्मयि होयकरि रहताहै सो स्वसम्यक् ज्ञानको म रम जाएताहै १ जैसे जिस हांडीमे खाणेकूं मिले ताकूं फोडणा तोडणा बिगाडु- णा जोग्य नही तैसेही येह लोका लोक जगत संसारमे जिसकूं स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानकी प्रातकी प्राप्ति भई ऐसा संसारकूं बिगाडणा जोग्य नही १ जैसे पूर्णजल से भर्यो घट शब्द नाही कर्ताहै तैसेही परिपूर्ण स्वस्वभाव समरस नीरसें तन्मयि स्वयं सम्यक् ज्ञानहैसो शब्दसे तन्मयि होय करिके नही बोलताहै १ जैसे जहां- पर्यंत मंडप है तहां पर्यंत वेलि विस्तीर्ण होरहीहै. ऐसे नही समजणाके वेलडी मे वीस्तीर्ण होणेकी सक्ति नहीहै तैसेही उस स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि परमातमाको ज्ञान लोका लोक पर्यंत विस्तीर्ण होय रह्योहै ऐसे नही- समजणाके उस ज्ञानमयि परमातमामे ये तावन्मात्रही ज्ञानहै अर्थात् जैसा ये ह लोकालोकहै ऐसाही ओर सहस्त्र लक्ष लोका लोक वी होयतो वो स्वसम्यक्-

ज्ञानमयि परमातमा येकही समयमात्र कालमै निराबाध पूर्वकजाणै परंतु ये
ह लोकालोक शिवाय दूसरो ज्ञेयकोई हैही नाही भावार्थ जाणैकिसकूं जाण-
नाही है सो क्याजाणै येह लोकालोकतो तिस स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा
का ज्ञानप्रकाशके भीतर अणुरेणुवत् नही जाणै किदर कहां पडेहै १ जैसै स्वप
नाकी मायाकूं छोडणा क्या अर ग्रहण कैसे करणा तैसैही वो स्वसम्यक् ज्ञान-
मयि परमातमाहै सो इस अज्ञानमायि लोकालोक जगत संसारकूं छोड करिके क
हां पटकै कहां डालै बहुरि ग्रहण करिके कहां राखै कहां धरै १ जैसै कांचकी हांडी
मै दीपक भीतर बाहिर प्रकास रूपहै तैसै ही किसी जीवकूं गुरुपदेस द्वारा स्वानु
भवगम्य सम्यक् ज्ञानमई सूर्यसै तन्मायिता येकता अचल हुई ताको प्रकास लो
कालोक वा अनंत ब्रह्मांडके भीतर बाहिर प्रसिद्ध है सो जीव सहस्त्र बेर धन्यबाद-
योग्यहै परम पूज्यहै १ प्रश्न स्वसम्यक् ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमाको अच
लानुभव कैसेहोय उत्तर हे शिष्य इस भवनमै तूं उच्चा स्वरसे अलाप ऐसे क-
रिके तूंही तब शिष्य गुरुआज्ञा प्रमाण तिस भवनमंदिरमै उच्चा स्वरसै कहीके तूं

ही तब तत् समयही पलट करिकै तिस शिष्यके कर्ण द्वारा होकरि अंतःकरणमै प्रति ध्वनि सोकी सो ही पहोंची के तूंही तब शिष्य प्रतिध्वनि श्रवण द्वारा निश्चय धारण करिके स्वसम्यक् ज्ञान मयि परब्रह्म परमातमा है सो ही सोहं १ स्वसम्यक् ज्ञानानुभवि चर्म कर्ण द्वारा तुम श्रवण करो. जैसे कोइ पुरुष नीरसे भऱ्या घटमे सूर्यको प्रतिबिंब देख करिकै संतुष्ट थो ताकूं निश्चय सूर्यकूं जाणतो पुरुष कहीके तूं ऊपर आकाशमे सूर्य है ताकूं देख तब वो पुरुष घटमै सूर्यकूं देखणा छोडकरिकै ऊपर आकाशमे देखणे लागे तब निश्चय सूर्यकूं देख करिकै अपणा अंतःकरणमे विचार कियाके जैसो ऊपर आकाशमे सूर्य दीखता है तैसो ही इस घटमें सूर्य दीखता है जैसो इहां तैसो उहां तैसो उहां जैसो इहां न इहां न उहां अर्थात् जैसो है तैसो जहांको तहां तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि सूर्य है सोतो जैसो है तैसो जहांको तहां स्वानुभवगम्य है सो है येह नय न्याय शब्दसें तन्मयि बण रहा है पंडित सो स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमाकूं अनेक प्रकारसे कल्पे है सो वृथा है १ जैसै येक किसी को प्रिय पुत्र द्वादश वर्ष पश्चात् परदेसमेंसे आयो आते प्रमा

ए माता पिता सज्जनादिकसै मिले ताको आनंद हुवो सो फेर वो आनंद रहता नाही आनंदको हेतु परदेस मैसै आयो सो पुत्र विद्यमान है परंतु प्रथम मिलापसमय प्रथमानंद हुवाथा तैसा आनंद अब है नाही इहां प्रथमानंद संभवै है इसी आनंदसै सर्वानंद रूप है तैसेही प्रथम स्वयंसिद्ध स्वसम्यक् ज्ञान मयि परमातमा परमानंद मयि प्रथम है उसीसे भोगानंद जोगानंद धर्मानंद विषयानंद हिंसानंद दयानंद आदि जेता आनंद शब्द है सो स्वसम्यक् ज्ञान मयि परमातमा परमानंदका सूचक है १ जैसे अंध कुटीमे बैठो हुवो पुरुष तिस कुटीके द्वारा हो करि के बाहिर मनुष्य पशू पक्षी वृषभ घोटकादिक पर है ताकूं जाणत है बहुरि स्वयं आपकूं बी जाणन है तैसेही स्वसम्यक् ज्ञान मयि सम्यक् दृष्टी स्वयं देह अंध कूटीमे बैठ करिके आपा परकूं जाणत है १ जैसो बीज ताको तैसो फल १ जैसे नेत्रसे देखता है बहुरि नेत्रकूं नही देखता है सो अंधवत् स्यात् तैसेही ज्ञानसे जाणता है बहुरि ज्ञानकूं नही जाणता है सो अज्ञानवत् स्यात् १ जैसै नट नाना प्रकारका स्वांगधारै है परंतु आप अपणा दिलमे जाणता है मानता है के येह जैसा स्वांग है तैसो मैना

हीं तैसैही स्वसंम्यक् ज्ञानमयि सम्यक् दृष्टी है सो अपणा आपमे आपमयि स्वसम्य
क् ज्ञानसे तन्मयि है ताकूं तो स्वांग नमानत है न समजत है परंतु स्वस्व भाव सम्यक्-
ज्ञानसें तन्मयि नाही तिस सर्वहीकूं स्वांग जाणता है मानत है १ जैसे घरके अग्नी-
लागे ताके प्रथम कूप खोदणा जोग्य है तैसे ही येह देह कुटीके कालाग्नि लागे ताके
प्रथम सद्गुरू वचनोपदेस द्वारा देह कुटीके भीतर बाहिर मध्य निरंतर स्वसम्यक् स्वा
नुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तू है ताकूं तन्मयि समज लेणा मान लेणा-
योग्य है १ जैसे चकवा चकवी सायंकाल रात्री समय अलग अलग हो जाते है सो को
ण उनकूं द्वेष भावसे अलग अलग कर्ता है बहुरि प्रातकाल सूर्योदय समय वह-
चकवा चकवी परस्पर मिलते है ताकूं कोण प्रीनभाव रागसे मिलाते है तैसे हीजी
व अजीवकूं कोणतो प्रीनराग भावसूं मिलाया है बहुरि कोण द्वेष भावसे अलग-
अलग कर्ता है १ जैसे स्रुवर्णका अनेक भेद अलंकार है अनेक भेद अलंकारकूं ग-
ला देवे तो येक केवल सुवर्ण ही है तैसैही येक स्वयंसिद्ध स्वसम्यक् ज्ञान है ताका भेद
कुमतिज्ञान कुश्रुतिज्ञान कुअवधिज्ञान मतिज्ञान श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान मनपर्यय

ज्ञान केवलज्ञान इत्यादि भेदहै ताकूं गालदेई डबोदे तो येककेवल स्वयंसिद्ध स्व
सम्यक् ज्ञानहीहै १ जैसे सूर्यका प्रकासमे अंधकार कहाहै सूर्य निकासलियो
तो प्रतिबिंब कहाहै आत्म ज्ञानीकूं जगत् संसार मृगजलवत्है सूर्य नहोयतो मृ
गजल कहांहै ऐसे गुरुपदेस द्वारा आपकूं आपमे आपमाथि आपहीमे आपकूं खें
चलियेसे आकार कहांहै ऐसे जगत संसारहै सो भरमहै भरम उडगये तो जगत संसा
र कहांहै १ जैसे जल अग्नीको संयोग पाय करिके गरमहै परंतु गरम है नही क्यूंके उ
सी गरम जलकूं अग्नीके ऊपर डालदे पटकदेतो अग्नीउपसम हो जातीहै बूजजाती
है तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानहैसो क्रोधादिक अग्नीको संयोग पाय करिके संतप्त होजा
तेहै परंतु संतप्त होते नाही क्यूंके उसी स्वसम्यक् ज्ञानकूं क्रोधादिक अग्नीके ऊप
र वा संसारजगतके ऊपर डालदे पटकदेतो क्रोधादिक अग्नी वहुरि संसार जगत
उपसम होजातेहै १ जैसे सूर्यको प्रकास तथा आकाश सर्वत्रहै तैसेही स्वसम्य
क्ज्ञान सर्वक्षेत्र काल भव भावादिकहै तहांहै निश्चय नयात् १ स्वसम्यक् ज्ञानस्व
भावमे रात्री दिवसका भेद नसंभवे इसी वास्ते स्वसम्यक्ज्ञानको नाम सदोदय सूर्य

है १ जैसै बालक लडका लडकि बाल्यअवस्थामै गुढागुदी बनाय करिकै मै थुनादिक भोगोपभोग आभाष मात्र कर्ता है परंतु योवन अवस्थासमय साक्षात् मैथुनादिक भोगोपभोग उसी ही लडका लडकी कूं निश्चय प्राप्त होजावैहै तब पूर्वकृत्य गुढा गुढीकूं असत्य जाण करिकै येक ठिकाणै समेट करिकै राख देता है तैसैंही किसीकूं गुरुपदेश द्वारा काललब्धि पाचक द्वारा स्व स्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान स्वभावकी अचलता परमावगाढता होणे· जोग्य होचुकी सो धातु पाषाण काष्टादिककी मूर्ति जहांकी तहां दूसरे बालकवत्के अर्थ राख देता है १ जैसै समुद्रकाजल खारा है परंतु उसी समुद्रके तट कूंप खोदे तो जल मिष्ट निकलता है तैसैंही गुरुपदेस पाय करिकै कोहू सं· सार क्षार समुद्रके तट खोजैगा तो स्वसम्यक् ज्ञान मिष्ट जलका लाभ होवैगा १ जैसा दोहा बीजराखफलभोगवै ज्यूंकिसाणजग मांहि॥ त्यूं चक्रीनृपफलकरै धर्मविसारनांहि॥१॥ तैसैंही कोहू स्वसंम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव बीजकूं आपका आपमै आपमयि आपहीके पास आपही राख करिकै

पश्चात् संसारका शुभाशुभ फल भोगता है ताको स्वभावधर्म कदाचित् को
हू प्रकारबी नष्ट होते नाही १ जैसे वृक्षकी जड मूलमे इच्छा प्रमाण जल डा
लो परंतु समयपाय फल लागेगा तैसेही मिथ्या दृष्टीकूं इच्छा प्रमाण स्व॰
सम्यक् ज्ञानोपदेस देवो तथा साक्षात् सूचक बचन कहोके तूंही जिनेंद्र शि
व स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्य है ऐसा सूचक बचन कहते संते वी मि
थ्या दृष्टीके स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी अचलता परमावगाढता काल लब्धी पा
चक हुये विना होती नाही १ जैसे सूर्य प्रकाश कर्ता है अंधो नही देखतो तो
सूर्यकूं क्या दोष तैसे सद्गुरू सम्यक् ज्ञानोपदेश कर्ता है मिथ्या दृष्टी स्वसंम्य॰
क् ज्ञानानुभवकी परमावगाढता नही धारण कर्ता है ताको सत्गुरूकूं क्या
दोष १ जैसे दीपकतो अन्य घटपटादिक वस्तूकूं प्रगट नाही कर्तो क्यू के वह
वस्तु दीपककूं ऐसे कहती नाही प्रेरणा करती नाहीके हे दीपक तुम हमकूं
प्रगट करो तैसेही दीपक उस घट पटादिक वस्तुकूं कहतो नाही प्रेरणा कर

तो नाहीके हे घटपटादिक वस्तु हो तुम मोकूं प्रगट करो तैसेही स्वसम्यक् ज्ञा

न दीपक है सो तो अन्य संसार वा तन मन धन वचनादिक वस्तू कूं बहुरि तन म
न धन वचनादिक का जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म है ताकूं अर इन-
का शुभाशुभ फल है ताकूं प्रगट नाही कर्तो क्यूं के येह संसार तन मन धन व
चनादिक वस्तु है सो बहुरि इनका शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म है सो अर इन
का शुभाशुभ फल है सो स्वसम्यक् ज्ञान दीपक कूं ऐसे कहते नाही प्रेरणा क
र्ते नाहीं के हे स्वसम्यक् ज्ञान दीपक तुम हम कूं प्रगट करो तैसे ही स्वसम्यक् ज्ञा
न दीपक है सो इस संसार तन मन धन वचनादिक वस्तु कूं अर इनका जेता शु
भाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म है ताकूं अर इनका शुभाशुभ फल है ताकूं ऐसे क
हतो नाही प्रेरणा कर्तो नाहीं के हे संसार तन मन धन वचनादिक वस्तु हो अर त-
न मन धन वचनादिक वस्तु के जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म हो अर इनके
शुभाशुभ फल हो तुम मोकूं प्रगट करो १ जैसे बाजीगिर अनेक प्रकार का तमा
सा चेष्टा कर्ता है परंतु आप अपणा दिल मे जाणता है के येह जैसा मे तमासा
चेष्टा कर्ता हूं तैसो मै मूल स्वभाव ही सें नाही हूं तैसे ही स्वसम्यक् ज्ञान मयि-

सम्यक् दृष्टी सर्व संसारका शुभाशुभ कर्मचेष्टा कर्ताहै परंतु आप अपणा दिल
मे निश्चय जाणताहै के जैसा मे संसारका शुभाशुभ कर्मचेष्टा कर्ताहूं तासे तन्म
यि कदाचित् कोई प्रकारवी नाहीहूं जैसा कर्मचेष्टा कर्ताहूं तैसो मै मूलस्वभा
वहीसे नाहीहूं १ जैसे बाजीगिर मिथ्या मृगजलवत् आम्र वृक्ष लगातोहै ता
कूं देख करिके किसी पुत्रको पिता पुत्रकूं कहीके हे पुत्र वो हो बाजीगिर आम्र
वृक्ष लगायो सो मिथ्याहै परंतु पुत्रको पिता बाजीगिरकूं मिथ्या नही जाणतो
है तैसेही स्वसम्यक् दृष्टी द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्मकूं मिथ्या जाणतोहै परंतु
जो कर्मसे अतन्मयि होय कर्मको कर्ताहै ताकूं मिथ्या नहीजाणताहै न मान
ताहै न कहताहै १ जैसे खडी पांडु आपस्वमे वही श्वेतहै अर परजो भींत आ॰
दिककूं स्वेत करैहै परंतु आप भीन आदिकसे तन्मयि होती नाही तैसे ही स्वसं॰
म्यक् ज्ञानहै सो सर्व संसार आदिककूं चेतनवत् करि राखे है परंतु आप संसार
आदिकसैं तन्मयि होने नाही १ जैसे जेलखानामे बेडीसे बंधे तस्करादिकवी है ८२
अर तिसही जेलखानामें निर्बंध शिपाई जमादार फोजदारवी है तैसे ही संसा

र कारागारमै मिथ्या द्रष्टीनो कर्मबंध युक्तहै बहुरि स्वसम्यक् दृष्टी कर्मबंधरहि
त है १ दृष्टांतमै तर्ककर्ता है जिसकुं स्वभाव सम्यक् ज्ञानको लाभ नही होताहै
१ जैसे सर्बतमै मिश्री एलायची दुग्ध कालीमिरच बिदामबीज केंशर जल
मिश्रित बहुत द्रव्यहै सो अपणे अपणे स्वभावगुण लक्षणमै मग्न है तथापि ये
क सर्बत नामहै तैसैही जीव पुद्गल धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकाशद्रव्य कालद्रव्य
येह षट्मयी संसारहै तामै ज्ञानगुण जीवमैहै और पांचद्रव्यमै नाही १ जैसै समु
द्रमै अनेकनदीनालाकोजल जावेहै तहां येहबी भाग नाहीहैके यो जल तो अमु
की नदीकोहै बहुरि यो जल अमुकी नदीको है तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य स
म्यक् ज्ञानमयि स्वभावसमुद्रमै येह विभाग नहीहैके यो ज्ञानतो जैनकोहै अरयो
ज्ञान वैश्नुकोहै अरयो ज्ञान शिवकोहै यो बोधको यो नय्यायिक् चार्वाक् पातांज
ली सांख्यको है इत्यादिकबी भाग विधि निषेध स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानार्णवमै
न संभवे १ जैसे कोइ पुरुष सन्निपातयुक्ति अपणा स्वघरमै सूतोहै अर भरम-
भ्रांतियुक्त कहताहैके मै मेरा घरमै जाऊं तैसेही स्वयं ज्ञानमयि जीव अपणा

ज्ञानमयि स्वभाव मोक्षसे भिन्न नाही तथापि भरम भ्रांतिसे मोक्षमेंजाणेकी इच्छा कर्ता है १ आगे फकत केवल दृष्टांत द्वारा अपणा आपमें आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका अचलानुभव लेणा इति अथ केवल दृष्टांत संग्रह प्रारंभः दोहा नमोज्ञानसिद्धांतकूं नमोज्ञानशिवरूप॥ धर्मदास बंदन करै देख आतमा भूप॥१॥ प्रश्न स्वसम्यक् ज्ञानमयि आत्मा केसा है अर कैसे पाइये ताको उत्तर दृष्टांत द्वारा कहते है येह आत्मा स्वसम्यक् ज्ञानमयि चेतन स्वरूप अनंत धर्मात्मक येक द्रव्य है ते अनंत धर्म अनंत नयकी गम्य है अनंत नय है सो सब श्रुति ज्ञान है तिस श्रुत ज्ञान प्रमाण करि आत्मा अनंत धर्मात्मक जानिये है इस वास्ते नयनि करि स्वभाव सम्यक् ज्ञान वस्तु दिखाइय है सोही आत्मा द्रव्यार्थक नयकरि चिन्मात्र है दृष्टांत कैसे जैसे वस्त्र येक है तैसे स्वभाव सम्यक् ज्ञान मयि आत्मा येक है १ जैसे वस्त्र सूततंतु आदिकरि अनेक है तैसे ही स्वसम्यक् ज्ञानमयि आत्मा दर्शन ज्ञान चारित्र सुख सत्ता चेतन जीवत्वादिकरि अनेक है १ जैसे लोह मयि बाण अपणा द्रव्य

क्षेत्र काल भव भाव करि अस्तिहै तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानमयि आत्मा अपणी आ
पमै आपमयि आपद्रव्य आपहीमै आप रहता है वास्तै आपही क्षेत्र आपहीमै
आप वर्तताहै वास्तै आपही काल आपही आपका स्वभावहै मैंहै वास्तै आप-
ही भव भावकरि अस्तिहै १ जैसै लोहमयि बाण परद्रव्य क्षेत्र काल भव भावा
दि करि नास्ति तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानमयि आत्मा परद्रव क्षेत्र काल भव भावादि
करि नास्ति है १ जैसे दर्पणमै स्वमुख नही देखो तोबी स्वमुखहै बहुरि दर्पणमै
स्वमुख देखोतोबी स्वमुखहै तैसेही हे स्वसम्यक् ज्ञान तूं तेरेकूं संसार जगतज
न्म मरण नामा नाम बंध मोक्ष स्वर्ग नर्कादिकमै नही देखै तोबी तूं अनादि अनं
त निरंतर सम्यक् ज्ञानहीहै बहुरि हे स्वसम्यक् ज्ञान तूं तेरेकूं सूर्य प्रकासवत्
येक तन्मयि तेरा तेरेही भीतर तूंही तेरेकूं देखै तोबी तूं सोको सोही अनादिअ
नंत निरंतर स्वसम्यक् ज्ञानहीहै १ जैसै कोहू स्वहस्तसे आपहीका स्वस्थानमै
आपहीकी स्वसिंदूकमै तिजोरीमै रतन राखे राख करिके और वार्तिमै लाग जा
वै तब तिस रतनकूं भूलबी जावैहै परंतु जब याद करि तबही सो रतन अनुभव

मे आवेहै तैसेही कोइ शिष्यकूं सतगुरु बचनोपदेस द्वारा तथा काल लब्धि पाचक द्वारा स्वस्वरूप सम्यक ज्ञानानुभव होणे जोगथो सो होगये परंतु पूर्वकर्म बसात् और ब्रती मे लाग जावे तब तिस स्वसम्यक ज्ञानानुभवकूं भूलिवी जावेहै परंतु जब याद करै तब साक्षात् वो स्वानुभवमे आवेहै १ इसी के अर्थ तीन दृष्टांत जेसे येक बेर चंद्रकूं देख लिये चंद्रानुभव नही जाते १ जैसे येकबेर गुडकूं खाये पश्चात् गुडानुभव नही जाते जैसे येकबेर भोग भोगे पश्चात् भोगानुभव नही जाते १ जेसे काहू दर्पणकूं सदा काल स्वहस्तमे लिये रहताहै ताकी प्रष्टि बेर बेर देखतहै तिस करिके स्व मुख दीखने नाही दर्पणकी प्रष्टीकूं पलट करिके स्वच्छ दर्पणमे स्वमुख देखेतो स्वमुख दीखे तैसेही मिथ्या द्रष्टी इस संसार तन मन धन बचनकी तरफ बहुरि तन मन धन बचनादिकका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म अर इनका शुभाशुभ फलकी तरफ देखताहै वास्ते स्वसम्यक ज्ञान नही दीखता नही स्वानुभवमे आतो बहुरि इन संसार तन मन धन बचनादिककी तरफ देखणा छोड करिके स्वसम्यक ज्ञान

की त्रफ निश्चय देखतो स्वसम्यक् ज्ञानही दीखै स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकीअ
चलता परमावगाढता होवै १ लोकालोककूं जाणवाकी बहुरि नहीं जाण-
वाकी येहु दोहू कल्पनाकूं सहज स्वभावहीसैं जाणताहै सोही स्वसम्यक् ज्ञा
नहै १ जैसैं हरित रंगकी मेंदीमें लाल रंगहै परंतु दीखतो नाही पत्थरीमे
अग्नीहै परंतु दीखती नाही दुग्धमे घृतहै परंतु दीखतो नाही तिलमे तेल
है परंतु दीखतो नाही पुष्पमै सुगंध है परंतु दीखती नाही तैसैंही जगतमे-
स्वसम्यक् ज्ञानमायि जगदीश्वरहै परंतु चरम नेत्र द्वारा दीखतो नाही किसीकूं
सतगुरू वचनोपदेस द्वारा काल लब्धि पाचक द्वारा स्वभाव सम्यक् ज्ञानसें तन्म
यि स्वभाव सम्यक् ज्ञानानुभवमे अचल दीखता है १ जैसै व्यभिचारणी स्त्री
स्वघर कार्य कर्तीहै परंतु ताको चित्त मन व्यभिचारि पुरुषकी तरफ लाग रह्यो
है तैसैंही स्वसम्यक् दृष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारिक काम कार्य कर्ताहै परं
तु ताको चित्त मन स्वसम्यक् ज्ञानमायि परमातमाकी तरफ लाग रहतोहै १
जैसैं जिस स्त्रीका शिरकेऊपर भरतारहै स्यात् सो स्त्री परपुरुषका निमित्तसें

गर्भबी धारण करै तो ता कूं दोष लागते नाही तैसे ही किसी पुरुषका मस्तगसै तन्मयि मस्तगके ऊपर स्वसम्यक् ज्ञान मयि परब्रह्म परमात माहै स्यात् सो पुरुष परकर्म बसात् दोषबी धारण करै तौ ता पुरुष कूं दोषबी लागते नाही बडे का सरणा लेणेका येही फलहै १ जैसे मूका पुरुषका मुखमै गुडखंड देकरि पश्चात् मूकासै बूजीके कहो मूका गुड कैसा मिष्टहै इहां मूकाकूं गुडका मिष्टानुभवहै परंतु कह नही सक्को तैसेही किसी कूं गुरु बचनोपदेस द्वारा स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी अचलता परमावगाढता होणेजोग थी सो होचुकी परंतु कह नही सक्को १ जैसै हस्तीका दंत बाहिर दीखणेका औरहै बहुरि भीतर चावणे खाणेका औरहै तैसेही जैन वैष्णु आदिकका ऋषी मुनी आचार्य का रचे हुये बेद सिद्धांत सास्त्र सूत्र पुराणादिकहै सो तो हस्तीका बाहिरका दंतवत् समजणा बहुरि भीतरका आसय असल जिसका जोही जाणै १ बंधको विलास डाल दीजे पुद्गलपै तथा देहीका विकार तुम देहाशिर दीजिये १ स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान है सोतो तन मन धन बचनादिकसै तन्मयि तत् स्वरूप कदापि नाही फिर गुरुस्व

सम्यक्ज्ञानानुभवकी अचलना अवगाढता निश्चयता करदेता है धन्यहै गुरुसह स्नबेर धन्यहै १ जैसे जैन वैष्णु बोद्ध शिवादिककोहूही हो जो चोरी करैगो सो बंध मै पडैगो तैसैही कोहूही हो जो कोहू गुरुबचनोपदेस द्वारा वा काललब्धि पाचक द्वारा आपका आपमै आपमयि स्वसम्यक्ज्ञानानुभवकी अचलना परमावगाढ ता धारण करैगो सोही संसार भरमजालसे भिन्नहोयके सदाकाल स्वरुपानुभव मै मग्नरहैगो १ प्रश्न आत्मा कैसाहै अर कैसे पाइये ताका उत्तर दृष्टांत द्वारा कहते है येह आत्मा चेतन स्वरूप अनंत धर्मात्मक येक द्रव है ते अनंत धर्म अनंत नयकी गम्यहै अनंत नय सब श्रुतज्ञानहै तिस श्रुतज्ञान प्रमाण करि आत्मा अनंत धर्मात्म जानिये है इसवास्ते नयनि करि वस्तु दिषाइयेहै सो ही आत्मा द्रव्यार्थिक नयकरि चिन्मात्र है दृष्टांत कैसे जैसे वस्त्र येक है बहुरि अर सोही आत्मा पर्यायार्थिक नयकरि ज्ञान दर्शनादिक रूप करि अनेक है कैसे जैसे सोही वस्त्र सूतके तंतुवनिकरि अनेकहै अस्तित्व नयकरि सोही आत्मा स्वद्रव क्षेत्र काल भावनि करि अस्तित्वरूपहै कैसे जैसे लोहमयी बाण अपणे चतुष्टय अस्तित्व रूपहै लोहा

तो द्रव्यहै धनुष और गुणके बीच रहे है तातै वह बाण का क्षेत्रहै जो साधनेका स-
मयहै सो कालहै निसाणेका समूही है सो भावहै इस भांति अपणे चतुष्टय करि
लोहमयि बाण अस्तित्व रूपहै और नास्तित्व नयकरि सोही आत्मा परद्रव क्षेत्र-
काल भाव करि नास्तित्व रूपहै कैसे जैसे लोहमयि बाण सोही लोहाके बाण नाही
और धनुष गुण वाचि नाही और साध्या नाही और निसाणेके सन्मुख नाही ऐसै-
सोही लोहमयी बाण परचतुष्टय करि नास्तित्व रूपहै और अस्ति नास्ति नयकरि
स्वचतुष्टय परचतुष्टय करि क्रमसौं सोही आत्मा अस्तिरूप है कैसे जैसे सोही बा-
ण स्वचतुष्टय परचतुष्टय क्रम विवक्ष्या करि अस्ति नास्ति रूप होहै अर अव्यक्त-
नय करि सोही आत्मा येकही बार स्वचतुष्टय परचतुष्टय करि अव्यक्तहै कैसे जैसे
सोही बाण स्वपर चतुष्टय करि अव्यक्तेव सधैहै और अस्ति अव्यक्तव्य नयकरि
सोही आत्मा स्वचतुष्टय करि और येकही बार स्वपरचतुष्टय करि अस्तिरूप अ-
व्यक्तव्य बाणके दृष्टांत करि जानना और नास्ति अव्यक्तव्य नय करि सोई आत्मा
पर चतुष्टय करि और येकही बार स्वपरचतुष्टय करि नास्तिरूप अव्यक्तव्य बाणके

दृष्टांतकरि जानना ओर अस्ति नास्ति अव्यक्तव्य नयकीये सोही आत्मास्वचतुष्ट
य करि ओर परचतुष्टय करि ओर येकही वार स्वपरचतुष्टय करि अस्ति नास्ति रूप
अव्यक्तव्य वाणके दृष्टांत करि जानना सविकल्प नय करि सोही आत्मा भेद लिये
हे केसे जेसे येक पुरुष कुमार बालक जुवान वृद्ध भेदनिकरि सविकल्प होहे ओर
अविकल्प नयकरि सोही आत्मा अभेद हे केसे जैसे येक पुरुष पुरुषत्व करि अ-
भेदरूपहे नाम नयकरि सोही आत्मा शब्द ब्रम्हकरि नाम ले करि कह्या जावहे-
स्थापना नय करि सोही आत्मा पुद्गलका अवलंबन करि स्थापिये हे जैसे मूर्ति
कपदार्थ थापिये हे द्रव्य नयकरि सोही आत्मा अतीत अनागत पर्याय करि कहि
येहे केसे जेसे श्रेणिक महाराजा तीर्थंकरका दलवारा हे भावनय करि सोही आ
त्मा जिसभाव परिणमहे तिस परिणाम से तन्मयि होहे केसे जैसे पुरुषाधीन-
स्त्री विपरीति संभोग विषे प्रवर्तती तिस पर्याय रूप होहे सामान्य नयकरि सो
ही आत्मा अपने समस्त पर्यायनि विषे व्यापीहे केसे जैसे हार सूत सर्व मुक्ताफ
लनि विषे व्यापी हे विशेष नय करि सोही आत्मा येक पर्यायकरि कहिये हे केसे जे

से तिस हार का येक मुक्ताफल सब हार विषै अव्यापी है नित्य नय करि सोही आत्मा ध्रुवरूप है कैसे जैसे नट अनेक यद्यपि स्वांग धरै है तथापि सोही नट है सो नटही है अनित्य नय करि सोही आत्मा अवस्थांतर करि अन वस्थित है कैसे जैसे सोही नट राम रावणादिकके स्वांग करि और का और हो है सर्वगत नय करि सकल पदार्थ वर्त्ति है कैसे जैसे खुली आंख समस्त घट पटादि विषै पदार्थ विषै प्रवर्तै है अर असर्वगत नयकरि आपही विषै प्रवर्तै है कैसे जैसे मुंद्या हुवा नेत्र आपही विषै है सून्य नयकरि केवल येकही सो भायमान है कैसे जैसे सूना घर येक हो है असून्य नयकरि अनेक नयकरि अनेक करि मिल्या हुवा सोभै है कैसे जैसे अनेक लोकनि करि भरी नांव सोभै है ज्ञान ज्ञेयके अभेद कथनरूप नय करि येक है कैसे जैसे अनेक इंधनाकार परिणया हुवा अग्नि येक है ज्ञान ज्ञेय के भेद करि कथन करि अनेक है कैसे जैसे अनेक घट पटादि पदार्थनिके प्रतिबिंबनिकरि मार्तंड अनेक रूप हो है नियति नयकरि अपने निश्चित स्वभाव कौं लिये हो है कैसे जैसे पाणी अपणे सहजीक स्वभावकरि सीतलता लिये हो है अनियति

नयकरि अनिश्चित स्वभाव होवेकेसै जैसै पाणी अग्नीके संबंधसों उष्ण होहैस्व
भाव नयकरि काहूकरि समाख्या नाही होना केसे जेसे स्वभावकरि कांदाबी ना-
ही घडे धड्यासा तीखा होवेहै काल नयकरि कालके आधीन सिद्धत्व हैकेसे
जेसे ग्रीष्म कालको अनुसार सहज डालका आंब पकेहै अकाल नयकरि काल
के आधीन सिद्ध नाही केसे जेसे कृतम घासकी उपमा करि पालके आंब पके-
है पुरुषाकार नयकरि जतनसें सिद्ध होवेहै केसे जेसे सहित उपजायवेके वा
स्ते जतन करैहै काष्टके मादल विषेयेक मक्षिका राखियेहै तिस मधु मक्षका
के शब्दसो और सहतकी माक्षिका आय आय मधुच्छता करैहै ऐसेजतनसोभी
सहतकी सिद्ध होवैहै तेसै जतनसोभी सिद्ध है देव नयकरि यतन विनाहीसा
ध्यकी सिद्धि होवे केसै जेसे जतन कियाथा सहतके वास्ते मांदल विषे मधुम
क्षकाका और तिस मधुच्छता विषे देव संजोगतें माणिक पाइयेहै तेसे यतनवि
नाभी सिद्धि होवे ईश्वर नयकरि पराधीन हुवा भोगवेहै जेसै जेसे वालक धा
यके आधीन हुवा खान पान क्रिया करैहै गुणिनय करि गुणाकूं ग्रहण करणे-

वाले है कैसे जैसे उपाध्याय करि सिखाया हुवा कुमार गुणग्राही होवै अगुणिनय करि केवल साक्षी भूत है गुणग्राही नाही कैसे जैसे उपाध्याय करि सिखाइये जो है कुमार तिसका खवाल पुरुष गुणग्राही नाही होता कर्त्तानय करि रागादि परिणाम तिनका कर्त्ता है कैसे जैसे रंगरेज रंगका करणे वाला होवै अकर्त्ता नय करि रागादि परिणामनिका कर्त्ता नाही साक्षी भूत है कैसे जैसे रंगरेज अनेक रंग करै है और कोहू तमासगीर तमासा देषै है कर्त्ता नाही होता बहुरि भोक्ता नयकरि सुख दुखका भोक्ता होवै कैसे जैसे हित अहित पथ्य कूं लेता रोगी सुख दुखकूं भोगवै है अभोक्ता नय करि सुख दुखका भोक्ता नाही केवल साक्षी भूत है कैसे जैसे हित अहित अहित पथ्यका जो भोक्ता है रोगी ताका तमासगीर धनवंतर वैदका चाकर साक्षी भूत है क्रिया नय करि क्रियाकी प्रधानता करि सिद्धि होवै कैसे जैसे काहू अंधने महा दुखते काहू पाषाणके थंबकूं पाय अपना माथा फोडे तहां तिस अंधके मस्तग विषै जो रुधिर विकार था सो दूर भया तातै ताके दृष्टी हुई और तिसही जागै उनकूं निधान पाया तैसे क्रिया कर

कष्ट करभी वस्तुकी प्राप्ती होवैहै ज्ञान नयकरि विवेकही का प्रधानता करि वस्तु की सिद्धि होवे कैसे जैसे कोइ रतन परिक्षक पुरुष था तिननै काइ अजाण दीन पुरुषके हाथ चिंतामणि रत्न देख्या तब तिस दीन पुरुषकूं बुलाय अपणे घर के कूणामे जाय करि येक चीणाकी मूठीके बदले चिंतामणि रतन लीना जैसे क्रिया कष्ट नाही ज्ञान करि वस्तुकी सिद्धि होवैहै व्यवहार नय करि येह आत्मा बंध मोक्ष अवस्थाकी द्विविधाविषै प्रवर्तेहै कैसे जैसे परमाणुसूं बंधै स्यूं लेहै तैसे येह आत्मा बंध मोक्ष अवस्थाको पुद्गलसूं धरैहै निश्चय नय करि परद्रव्यसौं बंध मोक्ष अवस्थाकी द्विविधाकी नाही धरैहै केवल अपणेही परिणामनिसौ बंध मोक्ष अवस्थाकौं धरैहै कैसे जैसे येकला परमाणु बंध मोक्ष अवस्थाकौं जोग अपणे स्निग्ध रुक्ष गुण परिणामकौं धरता संता बंधमोक्ष अवस्थाकौं धरैहै असद्भूत नय करि यह आत्मा औपाधिक भेद स्वभाव लिये है कैसे जैसे येक मृत्तिका घट सरावा आदि अनेक भेद लिये होहै सद्भूत नय करि निरूपाधि अभेद स्वभावरूप है कैसे जैसे भेद भाव रहित केवल मृत्तिका हो

वै इत्यादि अनंत नयनिकरि वस्तु की सिद्धि होवै है वस्तु अनेक प्रकार बच-
 न विलास करि दिखाइये है जेता बचन है तेताही नय है जेती नय है तेताही मि
थ्यावाद है ॥ ॥श्लोक॥ ॥ सएवमुक्तानयपक्षपातं स्वरूपगुप्तानिवसंति
नित्यम् ॥ विकल्पजालच्युतसांतिचिंता सएवसाक्षाद मृतंपिबंति ॥१॥ येक
स्यबद्धोननथापरस्यचितिर्द्वौर्द्वाव्यानिपक्षपातौ ॥ येनस्तवेदीच्युतपक्षपातस्त-
स्यास्तिनित्यंखलुचिन्चिदेव ॥२॥ इत्यादि० जातैं येक नयकौं सर्वथा मानि
यतो मिथ्या वाद होय अरज्यो कथंचित् मानिये तो जथार्थ अनेकांत रूप सर्व-
ज्ञका बचन होय तातें येकांतता निषेध है येकही बस्तु अनेक नयकरि साधिये
है येह आत्मा नयकरि अोर प्रमाणकरि जानिये है कैसे जैसै येक समुद्र जबजुदे
जुदे नदीनके जलनिकरि साधिये तब गंगा जमुनादिकके श्वेत नीलादि जलनि-
के भेद करि येक येक स्वभावकौं धरै है तैसै येह आत्मा नयनिकी अपेक्षा येकस्व
रूपकौं धरै है अर जैसै सोही समुद्र अनेक नदीनके जलनिकरि येक समुद्रही
है भेदनाही अनेकांतरूप येक वस्तु है तैसै येह आत्मा प्रमाण विवक्षा करि अ

नंत स्वभावमयि येक द्रव्य है इस प्रकार येह अनेक स्वरूप नय प्रमाण करि साधि ये है नयनि करि येक स्वरूप दिखाइये है प्रमाणकरि अनेक स्वरूप दिखाइये है इस प्रकार स्यात् पदकी सोभा करि गर्भित नयनिके स्वरूपकरि और अनेकांत रूप प्रमाणकरि अनंत धर्म संयुक्त है शुद्ध चिन्मात्र वस्तु है ताको जे पुरुष साक्षात् आत्म स्वरूपके अनुभवी होवै येह आत्मा द्रवका स्वरूप जानना अबाते स आत्माकी प्राप्तीका प्रकार दिखाइये है येह आत्मा अनादि कालतैं लेकरि पुद्गलीक कर्मके निमित्ततैं मोह मदिराके पान करि गमन हुवा घूमहै समुद्रकीसो नाही आपही विषे विकल्प तरंगनिकरि महा क्षोभित है क्रम करि प्रवर्तै है जो अनंत इंद्रिय ज्ञानके भेद तिनकरि सदा काल पलटवेकौं प्राप्त होवै येक रूप नाही अज्ञान भाव करि पर रूप बाह्य पदार्थनि विषे आत्म बुद्धि करि मैत्री भाव करै है आत्मविवेककी सिथिलता करि सर्वथा बहिर्मुख हुवा है बार बार पुद्गलीक कर्मके उपजावन हारे जो है राग द्वेष भाव तिनकी द्वैतता विषे प्रवर्तै है ऐसे आत्माकूं शुद्ध चिदानंद परमातमाकी प्राप्ति काहेसे होय कहांसे होय और येही

आत्मा जो अखंड ज्ञानकै अभ्यासतै अनादि पुदगलीक कर्म करि उपजाया जो
९० था येह मिथ्या मोह ताकौं अपना घातक जान भेद विज्ञान करि आपसैं जुदाक
रि केवल आत्म स्वरूपकी भावनातै निश्चल स्थिर होय तो अपने स्वरूप विषे निस्त
रंग समुद्रकीसी नाई निः कंपहुवा निष्ठैहै येकही बार तृप्त भयाजोहै अनंत ज्ञा-
नकी सक्तिके भेद तिनकरि पलटता नाही अपणी ज्ञानकी सक्तिनि करि बाह्य
पर रूप ज्ञेय पदार्थनि विषै मैत्री भाव नाही करैहै निश्चल आत्म ज्ञानका विवेक-
करि अत्यंत स्वरूपसौं सन्मुख हुवाहै पुद्गलीक कर्मबंधके कारण जोहै राग द्वे
ष भाव तिनकी द्विविधातैं दूर रहहै ऐसाजो परमातमाका आराधक पुरुषहै सो
भगवंत आत्मा पूर्वही न अनुभयाथा अर ज्ञानानंद स्वभावहै परब्रह्महै ताकौं
प्राप्त होवहै आपही साधकहै अवस्थाके भेदतैं साध्य साधक भेद येह समस्तही
जोहै जगत् जीव सोही ज्ञानानंद स्वरूप जोहै परमात्मज्ञान तिसकुं प्राप्त होहु
और आनंदरूपजो है अमृत जल तिसके प्रभावकरि परिपूर्ण वहैजोहै वह केवल ९०
ज्ञान रूपणी नदी तिस विषैजो आत्म तत्व मग्न होइरह्याहै और सो स्वसम्य-

कू ज्ञान मयि तत्व समस्त ही लोका लोक देखवे कूं सहज स्वभावही सें समर्थ है
अर जो तत्व ज्ञान करि प्रधान है अर ओ तत्व अमोलख श्रेष्ठ महारतन कीसी-
नाई अति शोभायमान है अर वो तत्व लोकालोक सें तन्मयी नही अर्थात अ
लग है जैसे येह लोकालोक है तैसो वो तत्व नही है अर जैसो वो तत्व है तैसो येह
लोक अलोक नाहीं सूर्ज अंधारा कासा अंतर है लोकालोक के अर उस तत्व के
अर वो तत्व लोकालोक कूं देखवे जाणवे कूं समर्थ है जाणै किस कूं जाण नाही
है अर लोकालोक उस तत्व कूं देखणे जाणने कूं समर्थ नही है· उस तत्व कूं शा·
ब्दरूप जिनेश्वर के वा परमेश्वर के मत कूं अंगिकार करिये जगत्‌जन अंगिका
र करिये जगत जन अंगिकार करो जातैं परमानंद सुख कौं प्राप्ति होय १ ॥
इति दृष्टांतसंग्रह समाप्त ॥ ॥ ५ ॥ श्रीरस्तु शुभम् ॥ ॥

ॐ तत्सत् परब्रह्मपरमात्मनेनमः॥ ॥अथ आकिंचनभावना लिख्यते॥ ॥
९१ दोहा॥ ॥मेरामुजसैंअलगनहि सोपरमातमदेव॥ ताकूंवंदूं भावसै निसदिन
करतासेव॥१॥ मेरामुजसैअलगनहि सोस्वरूपहै मोय॥ धर्मदास क्षुल्लककहै
अंतर बाहिरजोय॥२॥ ज्यों अपणा निजरूपहै जाननदेखनज्ञान॥ इसविनओ
रअनेकहै सो मैनहीसुजाण॥३॥ अन्यद्रव्यमेरानही मैमेरोहीसार॥ धर्मदास
क्षुल्लककहै सोअनुभवसिरदार॥४॥ ॥वार्तिक॥ ॥जो मेरो ज्ञान दर्शनमयस्व
रूपबिना अन्यकिंचित मात्रबी हमारा नही मैकोई ओर द्रव्यको नहीं मेरा कोई अन्य
द्रव्य नहीं ज्यो मेरेसे अलग है उससें मैबी अलगहूं ऐसा अनुभवकूं आकिंचन कहतेहैं
सोही अनुभव मोकूंहै मै आत्माहूं सोही मेरेकूं मै समजताहूं हो आत्मन् अपणा आ
त्माकूं देहसे अलग ज्ञानमई ओर द्रव्यकी ओपमा रहित अर स्पर्श रस गंध वर्णरहि
त जाणुं देहहै सो मै नही अर देहके भीतर बाहिर आकासादिक है सोबी मैनही देह
तो अचेतन जडहै हाड मांस मल मूत्रमई है वा तन मन मईहै मै इस देहसें अवल प- ९१
थमहीसें ऐसो अलगहूं जैसै अंधारासैं सूर्ज अलगहै तैसै अर यो ब्राह्मण पणू क्ष

त्री वैश्य शूद्रादिक जात कूल देहकाहै अर स्त्री पुरुष नपूंसकादि लिंग देही काहै
मेरा नही मोकूं देहही जाणताहै मानताहै सो बहिर आत्मा मिथ्यादृष्टीहै अर येह
गौर पणो सांवला पणो राजा पणो रंक पणो स्वामी पणो सेवकपणो पंडित पणो
मूर्ख पणो गुरुपणो चेलापणो इत्यादि रचना देहही की है मेरी नही मैतो ज्ञाताहूं
नाम ओर जन्म मरणादिक देहका धर्महै जेता नाम तीनलोक तीनकाल वा लो-
कालोकमें है सो मेरा नही अर तीनलोक तीनकाल वा लोकालोकहै सो मेरेसें अ-
लग ऐसा है जैसे सूर्जसे अंधारो अलगहै तैसे ओरमे जैनमतवाले वैष्णव मतवाले
शिवमत वाले आदि कोई मतवाले को चेलो गुरु नही हूं पर कर्ता कर्म क्रिया संपादा
न अपादान अधिकरणसें अलगहूं दोहा येह आकिंचनभावना भावैरूरत
संभाल ॥ धर्मदास साची लिषै मुक्त होयतत काल ॥ १॥ अपणो आपो देखकै हो
य आपको आप ॥ होय निचिंत निष्च्यो रहै किसका करणा जाप ॥ २॥ ॥ इति
आकिंचनभावनासमाप्तं॥ ॥ ॥श्रीरस्तु॥ ॥ ॥

ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥ ॥अथ भेदज्ञान लिख्यते॥ ॥चौपाई॥ ॥प्रथम महि भेदज्ञान
जो भावै॥ सोही शिवसुंदरि पद पावै॥ तातैं भेदज्ञान मैं भाऊ॥ परमातम पद निश्चय-
पाऊं॥१॥ क्षुल्लक धर्मदास अब बोलै॥ देषवचन का मैं नित खोलै॥ वांचो पढो भाव-
मन ल्याई॥ तातै मिलै मोक्ष ठकुराई॥२॥ ॥दोहा॥ ॥भेदज्ञान ही ज्ञान है वाकी बु
रो अज्ञान॥ धर्मदास साची लिखै भेमराज तुम मान॥३॥ अर्थात् निश्चय करि एक
द्रव्य का दूसरा द्रव्य कछु संबंधि नाही है जातैं द्रव्य है सो भिन्न प्रदेस रूप है तातैं एक स
ताकी अप्राप्ति है द्रव्य द्रव्य की सता न्यारी न्यारी है बहुरि सता एक न होते अन्य द्रव्य के
अन्य द्रव्य करि आधार आधेय संबंध भी नाही है तातैं द्रव्य के अपने स्वरूप ही विषै प्र
तिष्ठारूप आधार आधेय संबंध तिष्ठै है तिस कारण करि ज्ञान आधेय सो तो जाणप
णा रूप अपणा स्वरूप आधारता विषै प्रतिष्ठित है जाते जानणेपणा है सो ज्ञान तै अ
भिन्न भाव है भिन्न प्रदेस रूप नाही है तातैं जानन क्रिया रूप ज्ञान है सो ज्ञान ही विषै है ब
हुरि क्रोधादिक है ते क्रोध रूप क्रिया क्रोधपणा स्वरूप ताहां विषै प्रतिष्ठित है जाते क्रो
धपणा रूप क्रिया क्रोधादिक तैं अप्रथक् भूत है अभिन्न प्रदेश है तातैं क्रोध रूप क्रि

९२

या क्रोधादि विषै ही होय है बहुरि क्रोधादिक विषै अथवा कर्मनोकर्मविषै ज्ञान नाही है जानै ज्ञानके अर क्रोधादिकके अर कर्मनोकर्मके परस्पर स्वरूपका अत्यंत विपरीत पणा है तिनका स्वरूप एक होय नाही तातैं परमार्थरूप आधार आधेय संबंधका शून्यपणा है बहुरि जैसे ज्ञानका जाननक्रिया रूप जाणपणारूप है तैसे क्रोधरूप क्रियापणा स्वरूप नाही है बहुरि जैसे क्रोधादिकका क्रोधपणा आदिक क्रियापणा स्वरूप है तैसे जाननक्रिया रूप स्वरूप नाही है कोई ही प्रकार करि ज्ञानकूं क्रोधादि क्रिया रूप परिणाम स्वरूप स्थाप्या नजाय है तातैं जाननक्रियाके अर क्रोधरूप क्रियाके स्वभावका भेदकरि प्रगट प्रतिभासमान पणा है बहुरि स्वभावके भेदतैं ही वस्तुका भेद है यह नियम है तातैं ज्ञानके अर अज्ञान स्वरूप क्रोधादिकके आधार आधेय भाव नाही है इहां दृष्टांत करि विशेष कहे हैं जैसे आकास द्रव्य येकही है ताही आपणी बुद्धि विषे स्थापि अर आधार आधेय भाव कल्पिये तब आकाश शिवाय अन्य द्रव्य तिनका तो अधिकाररूप आरोपणका निरोध भया याहीतैं बुद्धिके भिन्न आधारकी अपेक्षा तो नही रही

अ

रजव भिन्न आधारकी अपेक्षा नाहीरही तव बुद्धिमें यही ठहरी के जो आकासहै सो येकहीहै सो येक आकासही विषै प्रतिष्ठित है आकाशका आधार अन्यद्रव्य नाही आप आपहीके आधारहै ऐसे भावना करणेवाले अन्यका अन्यके आधार आधेय-भावनाही प्रतिभासहै ऐसेंही जब येकही ज्ञानकूं अपनी बुद्धि विषै स्थापि आधार आधेय भाव कल्पिये तब अवशेष अन्यद्रव्यनिका अधिरोप करणेका निरोध भया यातैं बुद्धिके भिन्न आधारकी अपेक्षा नाहीरहैहै अर भिन्न आधारकी अपेक्षाही बुद्धिमें नरही तब एकज्ञानही ज्ञानविषै प्रतिष्ठित ठहरया ऐसे भावना करणेवालेके अन्यका अन्यके आधार आधेय भावना ही प्रतिभासहै तातें ज्ञान हीहै सो तो ज्ञानही विषै है अर क्रोधादिकही है ते क्रोधादिकविषै ही है ऐसें ज्ञानके अर क्रोधादिकके अर कर्मनोकर्मके भेदका ज्ञानहै सो भलेप्रकार सिद्ध भया भावार्थ उपयोगहै सो तो चेतनाका परिणमन-ज्ञानस्वरूप है अर क्रोधादिक भावकर्म ज्ञानावर्ण आदि द्रव कर्म सरीर आदिक नोकर्म-ये सर्वही पुद्गलद्रव्यके परिणामहै ते जडहै इनके अर ज्ञानके प्रदेशभेदहै तातें अत्यंत भेदहै तातें उपयोग विषैतो क्रोधादिक तथा कर्मनोकर्म नाहीहै बहुरि क्रोधादिक कर्मनोकर्म

विषै उपयोग नाहीहै ऐसै इनके परमार्थस्वरूप आधार आधेयभाव नाहीहै अपना अपना आधार आधेयभाव आप आपविषै है ऐसै इनके परमार्थसे परस्पर अत्यंत भेद है ऐसै भेद जाणै सोही भेदविज्ञान है सो भलेप्रकार सिद्ध होयहै॥ ॥दोहा॥ ॥परमातमअरजगतके बडोभेदसुणसार॥ धर्मदासओरूं लिषै वांचकरोनिरधार॥१॥ जैसैसूरजतमविषै नहिनहिसुणबीर॥ तैसैहीतमकेविषै सूर्जनहीरेधीर॥२॥ प्रकाससूर्ययेकहै जडचेतननहियेक॥ धर्मदाससाचीलिषै मनमैधारिविवेक॥३॥ स्पर्श ८ रस ५ वर्ण २ गंध २ आत्मानाहीजानै येहस्पर्शादिकपुद्गल अचेतनजडहै वास्ते आत्माके अर अचेतन पुद्गलके भेदहै ओर शब्द बंध सूक्ष्म स्थूल संस्थानभेद तमच्छाया आतप उद्योत येह आत्मा नाहीजानै येह शब्द बंधादिक पुद्गलकी पर्यायहै वास्ते आत्माके अर शब्द बंधादिकके भेदहै तन मन धन बचन येह आत्मानाहीं अर्थात् इस तन मन धन बचनादिककूं बहुरि इस तन मन धन बचनादिकका जे नाशुभाशुभ बिवहार क्रिया कर्म फलादिककूं सहज स्वभावहीसैं निराबाधपूर्वक देखता जाणताहै सोही आत्मा परमातमा है दोहा तनतामनता बचनता जडताजडसैमेल॥ लघुतागुरुतागमनता येहअजीवकाषेल॥ अ-

र्थात् आत्मा अजीवनही वास्ते आत्माके अर इनतन मनादिकके भेदहै भावार्थ जैसे॰ सूर्जके अर अमावास्याकी मध्यरात्रीका अंधाराके अत्यंत भेदहै तैसेही आत्मा अर अनात्माका भेदहै तन मन धन बचन कुछ ओरहै अर आत्मा कुछ ओरहै मन बुद्धि चित्त अहंकार अंतःकरण कुछ ओरहै अर आत्मा कुछ ओरहै तूं मै येह वह हूंहूं सोहं येह कुछ ओरहै अर आत्मा कुछ ओरहै जोग जुगत जगत लोक अलोक कुछ ओरहै अर आत्मा कुछ ओरहै बंध मोक्ष पाप पुन्य कुछ ओरहै अर आत्मा कुछ ओरहै जैन वैष्णु बोध नैय्यायिक मिमांसादिक वेदांती कुछ ओरहै अर आत्मा कुछ ओरहै तेरापंथ मेरापंथ उसकापंथ इसकापंथ वीसपंथ गुमानपंथ नानकपंथ दादूपंथ कबीरपंथ इत्यादिपंथ येह सर्व येक पृथ्वीके ऊपर है सो पृथ्वी कुछ ओरहै अर आत्मा कुछ ओरहै जैन मतवाले वैष्णुमतवाले शिवमतवाले वेदांतमतवाले तेरापंथमतवाले वीसपंथ मतवाले गुमानपंथमतवाले येह सर्व मतवाले जिस मदकूं पीकर मतवाले भये है सो कुछ मद ओरहै अर आत्मा कुछ ओरहै॥ ॥दोहा॥ ॥ भेदज्ञानसे भ्रमगयो नहीरही कुछआस॥ धर्मदास क्षुल्लक लिषे अबतोड मोहकीपास॥१॥ ॥ जैसे सूर्यके प्रकासमे दीपकको प्रकास प्रसिद्ध है तैसे स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान मांयि स्वभावसू

र्यका प्रकाशमे येह सम्यक्ज्ञानदीपका नामकी पुस्तग प्रसिद्ध भलेभावसें पूर्ण प्रस्तूत हो चुकीहै १ जैसे अंधभवनमे रतन गिरयोहै सोरतन वांछक पुरुष दीपक हस्तमें लेकरिकें तिस अंधभवनमें रतनार्थ जावै बहुरि रतनहीकूं खोजै तो तापुरुषकूं निश्चयही रतन लाभ होवै तैसेही येह भरमांधकारमयि भवन जगत संसारहै तामें तासे अतन्मयि रतन त्रयमयी अमोलख रतन गिरयोहै ताकूं कोइ धन्य पुरुष ताको इच्छकपुरुष इस सम्यक्ज्ञानदीपका नामकी पुस्तग कूं ग्रहण करिकें इस भ्रमांधकार नाम संसार भवनमें तिस स्वभाव सम्यक्ज्ञानमयि अर रतनत्रयमयि रतनकूं खोजैगो ताकूं निश्चय आपका आपमे आपमयि स्वभाव सम्यक्ज्ञानानुभवकी परमावगाढता अचलहो वेगी १ कोइ इस सम्यक्ज्ञान दीपका नामकी पुस्तगसे बहुरि इसका सुंदर अक्षर शब्द पत्र चित्रादिकसें आपका आपमे आपमयि स्वभाव सम्यक्ज्ञान है ताकूं सूर्य प्रकाशवत् येकतन्मयि समजैगो मानैगो कहैगो ताकूं तो इससम्यक्ज्ञानदीपका नामकी पुस्तग पढणे वाचणेसें स्वभावसम्यक्ज्ञानानुभवकी परमावगाढताकी अचलता नही होवेंगी १ हां जैसे द्वारमे होकरिके किसीकूं सूर्य दर्शनका लाभ होताहै तैसेही किसी मुमुक्षुकूं इससम्यक्ज्ञान दीपका नामकी पुस्तकके द्वा

रा निश्चय स्वस्वभाव स्वसंम्यक्ज्ञान मयि सूर्यका दर्शण लाभ होवैगा १ येह सम्यक्ज्ञानदी पिकानामकी पुस्तक हम बणाई है इसमे मूलहेतु मेरा यह है के स्वयंज्ञानमयिजीवजिस स्वभावसें तन्मयिहै उसी स्वभावकी स्वभावनाजीवसे तन्मयि अचल होहु येही हेतु अंतःकरणमे धारण करिके येह पुस्तक बणाई है ५०० पांचसे पुस्तक छापके द्वारा प्रसिद्ध होणेकी सहायताके अर्थ रुपिया १०० येकसो तो जिल्हास्याहाबाद् मुकाम आरा ठिकाणो मरवनलालजीकी कोठीमे बाबू विमलदासजीकी विधवा हमारी चेली द्रोपती देवीने दिया है अर विशेष खरचकी सहायताके अर्थ जिस जिसकूं मेरा बचनोपदेस द्वारा स्वसम्यक्ज्ञानानुभव होणेजोग होचुके ते स्वभावसंम्यक्ज्ञानानुभवमे तन्मयि सदाकाल चिरंजीव रहो ॥

॥ ॥श्लोक॥ ॥ श्रीसिद्धसेनमुनिपादपयोजभक्त्या देवेंद्रकीर्तिगुरुवाक्यसुधारसेन॥ जातामतिर्विबुधमंडलमंडनेच्छोः श्रीधर्मदासमहतोमहतीविशुद्धा ॥ १॥ ॥

इतिश्री क्षुल्लकब्रह्मचारी धर्मदासरचित सम्यक्ज्ञानदीपिकासंपूर्णम् ॥ ॥ छ ॥

अथब्रह्मरूपीसंवत्सर.

अयन २ ऋतु ६ मास १२ पक्ष २४

॥ छप्पै ॥ ॥ दोयनयनषट्करणभुजारविसंख्याजाणूं ॥ पाषानलप्रमाणश्यामअरुश्वेतबषा-

वार ७ तिथि १५ नक्षत्रें २८ योग २८ करण ११

णूं ॥ सातसीसदशपंचदशनदोपंक्तीसोहै ॥ नखवासिखपंचकईशकरणशिवसंख्यादोहै ॥ पंषपंष

सर्ववर्षकादिन ३६०

प्रतिपंचदशअंबरषट्अनलाचरण ॥ श्रीधरसाचोदेखिये ब्रह्मरूपअशरणशरण ॥ १ ॥

॥ कुंडलियो ॥ ॥ जाकीनिर्मलबुद्धिहै ताकूंसबअनुकूल ॥ भूतभविष्यविचारिये वर्तमानको-

मूल ॥ वर्तमानकोमूलभूलमेकबहुनभूलै ॥ पढसबशास्त्रपुराणदृथाहीभ्रममेंझूलै ॥ कहतेबहु

भरामब्रह्महैसाचोसाखी ॥ विद्यासूंसबहोतअगमबुधिनिर्मलजाकी ॥ १ ॥

यहपुस्तक मुंबईमें पंडित श्रीधरशिवलालजीके ज्ञानसागर छापखानामें क्षुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदासजीनें छपवाया

मितिआषाढशुक्ल ८ भौमवार संवत् १९४८ शाके १८१३

इतिसम्यक्ज्ञानदीपकास॰